पढ़ें और सीखें योजना

काले सागर का गोरा देश
रोमानिया

प्रो. सूरजभान सिंह

विभागीय सहयोग

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

फरवरी 1988
फाल्गुन 1909

P.D. 15T—RNB

प्रकाशन सहयोग

सी.एन. राव **अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग**

सम्पादन	**उत्पादन**
प्रभाकर द्विवेदी **मुख्य सम्पादक**	यू. प्रभाकर राव **मुख्य उत्पादन अधिकारी**
राम निवास भारद्वाज **संम्पादन सहायक**	डी साईं प्रसाद **उत्पादन अधिकारी**
	रती राम **उत्पादन सहायक**
	कर्ण कुमार चड्ढा **कनिष्ठ चित्रकार**

आवरण शांतो दत्त

मूल्य : रू० 6.05

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा हिमगिरी प्रिंटर्स, साहिबाबाद (यू.पी.) में फोटो कम्पोज होकर विजयलक्ष्मी प्रिंटिंग वर्क्स, के-6 लक्ष्मीनगर, दिल्ली 110092 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले पच्चीस वर्षों से कार्यकर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है और इस पर परिषद् के कार्यकर्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किन्तु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद भी हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है लेकिन अतिरिक्त पठन में बच्चों की रुचि न होने का बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध भी नहीं हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारम्भ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों के लिए पुस्तक लेखन की दिशा में महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत पढ़ें और सीखें शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार करने का विचार है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में अनेक विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएँगी। हम आशा करते हैं कि 1987 के अंत तक हम निम्नलिखित विषयों पर हिन्दी में 50 पुस्तकें प्रकाशित कर सकेंगे।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा साहित्य
(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके उसे अंतिम रूप दिया जाता है।

परिषद इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये देश के हर कोने में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक 'काले सागर का गोरा देश : रोमानिया' के लेखन के लिए प्रो. सूरजभान सिह ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

हिन्दी में 'पढ़ें और सीखें' पुस्तकमाला की यह योजना प्रो. अनिल विद्यालंकार के मार्गदर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्त लूथरा, डॉ. रामजन्म शर्मा, डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय, डॉ. हीरालाल बाछोतिया और डॉ. अनिरुद्ध राय और डॉ. स्नेह लता प्रसाद सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन का मार्गदर्शन राजस्थान विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डॉ. रामचरण मेहरोत्रा कर रहे हैं और इन पुस्तकों के लेखन में हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डॉ. रामदुलार शुक्ल सहयोग दे रहे हैं। योजना के संचालन में डॉ. बाछोतिया विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। मै डॉ. रामचरण मेहरोत्रा को और अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

पी. एल. मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
सितम्बर 1986

दो शब्द

यूरोप के पूर्व में काला सागर की गोद में बसा रोमानिया भारत के कई लोगों के लिए बहुत परिचित नाम नहीं है। इस देश को बिना वहाँ के जनजीवन में बैठे समझना भी मुश्किल है। पूर्व और पश्चिम की दहलीज पर बसे इस देश के मानस में कहाँ पूर्व समाप्त होता है और कहाँ पश्चिम शुरू, यह बताना कठिन है। भारत के प्रति इसका सम्मोहन चौंका देने वाला है। नई टैक्नॉलॉजी और आधुनिकता की लहर के बावजूद इसके पारिवारिक तथा सामाजिक संस्कार इसे बार-बार पीछे मुड़कर देखने को मजबूर करते है। यह एक अत्यंत स्वाभिमानी देश है।

अपने चार वर्ष (1979-83) के रोमानिया प्रवास के दौरान मुझे इसके विविध रूपों को कई दृष्टियों से देखने का मौका मिला और लोगों के मन में गहराइयों में भी झाँकने का अवसर मिला। लोगों का जो अपार स्नेह और प्यार मुझे वहाँ मिला वह तो अपने में एक अनमोल अनुभूति है ही। यही कारण है कि इस पुस्तक-लेखन के हर पल को मैंने रोमानिया में दुबारा जिया है – यह रोमानिया की मेरी मानसिक पुनर्यात्रा है। शायद मुझ पर एक ऋण भी था जो मुझे रोमानिया को चुकाना था।

स्कूली छात्रों के लिए शुरू की गई 'पढ़ें और सीखें' योजना के अंतर्गत होने के कारण, इस पुस्तक के आकार-प्रकार के संबंध में परिषद् की कुछ अपेक्षाएँ हैं – पुस्तक स्कूली छात्रों की रुचि की हो, उनके लिए बोधगम्य हो, ज्ञानवर्धक हो, और सबसे बड़ी बात, पुस्तक रोचक हो, इतनी रोचक कि पाठक को अंत तक बांध कर रख सके। निश्चित है, यह भूगोल या इतिहास की पुस्तक नहीं है।

अपना पहला आभार मैं भारतीय सांस्कृति संबंध परिषद् नई, दिल्ली के प्रति अभिव्यक्त करता हूँ जिसके सौजन्य से मेरा रोमानिया प्रवास (1979-83) संभव हुआ। पुस्तक में दिए कुछ दुर्लभ चित्रों को सुलभ कराने का श्रेय रोमानिया में भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव श्री बालानंद तथा रोमानियन हिन्दी कर्नल निकोलाई ज़्वेर्या को है। अपनी अनुभुतियों को शब्द और रूप प्रदान करने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं परिषद के निदेशक डॉ. पी.एल. मल्होत्रा, प्रोफेसर अनिल विद्यालंकर तथा डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय का विशेष आभारी हूँ।

सूरजभान सिंह

प्रोफेसर

आगरा

केंद्रीय हिंदी संस्थान

विषय-सूची

रोमानिया
सोवियत रूस
सोवियत रूस
हंगरी
यूगोस्लाविया
बुलगारिया
काला सागर
रोमानिया
सुच्यावा
इयाश
पियात्रा न्याम्त्स
क्लुज-नापोका
आराद
निमिश्वारा
देवा
ब्राशोव
गालात्सि
प्लोएश्ति
क्राइयोवा
बुखारेस्त
कान्सताजा
इफोरिए
मगालिया
डेन्यूब नदी
0 50Km
22°
24°
26°
28°
30°
48°
46°
44°

पहला अध्याय

काला सागर : गोरा देश

दिल्ली से आपका हवाई जहाज़ कुवैत, भूमध्यसागर और यूनान को देखा-अनदेखा करता हुआ आठ घंटे की उड़ान के बाद सीधे रोम एयरपोर्ट पहुँचता है। रोम इटली की राजधानी है और वहाँ का हवाई अड्डा यूरोप का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट है। यहाँ हर क्षण अलग-अलग देशों से हवाई जहाज़ों के आने-जाने का ताँता बँधा रहता है। एक जहाज ऊपर उडने भी नहीं पाता कि दूसरा धरती पर उतरने के लिए लाल-हरी बत्ती चमकाते हुए ऊपर चक्कर काटने लगता है।

रोम हवाई अडडे की ख़ूबी यह है कि यहाँ आपको जहाज में चढ़ने के लिए प्राय: हवाई अडडे के प्रतीक्षालय से उतरकर जहाज़ की सीढ़ियों तक नहीं जाना पड़ता, बल्कि जहाज़ खुद आपके एक मंजिले प्रतीक्षालय कक्ष तक पहुँच जाता है। कक्ष के शीशे की एक दीवार जिसके एक पार आप बैठे हैं देखते ही देखते गायब हो जाती है और एक छोटी पुलिया के सहारे आप सीधे हवाई जहाज़ के प्रवेश-द्वार मे पैर रख लेते हैं।

एयर इंडिया का विशालकाय बोइंग वायुयान रोम तक ही जाता है। अत: रोमानिया जाने के लिए आप 'तारोम' के एक छोटे से वायुयान में

प्रवेश करते है । 'तारोम' रोमानिया की वायुयान-सेवा का नाम है । इस वायुयान में प्रवेश करते ही आप अपने को पूर्णत: अजनबी पाते है—भाषा, विदेशी संस्कृति, विदेशी चेहरे तथा विदेशी खान-पान। रोम तक तो वायुयान मे आपके कानो में हिन्दी, पजाबी, अंग्रेजी आदि के छींटे पडते रहते थे और काले-गोरे चेहरों तथा साडी सलवार-स्कर्ट की झलक मिलती रहती थी, लेकिन यहाँ तो चारो ओर रोमानियन भाषा ही सुनाई पडती है—'बुन : जिवा' (नमस्कार), 'मुल्सुमेस्क' (धन्यवाद) आदि ।

एक बार फिर भूमध्यसागर के आकाश को चीरता हुआ, ऊपर ही से बुल्गारिया को नमस्कार करता हुआ, आपका वायुयान दो घटे की उडान के बाद रोमानिया की राजधानी बुख़ारेस्त के हवाई अडडे पर पहुँच जाता है । रोम एयरपोर्ट की भीड और चकाचौंध के बाद बुखारेस्त एयरपोर्ट अचानक अधिक शात और सयत दिखाई देता है ।

एयरपोर्ट की औपचारिकताओं को निभाते हुए, आप अपनी बात कहने के लिए अंग्रेजी समझने वाले किसी कर्मचारी की इधर-उधर खोज करने लग जाते है । तभी आपके भारतीय पासपोर्ट को देखकर एयरपोर्ट का एक रोमानियन कर्मचारी हिन्दी में आपसे पूछ लेता है— आप इंडिया से हैं ? आइए, मै आपकी क्या मदद कर सकता हूँ ?" थोडी बहुत हिन्दी सीखे इस रोमानियन कर्मचारी ने बुख़ारेस्त आने वाले कई भारतीयों को सुखद आश्चर्य मे डाल दिया है । आप अचानक अनुभव करते हैं कि किसी ने आप ही की भाषा से पहली ही बार मे आपको जीत लिया । आप पहली बार भाषा की इस नई शक्ति को पहचानते हैं ।

बुख़ारेस्त का यह हवाई अड्डा 'ओतोपेन एयरपोर्ट' कहलाता है जहाँ से मुख्य बुखारेस्त शहर लगभग 16 किलोमीटर है । यहाँ की भाषा में इस शहर का नाम 'बुकुरेश्ति' है । यह अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, लेकिन आंतरिक उडानो के लिए एक दूसरा हवाई अडडा है—बन्यासा हवाई अड्डा ।

यद्यपि शहर के रूप में बुखारेस्त की स्थापना चौदहवी शताब्दी में हो चुकी थी, लेकिन इसे वास्तविक आकार और व्यक्तित्व सत्रहवीं शताब्दी में ही मिला जब यह वालाचिया राज्य की स्थाई राजधानी घोषित हुआ । यह सन् 1862 मे रोमानिया की राजधानी घोषित हुआ । सत्रहवीं तथा

अठारहवीं शताब्दी में तुर्की की राजधानी इस्ताम्बुल के बाद यह दक्षिण पूर्वी यूरोप का सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक शहर था। शहर के बीचो-बीच स्थित 'लिप्सकान'-बाज़ार आज भी उन मध्यकालीन तुर्की बाजारों की याद ताजा करता है जहाँ तंग गलियों और सडकों मे ही तिजारत खुली साँस

चित्र 1: बुख़ारेस्त के बीचो-बीच स्थित 'लिप्सकान बाजार' जिसकी गलियाँ और सड़के आज भी मध्यकालीन तुर्की बाज़ारो की याद ताजा करती हैं।

लेती थी। इसी के आस-पास तुर्कों के शासन काल में बने एक दो सरायनुमा होटल भी अपनी पुरानी मध्यकालीन शैली मे सुरक्षित हैं जहाँ किसी समय तुर्की, रोम तथा यूनान से सौदागर अशर्फियाँ खनखनाते हुए आते और यहाँ से माल-असबाब का काफ़िला लाद कर ले जाते।

आज बुख़ारेस्त अपने को इस्ताम्बुल से नही, पेरिस और वेनिस से जोड़ता है। ऊँची-ऊँची इमारतें, बडे-बडे एपार्टमेन्ट-ब्लाक, चौड़ी सड़कें, भूमिगत (मेट्रो) रेल, टेलिफ़ोन बूथो का जाल, डिपार्टमेन्टल स्टोर्स -ये सभी इसे पूर्वी नहीं पश्चिमी देशों की ओर ले जा रहे हैं।

ऋतु आए, ऋतु जाए

यदि आप दिसम्बर, जनवरी या फ़रवरी में बुख़ारेस्त जाएँ तो आपको एयरपोर्ट से शहर तक का पूरा रास्ता बर्फ़ की सफ़ेद चादर से ढका मिलेगा। इन दिनों सड़क, मकान, पेड़, मैदान सभी जगह बर्फ़ की गहरी

परतें जम जाती हैं, झील तथा नदी का पानी जमकर ज़मीन की तरह ठोस हो जाता है जिस पर आप निडर चहलकदमी कर सकते हैं।

इस मौसम में अगर आप कपड़े धोकर बरामदे या बाल्कनी में सुखाने के लिए टाँग दें तो कपड़े जमकर लोहे की चादर की तरह सख़्त हो जाएँगे और कपड़े से टपकती पानी की बूदें देखते ही देखते बर्फ़ की लडियों के आकार में लटक जाएँगी। ऐसे मौसम में कई लोग दूध, मक्खन, सब्ज़ी, फल आदि सामान फ्रिज में रखने के बजाय बाहर बाल्कनी में रख देते हैं या उन्हें प्लास्टिक के थैलों में डालकर खिड़की पर बाहर की तरफ लटका देते हैं। बुखारेस्त का औसत तापमान 11° सेंटीग्रेड है। सर्दियों में यह तापमान कभी-कभी माइनस 30° सेंटीग्रेड तक हो जाता है, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। सामान्यत: यह तापमान क्रमश: माइनस 15° और प्लस 30° सेंटीग्रेड के बीच ही रहता है।

चित्र 2: बर्फ़ का साम्राज्य : सफेद चादर से ढके पेड़, मकान, सड़कें और मैदान।

आपके मन में सहज ही प्रश्न उठेगा कि ऐसी कड़ाके की ठंड में बाहर का काम-काज कैसे चलता है। ऐसा ही प्रश्न कई रोमानियन हमसे करते हैं—'भारत मे 45^0 सेन्टीग्रेड तक की दहकती गर्मी में आपका जनजीवन कैसे चलता है? आप कैसे रह पाते हैं?

प्रकृति की हर ज्यादती का इलाज इंसान ने किसी न किसी तरह निकाल लिया है। कहीं-कहीं तो प्रकृति के प्रकोप को भी उसने वरदान में बदल दिया है। बर्फ़ पड़ते ही ख़ास तरह की ट्रेक्टरनुमा गाड़ियों का काफ़िला तुरंत सड़कों से बर्फ़ हटाने में जुट जाता है ताकि यातायात यथावत् चलता रहे। लोग लम्बे बूट, फ़र की टोपी, ओवरकोट या लेदरकोट तथा कमीज-पैंट के नीचे पहने जाने वाले विशेष प्रकार के वस्त्र (इन्दिस्पेन्साबिल) पहनते हैं। कारों तथा बसों के अंदर गरम रखने (हीटिंग) की व्यवस्था होती है। बाहरी सर्द हवा को रोकने के लिए सभी मकानों की खिड़कियों में दोहरे किवाड़ या फलक होते हैं तथा कमरों के भीतर विशेष प्रकार के पाइपों के जाल बने होते हैं जिनमें एक केन्द्रीय स्थान से गरम पानी का संचार कर कमरा गरम किया जाता है। इसीलिए कड़ी से कड़ी सर्दी में भी आप अपने कमरे की चहारदीवारी में कमीज़-पैंट या पाज़ामा पहनकर प्रकृति को छलने का आनन्द ले सकते हैं। बंद कमरे की उष्ण सुरक्षा में बैठकर खिड़की के शीशे के बाहर लोगों को ठिठुरते देख आपकी गरमाहट अपने आप कुछ बढ़ जाती है। यह नियम भी प्रकृति का ही है।

बच्चे, बूढ़े तथा जवान सभी क्रिसमस तथा नववर्ष में बर्फ़ गिरने की बेताबी से प्रतीक्षा करते हैं और अगर कभी संयोग से बर्फ़ समय पर न पड़े तो आपको हर रोमानियन निराश नज़र आएगा—उसके 'बर्फ़ीले' मनोरंजन की सारी वार्षिक योजना खटाई में पड जाती है। लोग स्वास्थ्य के लिए भी बर्फ़ का गिरना जरूरी मानते हैं। बर्फ़ पड़ते ही बच्चों के झुण्ड के झुण्ड बर्फ़ की गाड़ी (स्लेज) पर सैर करने निकल पड़ते हैं। युवक-युवतियाँ अपना स्केटिंग का शौक पूरा करने के लिए पर्वतों में मंडराने लगते हैं और बर्फ़ पर खेले जाने वाले बीसियों प्रकार के खेल, मनोरंजन तथा प्रतियोगिताओं का उत्सव शुरू हो जाता है. मानो सभी बर्फ़ देवता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त कर रहे हों। गालों पर बर्फ़ की हल्की फुहारों का चुंबन ग्रहण करते हुए तथा टोप, ओवरकोट और मफ़लर से लैस, कई

साहसी केवल इसी रोमांच के लिए घर से बाहर निकल पडते हैं। कुछ लोग जमी, चिकनी बर्फ़ पर फिसल भी पड़ते हैं, लेकिन कोट से बर्फ़ के कणों को झाड़-झूडकर फिर आगे चल पडते हैं। ये लोग सर्दी को 'भुगतते' नहीं, 'मनाते' हैं, उसका आनंद लेते हैं।

इस देश में बर्फ़ का प्रकोप यदि किसी क्षेत्र में दिखाई देता है तो वह खेतो मे, जिन्हे सारी सर्दी बर्फ़ की सफ़ेद चादर के नीचे सोते हुए बितानी पडती है। यही कारण है कि हरी सब्ज़ियाँ सर्दी भर बाज़ार से गायब रहती हैं। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। कुछ सहकारी संस्थाएँ तथा किसान बडे-बडे काँचघरों के भीतर ज़रूरी ताप पैदा करके पालक, टमाटर, खीरा, सलाद, मिर्च, गोभी आदि कुछ सब्जियाँ उगा लेते हैं जो बाजार में बहुत महँगी बिकती हैं। जो हरी मिर्च भारत में सब्जी ख़रीदने पर प्राय: मुफ़्त मिल जाती है, वह यहाँ पर लगभग एक रुपए में एक नग के हिसाब से मिलती है। मिर्च के इस कीमती नग को शौकीन लोग जरा-जरा तोड-तोड़ कर खाते हुए कई दिनो तक चला लेते है। गृहणियाँ इस मौसम के लिए गर्मियों में ही शीशे के बड़े-बडे मर्तबानों में बडी मिर्च,

चित्र 3: बर्फ़ीले मनोरजन की तैयारी : बर्फ़ की गाड़ी (स्लेज) लेकर सैर के लिए निकले बच्चे।
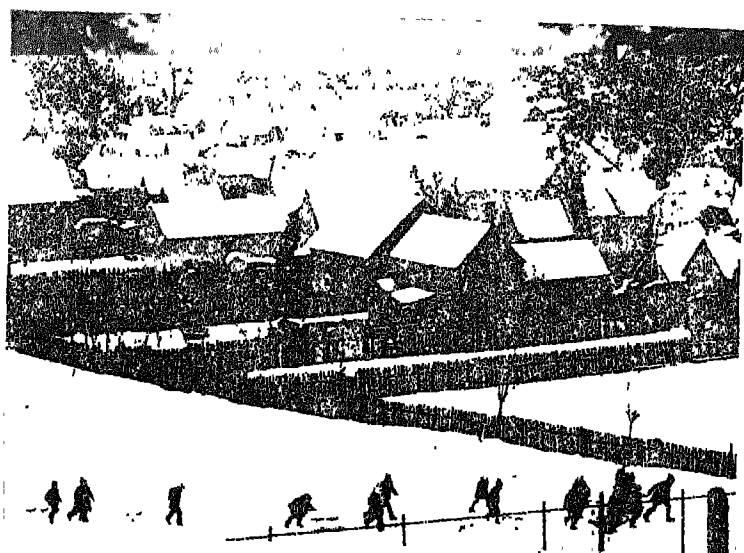
(शिमला मिर्च) गोभी, गाजर, टमाटर, खीरा आदि सब्जियाँ नमक सिरका और पानी में मिलाकर रख देती हैं जिन्हें लोग सारी सर्दी थोडा-थोडा निकाल कर खाते रहते है ।

अभी बर्फ़ का साम्राज्य समाप्त होने भी नहीं पाता कि लोगों की जबान पर 'बसंत का नाम आना शुरू हो जाता है और रेडियो-टेलिविजन आ वेनीत प्रिम:वारा' (आया बसंत) के नारों से बसंत का आह्वान शुरू कर देते हैं और एक सुबह अचानक आप पाते है कि जो पेड़ कल शाम तक बर्फ़ से कानाफूसी कर रहे थे, अनगिनत हरी-पीली कोपलों से लद गए हैं। देखते ही देखते गुलाबों की झाड़ियों पर फूलों की गुलाबी चादर छा जाती है और कल तक सूखे पडे पेड़ों में पत्ते इठलाने लगते हैं, जैसे किसी ने स्विच दबाकर एकाएक बसंत को बुला लिया हो ।

आप ध्यान से देखें तो यह कोई करिश्मा नहीं । अक्तूबर-नवम्बर के पतझड़ के दौरान पेड़ों के सभी पत्ते ज़मीन पर झड़ जाते हैं और सर्दी के तीन माह तक बर्फ़ के नीचे दबे पडे रहते हैं जहाँ वे उर्वरक खाद में बदल जाते है । बर्फ़ की भीगी ताजगी में नहाकर और नई खाद से पौष्टिक खुराक पाकर मिट्टी में एक अद्भुत शक्ति का संचार हो जाता है और फिर अचानक सूर्य की सेंक पाकर इसकी उर्वरक शक्ति कई गुनी बढ़ जाती है।

शहर के कोने-कोने में लाल, हरे, पीले, रंगों का साम्राज्य बिछाने के काम में प्रकृति और बुख़ारेस्त प्रशासन दोनों में एक प्रकार की होड़-सी रहती है। बर्फ़ की समाप्ति का हल्का-सा आभास पाते ही बागवानी विभाग के ट्रक-के-ट्रक भाँति-भाँति के फूलों के पौधे, गमले और लघु आकारी (बोनसाई) पेड लेकर निकल पडते हैं और देखते ही देखते सारी सड़कों के दोनों किनारे और आस-पास की ज़मीन बहुरंगे फूलों से खिल उठती है ।

रोमानिया में मार्च को बसंत का विधिवत् आरम्भ माना जाता है। इस दिन मर्तिस्वारे का त्यौहार मनाया जाता है जिसमें पुरुष महिलाओं को मर्तिस्वारे उपहार में देते हैं । 'मर्तिस्वारे राखी के आकार जैसा, तागे में लटका, छोटे तगमे की तरह होता है जिसे महिलाएँ ब्लाउज़ या कोट में लगाती हैं । (देखिए पारदर्शी 1)

बसंत गर्मी का प्रवेश-द्वार है । रोमानिया ही नहीं, समस्त यूरोप साल भर तक एक प्रकार से गर्मी के लिए ही जीता है, गर्मी के लिए ही पैसा जोडता है और गर्मी के लिए ही मनोरंजन के चुनींदा साधन जुटाता है । जून-जुलाई-अगस्त ये तीन महीने यहाँ गर्मी के होते हैं । यह गर्मी भारत की वह गर्मी नही जिसके नाम से लू, तपन, उमस या चिलचिलाती धूप का चित्र आँखो के आगे उभर आता है । यहाँ की गर्मी तो अपनी पराकाष्ठा में भी उत्तरी भारत की फरवरी-मार्च की गर्मी से ऊपर नहीं जाती । यह वह गर्मी है जिसके नाम से समुद्रतट पर धूप सेंकते स्त्री-पुरुषों की, जाँघिया पहने मछली पकडते मस्तमौलों की या पर्वतारोहण के लिए निकले सैलानियो की छवि आँखो के सामने उभरती है ।

धूप सेंकना तथा धूप में साँवला होने (टैनिंग) के लिए समुद्रतट पर लेटना वस्तुत: इनका कोरा शौक नहीं, यहाँ के लोगों की शारीरिक आवश्यकता भी है । सात-आठ माह तक हड्डियों को कँपाने वाली सर्दी को जिस्म में जज्ब करने के बाद धूप की सेंक इनके भूखे शरीर का आहार बन जाती है । दो-तीन माह तक शरीर के भीतर सूर्य की गर्मी तथा ऊर्जा सचित करने के बाद बाकी नौ माह तक जैसे इनके शरीर की बैटरी चलती रहती है ।

रोमानिया में गर्मी के शुरू होने से पहले ही कई रूपों में इसका पूर्वाभास होना शुरू हो जाता है । गर्मी के एक-दो माह पहले से ही लोग एक दूसरे से पूछना शुरू कर देते हैं, 'आप गर्मी में कहाँ जा रहे हैं—समुद्रतट या पहाड़ ?' गर्मी में कहीं बाहर न जाना इनके लिए एक दुष्कर कल्पना है । इन दिनों 'आपका ग्रीष्मावकाश शुभ हो' का परस्पर अभिवादन सुनना एक सामान्य बात है । गर्मी समाप्त होने पर यही प्रश्न इस प्रकार बदल जाता है—'आप गर्मी में कहाँ गए थे ?' समुद्रतट से लौटकर जो महिला अपने को जितना अधिक साँवला (टैन) बना पाने में समर्थ होती है वह उतने ही गर्व से अपने साँवले रंग का प्रदर्शन करती फिरती है ।

जुलाई-अगस्त में बुखारेस्त शहर लगभग आधा रह जाता है । सब जगह सूना-सूना सा लगता है । शहरों की धड़कने पर्वतों, समुद्रतटों और गाँवों में सुनाई देने लगती हैं । सर्दीभर सुनसान पड़े समुद्रतटों पर एक बार फिर नई रौनक आ जाती है—बच्चे-बूढ़े, युवक-युवतियाँ, स्त्री-पुरुष बिकिनी या जाँघिया पहने पानी में डूबते-उतराते या आँखें मूँदे चित लेटे कुछ क्षणों

के लिए जीवन की सभी चिंताओं को समुद्र मे डुबो देते है । फिर, कितने हल्के से हल्के और पतले से पतले कपड़े पहनकर बाहर निकला जाए, महिलाओं में इसकी अघोषित प्रतियोगिता शुरू हो जाती है ।

इन दिनों बियर की माँग और खपत अचानक कई गुनी बढ़ जाती है और लंबी पंक्तियों में खड़े होकर भी अगर कुछ बोतलें हाथ लग जाएँ तो सौभाग्य समझना चाहिए । यहाँ बियर की बोतलें हासिल करने से अधिक मुश्किल काम कोई है तो वह है पेप्सी कोला हासिल करना । यदि आप पेप्सी कोला की बोतलें घर ले जाना चाहते है तो सीधे बोतलें खरीदकर नही ले जा सकते । आपको घर से पेप्सी कोला की ख़ाली बोतलें लाकर जमा करवानी होंगी, तभी आप भरी बोतलें ख़रीद कर ले जा सकते हैं ।

रोमानियन युवक-युवतियों के लिए पर्यटन के स्थानों पर सरकार की ओर से बहुत सस्ते दामों पर आवास या कैम्प की व्यवस्था होती है । वैसे भी होटलों में रोमानियन नागरिक के लिए किराया बहुत कम होता है जबकि विदेशियों के लिए यही किराया तीन-चार गुना होता है । छात्रों के लिए बहुत सस्ते दामों पर देश-दर्शन (कन्डक्टेड टूर) की व्यवस्था होती है । इनका एक प्रमुख उद्देश्य स्कूली छात्रों को देश के विभिन्न राज्यों, लोगों तथा ऐतिहासिक स्थानो से परिचित कराना है । अपनी संस्कृति, अपने इतिहास तथा अपने देश पर गर्व करना वे यहीं से सीखते हैं ।

गर्मी के इस आनन्द महोत्सव में कब शाम को अचानक बौछार या बूँदाबाँदी शुरू हो जाए नहीं कह सकते । भारत की तरह यहाँ अलग से वर्षा ऋतु नहीं होती । गर्मी, बसंत या पतझड़ किसी भी मौसम मे तापमान और दबाव मे अंतर आने से बारिश हो जाती है । इसीलिए सामान्य रोमानियन बाहर आते-जाते प्रायः अपने थैले में छोटी फोल्डिंग छतरी रखना नही भूलता ।

डेन्यूब और कार्पाथियन की गोद में

रोमानिया दक्षिण- पूर्वी यूरोप में कालासागर और डैन्यूब नदी की गोद में बसा एक सुन्दर हरा-भरा देश है । इसकी उत्तर-पूर्वी सीमा पर सोवियत रूस है, पश्चिम में हंगरी, दक्षिण-पश्चिम में युगोस्लाविया और दक्षिण में बुल्गारिया । भारत की तुलना में यूरोप के सभी देश आकार में बहुत छोटे

है । रोमानिया का क्षेत्रफल 2,37,500 वर्ग किलोमीटर है जो हमारे आंध्र प्रदेश से भी छोटा है । यूरोप के कई अन्य देश, जैसे इंग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी, युगोस्लाविया आदि भी इसी आकार के हैं ।

यूरोप को सामान्यतः पश्चिमी यूरोप और पूर्वी यूरोप दो वर्गों में बाँटा जाता है । पश्चिमी यूरोप में इंग्लैंड, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, डेनमार्क, स्वीडन, स्विटजरलैंड, आस्ट्रिया, बेल्ज़ियम, इटली, यूनान, स्पेन आदि देश आते हैं । ये सभी देश विकसित प्रजातांत्रिक देश हैं । पूर्वी यूरोप में हंगरी, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, पूर्वी जर्मनी, रोमानिया, बुल्गारिया आदि देश आते हैं । वर्णन की सुविधा के लिए कभी-कभी रूस को भी इसी में शामिल कर लिया जाता है । रूस और पूर्वी यूरोप के सभी देश समाजवादी हैं जिनमें से कुछ विकसित तथा कुछ विकासशील देश हैं ।

भौगोलिक दृष्टि से रोमानिया सौभाग्यशाली देश है । इसके एक तिहाई (31%) भाग में पर्वत-शृखलाएँ हैं, एक तिहाई (36%) में पठार और पहाडियाँ और एक तिहाई (33%) में मैदान है । पर्वतों में सर्वप्रमुख कार्पाथियन पर्वत शृखला है जो रोमानिया के उत्तर, मध्य और पश्चिम में अर्धगोलाकार रूप में फैली हुई है । 1,500 से 2,500 मीटर तक की ऊँचाई वाली ये पर्वत-श्रेणियाँ देश के मध्य में अजेय दुर्ग की तरह स्थित है । रोमानिया के लिए कार्पाथियन पर्वत-श्रेणियाँ केवल एक भौगोलिक सत्ता ही नहीं बल्कि उसके लोक-जीवन और उसकी प्राचीनतम लोक-परपंराओं का एक अभिन्न अंग हैं—ठीक उसी तरह जिस तरह हिमालय पर्वत भारत के लोक जीवन और प्राचीन परंपराओं का एक अंग है ।

कार्पाथियन पर्वत-शृंखलाओं के बीच त्रान्सिल्वानिया का प्रसिद्ध पठार है । इसके अलावा देश के मध्य, उत्तर तथा पश्चिम में 500 से 700 मीटर की ऊँचाई वाली कई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं जो धीरे-धीरे मैदानों में जाकर लुप्त हो जाती हैं ।

जो महत्व भारत में **गंगा** नदी का है और रूस में **वोल्गा** नदी का लगभग वैसा ही महत्व रोमानिया में **डेन्यूब** नदी का है । 2,375 किलोमीटर लम्बी डेन्यूब नदी जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, युगोस्लाविया और बुल्गारिया की सीमाओं को पार करती हुई दक्षिण रोमानिया पहुँचती है । यहाँ यह अपनी एक तिहाई से अधिक की दूरी तय कर पूर्व की ओर

कालासागर में विलीन हो जाती है । रोमानिया के पूर्व में विस्तृत डेन्यूब डेल्टा है जो यूरोप का एक प्रमुख आकर्षण-केन्द्र है । 5,050 वर्ग किलोमीटर तक फैले इस डेल्टा का तीन चौथाई से अधिक भाग रोमानिया में है जहाँ डेन्यूब नदी सागर में विलीन होने से पूर्व तीन छोटी-छोटी नदियों में विभक्त हो जाती है । इस डेल्टा का 78% भाग पानी से भरा है, शेष में जंगल, खेत तथा बालू है ।

रोमानिया की कुल आबादी लगभग 2 करोड 26 लाख है जो उडीसा की आबादी से भी कम है । राजधानी बुख़ारेस्त की जनसंख्या लगभग 20 लाख है जो दिल्ली की जनसंख्या का लगभग चौथाई है । सीमित जनसंख्या के कारण रोमानिया अपने सभी नागरिकों के लिए ज़रूरी सुविधाएँ और अनिवार्य शिक्षा तथा नौकरी दिलाने में समर्थ है । विडंबना देखिए कि भारत के सामने समस्या है बढ़ती जनसंख्या को कैसे रोका जाए, रोमानिया के सामने समस्या है घटती जनसंख्या को कैसे बढ़ाया जाए । एक सामान्य रोमानियन व्यक्तिगत कारणों से छोटा परिवार ही पसंद करता है, क्योंकि वह अधिक बच्चों की सही ढ़ंग से परवरिश करने और उनके बढ़ते खर्चों को उठाने में अपने को असमर्थ पाता है । सरकार देश की इस प्रकार घटती जनशक्ति से चिंतित है । वह बड़े परिवार को प्रोत्साहित कर रही है, माता-पिता को बच्चों के आधार पर विशेष भत्ता दे रही है तथा माँओं को नौकरी आदि में अतिरिक्त सुविधा दे रही है ।

रोमानिया में रहने वालों में 89.1% लोग मूल रोमानियन जाति के हैं । 7.7% लोग हंगरी से आए हैं, जिन्हें यहाँ (मग्यार) कहते हैं । इनके अलावा 1.5% जर्मन, तथा 0.4% जिप्सी तथा अन्य जाति के लोग हैं, जैसे यहूदी, रूसी, तुर्की, बुल्गारियन आदि ।

भारत में कई लोगों का ख्याल है कि भारत से गई एक जाति भी रोमानिया में है । यह जाति दरअसल जिप्सी या बंजारा जाति है जो दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी के आस-पास भारत के उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम से बाहर निकल कर कई देशों में फैल गई । आप जानते हैं जिप्सी लोगों की यह जातिगत विशेषता है कि वे कभी भी एक जगह पर टिक कर नहीं बैठते, अपने पूरे माल-असबाब के साथ एक स्थान पर कुछ दिन रहकर फिर दूसरे शहर या गाँव चले जाते हैं । इसी प्रकार वे एक देश से दूसरे देश में भी

निकल पड़ते हैं, लेकिन इधर बीसवीं शताब्दी के दौरान कई कारणों से ज्यादातर जिप्सी किसी न किसी देश में जाकर स्थायी रूप से बस गए हैं। इनमें से अधिकांश रूस, रोमानिया, बुल्गारिया, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में बस चुके हैं। इनके बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे ।

·दूसरा अध्याय
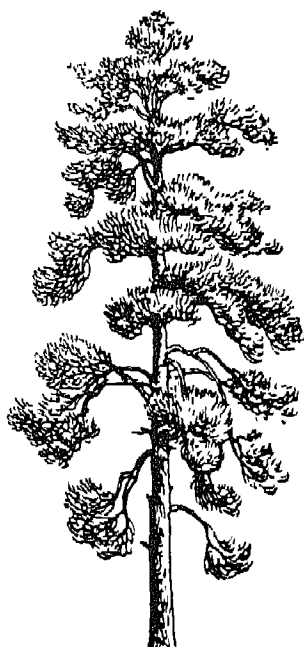
रोमांच अतीत का

रोमानिया में रहने वाले लोग मूलत: कौन हैं? 'रोमानिया' नाम कैसे पड़ा? क्या रोम से इसका कोई संबंध है? यह आधुनिक राज्य कैसे बना? रोमानिया की भाषा क्या है? आदि अनेक प्रश्न आपके मन मे उठ रहे होंगे। इन प्रश्नों के उत्तर के लिए थोड़ा रोमानिया के अतीत मे झाँकना होगा। आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि रोमानिया का जो रूप और आकार आज है और जिसके बारे में पिछले पृष्ठों में आपने पढ़ा वह उस 'रोमानिया' से कितना अलग है जो कुछ शताब्दियों पहले था।

आइए, इतिहास के पन्नों के बीच दबे रोमानिया के अतीत पर एक सरसरी नज़र डालें।

रोमानिया का इतिहास शताब्दियों के उथल-पुथल का इतिहास है। आज रोमानिया जिस भूमि पर है वहाँ शताब्दियों पहले गेटो-डाचिया नामक जाति के लोग रहते थे। इस प्रदेश का नाम भी डाचिया था। खुदाई से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि यह जाति ईसा की पहली शताब्दी तक आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टि से बहुत समृद्ध थी।

उस समय रोमन साम्राज्य अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर था और रोम

से बाहर चारों ओर अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहा था। शक्तिशाली रोमन सम्राट ट्राजन ने डाचिया की भूमि पर हमला बोल दिया और चार साल की घमासान लडाई के बाद सन् 106 ई. में उसके अधिकांश हिस्सों पर कब्जा कर लिया। डाचिया के स्वाभिमानी राजा ने आत्मसमर्पण न करके आत्महत्या कर ली। यह अंत डाचिया के राजा का नहीं, स्वाधीन डाचिया जाति का अंत था।

इसके बाद डाचिया देश 165 वर्षों तक लगातार रोमन साम्राज्य के अधीन रहा। इस दौरान रोमन सम्राटों ने डाचिया के भूगोल और इतिहास को ही नहीं बदला, बल्कि डाचिया संस्कृति को भी पूरी तरह रोमन संस्कृति के रंग में रंग दिया। आप जानते हैं, उन दिनों रोमन सभ्यता अपने विकास की चरम सीमा पर थी। उन्होंने डाचिया की समस्त भूमि पर न केवल अपना सुदृढ़ उपनिवेश स्थापित किया बल्कि रोमन पद्धति पर नए सैनिक अड्डे, शहर और गाँव भी बसा दिए और सर्वत्र लैटिन भाषा का शिक्षण और प्रयोग शुरू कर दिया। इसके फलस्वरूप कुछ समय बाद एक नई लैटिनभाषी जाति डाचिया-रोमन का विकास हुआ जो वस्तुत: आज की रोमानियन जाति की पूर्वज है। यहीं से इस जाति को 'रोमानियन' जाति का नाम मिला। डाचिया-रोमन लोगों का मूल पेशा खेती-बाड़ी तथा भेड-पालन था।

सन् 171 ई. में रोमन साम्राज्य को डाचिया की भूमि छोड़नी पडी, लेकिन डाचिया की भूमि का एक हिस्सा दोब्रोजिया, जो डेन्यूब नदी के उत्तर मे है, पूर्वी रोमन साम्राज्य का हिस्सा बना रहा। इसी मुख़द्वार से रोमन सभ्यता और संस्कृति सदियों तक रोमानियन भूमि में प्रवेश पाती रही और डाचिया की रोमनीकरण प्रक्रिया बेरोक-टोक चलती रही। रोमानियन भाषा पर भी इसका प्रभाव साफ़ दिखाई देता है जिसमें लैटिन भाषा की व्याकरणिक संचरना और लैटिन शब्दों की भरमार है।

इसी दौरान डाचिया तथा रोमन संस्कृतियों के संपर्क से दो महत्वपूर्ण संस्कृतियों का विकास हुआ—छठी तथा सातवीं शताब्दी में ब्रातोई संस्कृति और आठवीं से ग्यारहवी शताब्दी में 'द्रि दु' संस्कृति। डाचिया की भूमि से रोमन साम्राज्य के हट जाने के बाद रोमानियन जाति को शताब्दियों तक राजनीतिक उथल-पुथल के दौर से गुजरना पड़ा। इस बीच इस भूमि

पर बाहर से कई हमले हुए, जैसे स्लाव, हूण, तुर्की, और हंगरी के हमले, और रोमानियन लोगों को शताब्दियों तक इन हमलावरों से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ते रहना पड़ा ।

तब रोमानियन भूमि तीन अलग-अलग राज्यों में बँटी थी—वालाचिया, मोल्दोविया और ट्रान्सिल्वानिया । तीनों राज्यों के अलग-अलग शासक थे । इस दौरान बाहरी हमलों का मुकाबला करने के उद्देश्य से कई बार तीनों रोमानियन राज्यों को मिलाकर एक सशक्त रोमानियन राज्य की स्थापना करने के कई प्रयास हुए लेकिन एकीकरण का यह सपना साकार नहीं हो सका ।

रोमानियन भूमि पर सबसे अधिक अरसे तक लड़ी जाने वाली लड़ाई तुर्कों की लड़ाई है जिसमें तैमूरलंग का आक्रमण भी शामिल है । चौदहवीं शताब्दी के अंत में तुर्कों ने डेन्यूब क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया और धीरे-धीरे सन 1541 ई. तक वालाचिया, मोल्दोविया और ट्रान्सिल्वानिया तीनों राज्यों पर तुर्कों का प्रभुत्व स्थापित हो गया । आज भी कालासागर के किनारे स्थित रोमानिया के प्रसिद्ध बंदरगाह कान्स्ताजा में कई तुर्की वंशज दिखाई देते हैं । यहाँ के पुराने मकानों, इमारतों तथा बाज़ारों की बनावट में तुर्की शिल्पकला और संस्कृति की छाप झलकती है और आस-पास कई मस्जिदें भी इतिहास के गवाह के रूप में खड़ी हैं ।

रोमानिया की भूमि पर तुर्कों का प्रभुत्व उन्नीसवीं शताब्दी तक बना रहा । इस दौरान तुर्कों को रोमानिया की भूमि से हटने के कई प्रयास किए गए, लेकिन सब व्यर्थ रहे । अब रोमानियन लोगों के सामने दो ही लक्ष्य थे जो इनकी चिर आकांक्षाओं के प्रतीक थे अपनी भूमि से तुर्क प्रभुत्व समाप्त करना और तीनों रोमानियन राज्यों का एकीकरण कर एक सशक्त रोमानियन राज्य का निर्माण करना । सन 1599 ई. में वालाचिया के शासक मिहाई मित्याजुल ने तुर्कियों को हराकर तीनों राज्यों को एक सूत्र में बाँधा लेकिन यह एकीकरण सालभर से ज्यादा न टिक सका ।

सन 1859 ई. में पहली बार वालाचिया और मोल्दोविया दो राज्यों ने एक राष्ट्रीय रोमानियन राज्य की स्थापना की, यद्यपि इन पर अब भी तुर्कों
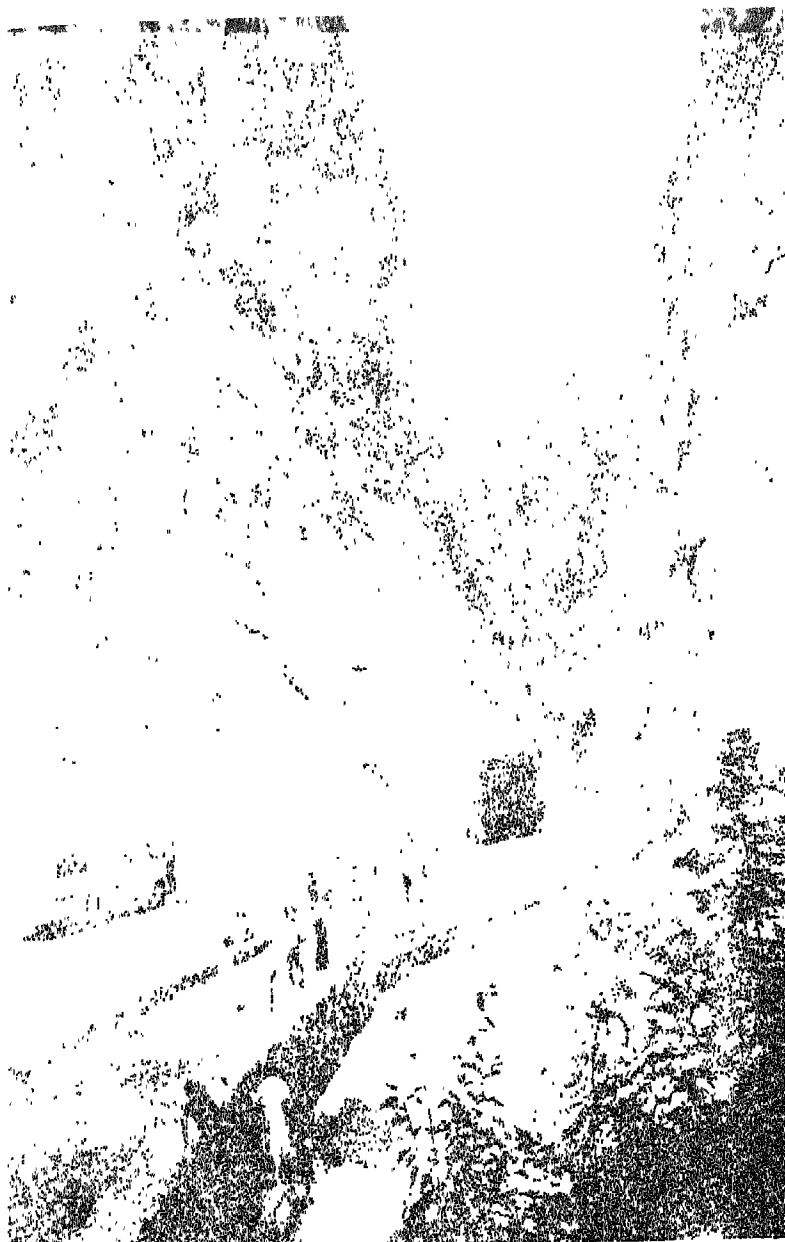
चित्र 4 : त्रान्सिलवानिया और मोल्दोविया राज्यों के बीच का ऐतिहासिक घाटी-मार्ग ।

का ऊपरी प्रभुत्व था । त्रान्सिलवानिया अब भी राष्ट्रीय रोमानियन राज्य में शामिल नहीं हुआ था ।

सन् 1877 ई. में जब रूस और तुर्कों के बीच युद्ध छिड़ा तो रोमानिया ने भी तुर्कों के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा कर दी । इस बार अपनी मातृभूमि से तुर्क प्रभुत्व समाप्त करने में उन्हें सफलता मिली । फलस्वरूप सन् 1878 ई. में पहली बार रोमानिया को पूर्ण स्वराज मिला, लेकिन राज्यों के एकीकरण की प्रक्रिया अब भी पूरी नहीं हुई थी । त्रान्सिलवानिया का राज्य सन् 1867 ई. के एक एक्ट के अनुसार हंगरी साम्राज्य का हिस्सा हो चुका था ।

इसी बीच प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा और अंत में आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य का भी पतन हुआ । फलस्वरूप सन् 1918 ई. में त्रान्सिलवानिया राज्य रोमानिया में मिल गया और इस प्रकार रोमानियन लोगों का तीन रोमानियन राज्यों के एकीकरण और एक स्वतंत्र रोमानियन राष्ट्र की स्थापना का सपना पूरा हुआ ।

स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना के बाद भी रोमानिया में राजतंत्र तथा सेनातंत्र का तानाशाही शासन ही चलता रहा । आम जनता अब भी पीड़ित थी । घोर सामाजिक तथा आर्थिक असमानता और सामंती अत्याचार के कारण लोगों में धीरे-धीरे असंतोष बढ़ने लगा । सन् 1921 ई. में रोमानिया की साम्यवादी पार्टी का जन्म हो चुका था । इसने तानाशाही राजतंत्र के विरुद्ध तीव्र आंदोलन छेड़ दिया और आखिर में सन् 1944 ई. में रोमानिया से राजतंत्र को उखाड़ फेंका । 30 दिसंबर 1947 को देश में विधिवत् समाजवादी व्यवस्था की घोषणा की गई और देश का नाम 'रोमानियन जनगणतंत्र' रखा गया । सन 1965 में जब नया संविधान स्वीकृत हुआ तो इसका नाम 'समाजवादी गणतंत्र रोमानिया' रखा गया ।

सत्ता में आने के बाद समाजवादी सरकार ने देश की सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया । राजपरिवार के सदस्यों को या तो देश के बाहर निकाल दिया गया या उन्हें उनके पदों से हटा दिया गया । सामंती व्यवस्था पूर्णतः समाप्त कर दी गई। राज्य की सारी भूमि और बड़े-बड़े मकानों पर राष्ट्र का अधिकार हो गया और देश के सभी उद्योग तथा व्यापारों का राष्ट्रीयकरण या सहकारीकरण कर दिया गया ।

चित्र 5 : रोमानिया के वर्तमान राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कु ।

अब कोई भी व्यक्ति बिना काम किए जीवन-यापन नहीं कर सकता था।

इससे लाखों भूमिहीन, बेघरबार, गरीब किसानों, मजदूरों और आम लोगों को राहत मिली। उनकी मजदूरी और उनका वेतन कई गुना बढ़ा दिया गया। न्यूनतम और अधिकतम वेतन की सीमाएँ निर्धारित कर दी गई जिनके बीच ज़्यादा अंतर नहीं रखा गया। आज रोमानिया के एक मजदूर को प्रारम्भ मे कम से कम 1,500 रुपए मिलते है और एक इंजीनियर या डाक्टर को प्रारंभ में कम से कम 2,000 रुपए के आस-पास। निदेशकों तथा उच्च प्रशासकों को 3,500-5,000 रु. के आस-पास वेतन मिलता है।

इस नई व्यवस्था के अन्तर्गत बाज़ारो में सारा सामान सरकार द्वारा निर्धारित मूल्यों पर बिकने लगा जिससे मुनाफाखोरी बंद हो गई। लोगों को उनके परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर मामूली किराए पर मकान मिलने लगे। संपूर्ण शिक्षा तथा चिकित्सा की सुविधाएँ मुफ़्त कर दी गई। आम जनता को इस व्यवस्था से बहुत लाभ मिला, लेकिन शाही परिवारों, सामंतों, व्यापारियों और धनिक वर्गों को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

सन 1967 में श्री निकोलाई चाउसेस्कु राज्य परिषद के अध्यक्ष चुने गए जो उस समय राष्ट्र का सर्वोच्च पद था। 1974 में जब राष्ट्रपति के पद की स्थापना हुई तो श्री निकोलाई चाउसेस्कु रोमानिया के प्रथम राष्ट्रपति बने।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय रोमानिया आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ा देश था, इसलिए सरकार का सबसे पहला काम लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना था। इसके लिए सरकार ने औद्योगीकरण, कृषि के आधुनिकरण तथा वैज्ञानिक अनुसधान की योजनाओ पर बड़े पैमाने पर काम शुरू कर दिया। आज एक गरीब से गरीब रोमानियन की न्यूनतम आय लगभग 1,500 रुपए माहवार है जो सन् 1950 में लगभग 100 रुपए (लेई) थी। प्रति-व्यक्ति औसत आय के आधार पर रोमानिया, जो एक विकासशील राष्ट्र है, संयुक्त राष्ट्र संस्था के मानदण्डों के अनुसार विकासशील राष्ट्रो की परिधि से ऊपर उठ गया है।

धड़कन समाज की

रात के अंधियारे में बुख़ारेस्त का चेहरा नहीं देख पाया था। सो भोर के प्रकाश में जब बुखारेस्त की सडकों पर पहली नजर पडी तो एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई पडा। सड़क के दोनों ओर अनेक महिलाएँ बडी तेज़ी से बेतहाशा भागी जा रही थी। सोचा कोई कार्यक्रम होगा। फिर जब दूसरे, तीसरे और चौथे दिन भी यही दृश्य देखा तो मेरा कौतूहल बढ़ा कि इतने तडके जब भारत में अधिकांश लोग बिस्तर पर ही लोटते-पलटते रहते हैं ये महिलाएँ आधे-अधूरे मेक-अप में पुती, बौख़लाई हुई-सी रोज़ कहाँ खिंची चली जाती है।

कुछ दिन बाद यह राज़ खुला। यहाँ के सभी कार्यालय, फैक्ट्रियाँ, विद्यालय आदि सुबह सात बजे ही खुल जाते हैं—और इनमे समय की पाबंदी इतनी सख़्त है कि पाँच-दस मिनट भी देर से आने पर सख़्त दण्ड हो सकता है, जैसे वेतन-कटौती, पदावनति, नौकरी से निकाल देना आदि। इसी भय से कहिए या अनुशासनवश, कई लोग सुबह जल्दी में प्रातःकालीन नित्य कर्म पूरा किए बिना ही सीधे कपड़े पहन कर अपने कार्य-स्थानों के लिए निकल पड़ते हैं। हाजिरी लगाने के बाद वे वहीं हाथ-मुँह धोते है,

मेकअप करते हैं तथा नाश्ता आदि लेते हैं ।

बुखारेस्त का 'पीक आवर' सुबह साढे छह बजे शुरू होता है । आपको इस समय चारों ओर वैसी ही चहल-पहल दिखाई देगी जैसे भारतीय शहरों में सुबह 9-10 बजे के आस-पास होती है । बसें खचाखच भरी रहेंगी, सड़कों पर कारों का ताँता लगा होगा और घर से भूखे पेट निकले नर-नारी रेस्तरॉं या डबल रोटी की दुकानों में खड़े-खड़े फटाफट बोतलबंद दही, चीज़ (पनीर) और डबल रोटी आदि निगल रहे होंगे । पेट की ज्वाला शांत करने के बाद ये पुन: दौड़ में शामिल हो जाते हैं । यह वास्तव में वह दौड़ नहीं जो उन्हें उनके कार्य-स्थान तक ले जाती है—यह दौड आकांक्षाओं की है किसी अनजान ऊँचाई तक पहुँचने की है, जिसे आधुनिक युग की भाषा में 'रेट रेस' कहा जाता है । इस दौड़ की वास्तव में कोई आखिरी मंजिल नहीं ।

एक रोमानियन के जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षण उसके कार्य-स्थान मे ही गुज़रते हैं—इसीलिए उसके जीवन के कई महत्वपूर्ण निर्णय भी यहीं होते हैं । जीवन-साथी चुनने की उसकी सबसे बडी मंडी यही है और तलाक यदि होता है तो उसका सबसे बडा कारण भी यही है । चारों ओर की सूचना का केन्द्र भी यही है और कहाँ किस दुकान में आज कौन-सी चीज मिल रही है इसका अन्वेषण-केन्द्र भी यही है ।

अगर आप किसी रोमानियन कर्मचारी को काम करते देखें तो उसके एक शौक की आप ज़रूर दाद देंगे । यदि वह दफ्तर में काम करता हैं तो उसकी मेज पर, और यदि दुकान या स्टोर में है तो उसके काउन्टर पर, अक्सर आपको एक छोटा जेबी ट्रान्ज़िस्टर रखा मिलेगा जिससे किसी लोक धुन या संगीत की हल्की धारा अनवरत बह रही होगी ।

आठ घटे की ड्यूटी देने के बाद जब वह शाम को अपने कार्य-स्थान से बाहर निकलता है तो उसके पाँव प्राय: घर की तरफ नहीं, उस स्टोर या दुकान की तरफ मुड़ते है जहाँ से उसे आज घर के लिए सब्ज़ी, दूध, मास, तेल, बियर आदि लेकर लौटना है । इस प्रकार की इमरजेंसी के लिए प्लास्टिक का एक थैला, जिसे यहाँ 'पुंगा' कहा जाता है, उसके पर्स या जेब में हमेशा मौजूद रहता है ।

जब वह घर के दरवाज़े पर पहुँचता है तो उसका हाथ अक्सर थैलों या पोटलियों से भरा होता है । इन शुष्क पोटलियो के बीच झाँकती एक चीज अचानक आपके मन को झकझोर देती है—फूलो का एक गुच्छा । तभी एकाएक आपको एहसास होता है कि चाँदी की अंधी दौड के बीच उसका हृदय अभी भी धडक रहा है, जीवन की कोमल भावनाएँ उसके अन्तस्तल मे अभी भी जीवित है । वह अब भी फूलों की भाषा मे बात करने मे समर्थ है । फूल का एक नग उसे 5 रुपए में मिलता है और कम से कम 20-30 रुपए का पाँच-छः फूलो का एक गुच्छा वह अपना पेट काट कर भी खरीद कर लाता है—किसी स्वजन या मित्र को उपहार देने के लिए या

चित्र 6:किसी स्वजन के लिए फूल ख़रीदती रोमानियन महिला : वह अब भी फूलो की भाषा मे बात करने मे समर्थ है ।

स्वयं अपने घर के फूलदान में सजाने के लिए । महत्वपूर्ण यह नहीं है कि वह फूल खरीदता है, महत्वपूर्ण यह है कि उसके जीवन की प्राथमिकताओं में फूल तथा फूलों द्वारा व्यक्त होने वाली भावनाओं का कितना ऊँचा स्थान है । जगह-जगह पर बनी फूलों की फुटपाथी दुकानों से लेकर महँगी से महँगी वातानुकूलित फूल की दुकानों तक सभी हमेशा गुणी ग्राहकों से भरी रहती है । शनिवार या त्यौहारों के दिन तो इन फूलों के लिए रोमानियन घंटों लंबी कतारों में खड़ा रहता है ।

कौन आगे — महिला या पुरुष ?

कुछ लोगों की धारणा है कि विश्व में सबसे सुन्दर महिलाएँ तुर्क होती हैं और उसके बाद रोमानियन । यह सत्य हो या न हो लेकिन मूल रोमानियन जाति (डाचिया) इतिहास के दो अलग-अलग खण्डों में रोमन तथा तुर्क वंशों के संपर्क में रही, जैसा कि आप पिछले पृष्ठों में पढ़ चुके हैं । इसलिए आज रोमानियन वंशज पर किसी न किसी सीमा तक इन दोनों वंशों का जातिगत प्रभाव है । चिकना गोरा रंग, तीखे नाक-नक्श, काले-भूरे बाल और बड़ी-बड़ी आँखें इन्हें जहाँ पाश्चात्य रोमन वंश से जोड़ती हैं वहाँ पूर्वी तुर्कों से भी । सुंदरता का इनका अपना एक लोक प्रचलित मापदंड है—जिस महिला के बाल काले और आँखें भूरी हों या बाल भूरे और आँख काली हो वह सबसे सुन्दर मानी जाती है । कहना न होगा इस दुर्लभ मेल की धनी महिलाओं की संख्या अधिक नहीं होती ।

रोमानिया में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कुछ अधिक है—स्त्रियों की औसत आयु की दीर्घता भी पुरुषों की तुलना में अधिक है—स्त्रियाँ 73.6 वर्ष और पुरुष 67.45 वर्ष । महिलाएँ देश के सभी कामों में आगे हैं । कार्यालय, दुकान, स्टोर, टेलिफ़ोन-केन्द्र, अस्पताल, बैंक, विद्यालय, व्यापार आदि अनेक सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाएँ ही छाई हुई हैं । टैक्सी ड्राइवर और टिकट चैकर जैसे कठिन कामों में भी महिलाओं का बराबर का हिस्सा है ।

कुछ दशक पहले तक रोमानिया में महिलाओं को वह स्थान प्राप्त नहीं था जो आज है । सरकार की नई नीति ने उन्हें कानूनी तथा सामाजिक दोनों तरह की आज़ादी दी । फलस्वरूप उनकी झिझक खुली और फिर वे एक

चित्र 7 कौन आगे – महिला या पुरूष ?

बार घर की मानसिक चहारदीवारी से बाहर निकलीं तो उनकी नज़र सीधे पश्चिमी यूरोप और अमेरिका की प्रगतिशील नारियों पर जा टिकी। एक तरह से अब वे उनका आदर्श हैं।

स्त्रियों को बराबरी का दर्जा और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण इसका एहसास दिलाने में सन् 1948, 1952 और 1965 के रोमानिया के उन समाजवादी विधानों का बहुत बड़ा हाथ है जिनके अनुसार रोमानिया के हर स्त्री-पुरुष और हर पति-पत्नी को कानूनन नौकरी करनी पड़ती है। नौकरी देने का दायित्व सरकार का है। स्कूल या विश्वविद्यालय की पढ़ाई खत्म करने के बाद नौकरी न करना कानूनन जुर्म है और पुलिस ऐसे व्यक्ति को तुरंत गिरफ़्तार कर लेती है क्योंकि यह माना जाता है कि यदि वह नौकरी नहीं करता तो शायद किसी अवैध ढंग से जीवन-यापन करता होगा। कुछ विशेष परिस्थितियों में स्वास्थ्य संबंधी कारणों से ही उसे नौकरी न करने की छूट मिल सकती है।

प्रायः महिलाएँ पैसे के कारण या अपनी रुचि से नौकरी करना पसंद करती हैं। परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने

स्वतंत्र होने और पुरुष की बराबरी कर लेने का सुखद एहसास होता है, वहाँ दूसरी ओर इन्हें परिश्रम भी पुरुषों की तुलना में अधिक करना पडता है । एक बार एक रोमानियन महिला ने अपनी विचित्र स्थिति का जिक्र करते हुए कहा था—'मेरे दो बॉस हैं, एक कार्यालय में और दूसरा घर में (पति)' । यह स्थिति लगभग सभी नौकरीपेशा पत्नियों की है । नौकरी के आठ घंटे तो इन्हें काम करना ही पडता हैं, घर आकर भी इन्हें रसोई, धुलाई, सफ़ाई आदि का काम करना होता है और बच्चों का लालन-पालन अलग । व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के लिए वे ये तकलीफ़ें भी खुशी-खुशी उठा लेती है ।

भारत में एक सामान्य धारणा यह है कि पश्चिमी देशों में घर के काम में पति-पत्नी दोनों समान रूप से हाथ बँटाते हैं । कम से कम हर रविवार को सफाई की मशीन (वेक्यूम क्लीनर) घुमाकर कालीन और फर्श साफ़ करना, टूट-फूट की मरमत करना, बाग-बगीचों को संवारना आदि पाश्चात्य पति के परंपरागत फ़र्ज़ों में गिना जाता है । इसके अलावा रसोई के रोज़मर्रा के कामों में भी उसे पत्नी का हाथ बँटाना होता है—और फिर यह तो पत्नी पर निर्भर करता है कि वह अपने पति से कितना काम करवा सकती है ।

पश्चिमी देशों में पैसा देकर दूसरों से काम करवाना इतना महँगा है कि इन कामों के लिए नौकर या रसोइया रखने की कल्पना सामान्य धनी वर्ग भी नहीं कर सकता । यह सुख भोगना हो तो भारत से अच्छी कोई जगह नहीं । भारत रह कर लौटे एक पश्चिमी राजनयिक ने एक रोचक घटना का जिक्र करते हुए बताया, 'भारत में तीन-चार साल नौकर-चाकरों की उदार सेवा का सुख भोगकर हमारी आदतें इतनी बिगड़ गई थी कि जब हमारा तबादला हुआ और हम अपने देश लौटे तो पहले ही दिन एक अजीब स्थिति पैदा हो गई । पहली ही रात रसोईघर में पडे जूठे बर्तनों के ढेर को देखकर मैं पत्नी का मुँह ताकता था और पत्नी मेरा । ये बर्तन अब हममें से कौन धोएगा ? वही फ़िफ्टी-फिफ्टी ।'

रोमानिया में स्त्री ने तो सामाजिक स्तर पर अपने को पुरुष के बराबर कर लिया, लेकिन पुरुष पारिवारिक स्तर पर अपने को अब भी स्त्री के बराबर नहीं कर पाया । परंपरागत भारतीय पति की तरह रोमानियन पति भी घरेलू कामकाज में पत्नी का हाथ बँटाने में अक्सर कतराता हैं जैसे

उसकेअहं को ठेस पहुँच रही हो। फिर भी रोमानियन पति घर के कामकाज में पत्नी का साथ देता दिखाई देता है तो यंह हालात की नाज़ुकता है। वह सफ़ाई या रसोई का काम करता है तो इसलिए नहीं कि यह पाश्चात्य समाज के नए मूल्यों का एक अंग है, बल्कि इसलिए कि ऐसा न किया तो उसे कल सुबह खाना नहीं मिलेगा, शाम को लौटकर फ्रिज खाली मिलेगा, या बच्चे समय पर स्कूल नहीं जा पाएँगे, आदि।

पड़ौसी देश पोलैंड की स्थिति कुछ अलग है। यह भी एक समाजवादी देश है, लेकिन एक पोलिश पति बच्चे को खाना खिलाने से लेकर खाना बनाने और बर्तन साफ़ करने तक के सभी घरेलू कामों में सक्रिय रूप से पत्नी का साथ देता है। पोलिश समाज में पश्चिमी देशों के पारिवारिक मूल्यों का प्रवेश कुछ अधिक पहले और अधिक गहराई तक हुआ है। यहाँ की महिलाएँ भी रोमानियन महिलाओं की तुलना में अधिक आधुनिक और रूढ़ियों से मुक्त हैं।

अतीत और वर्तमान में डोलता मन

इस शताब्दी के मध्य में जब रोमानिया की भूमि से राजतंत्र सामंतवर्ग और सामंती प्रणाली का एकाएक अंत हुआ तो यह अंत अतीत से चली आ रही एक राजनीतिक व्यवस्था का अंत था। इसका अर्थ यह नहीं कि वहाँ के लोगों के मन में बसे हज़ारों साल पुराने संस्कारों या विचारों का भी अंत हो गया। व्यक्ति, जायदाद, शासन-व्यवस्था आदि को तो आसानी से नष्ट किया जा सकता है, लेकिन लोगों के मन की गहराइयों में बसे परंपरागत संस्कारों या जीवन मूल्यों को बदलने में समय लगता है।

अतः स्वाभाविक था कि रोमानिया के लोगों के मन में अतीत और वर्तमान या परंपरा और आधुनिकता के बीच तीव्र संघर्ष हो। नई टेक्नॉलॉजी, नई स्वतंत्रता, नए सुख-साधन, जीन-पैंट और पॉप संगीत जहाँ उन्हें आधुनिकता की ओर खींचते है, वहीं पुराने पारिवारिक तथा सामाजिक संस्कार उन्हें बार-बार पीछे मुड़कर देखने को मजबूर करते हैं। अतीत के मूल्यों के प्रति अब भी उनके मन में दर्द है।

अतः अतीत और वर्तमान के बीच भूलता रोमानिया का मन, पश्चिमीकरण के प्रबल अभियान के बावजूद, उस सीमा तक भौतिकवादी नहीं बन पाया है

जिस सीमा तक पश्चिमी यूरोप के अन्य देश बन चुके हैं । एक सामान्य रोमानियन अब भी अपनी कुछ परंपराओं से सशक्त रूप से जुड़ा है। यही कारण है कि रोमानियन परिवार मे बड़े-बूढ़ों का सर्वोच्च सम्मानपूर्ण स्थान है । उन्हे ब्रिटेन या अमेरिका की भाँति नातों-रिश्तों के दायरे से दूर सरकारी वृद्ध-गृहों में नही सुला दिया जाता । जब पति-पत्नी और संतान का रिश्ता तलाक के एक झटके से अचानक छिन्न-भिन्न हो जाता है तब नाना-नानी या दादा-दादी के रिश्तों का सहारा ही अनाथ संतान को टूटने से बचाता है । इसीलिए एक रोमानियन की ज़बान पर बातचीत के दौरान दादा-दादी या नाना-नानी (बुनीक:) का नाम मम्मी-पापा के नाम से अधिक बार आता है । इसीलिए गर्मी की छुट्टियों में जो लोग समुद्रतट या पर्वत नहीं जाते वे अपने दादा-दादी या नाना-नानी के गाँव या शहर जाते हैं वहीं उन्हें घर में बनी अंगूर की शुद्ध शराब (वाइन) के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी से जुड़े रहने का अनमोल एहसास भी मिल जाता है । इसीलिए भारत की पारिवारिक भावुकतापूर्ण फ़िल्में. जिन्हें पश्चिमी यूरोप या अमेरिका रूलाऊ फ़िल्म (टियर जर्कर) कह कर टाल देता है, यहाँ महीनों हाउसफुल चलती हैं ।

धर्म-कांटे पर धर्म

रोमानिया के संविधान के अनुसार हर नागरिक को अपने धर्म को मानने की स्वतत्रता है । अधिकांश नागरिक ईसाई हैं, जिनमें से यूनानी प्राच्य चर्च (ऑर्थोडॉक्स) को मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है । इनके अलावा रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट इवेन्जेलिकल, युनिटेरियन, मोज़ेइक आदि ईसाई संप्रदाय भी हैं । कुछ यहूदी भी हैं । पंद्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के बीच काफ़ी समय तुर्कों के शासन तथा प्रभाव में रहने के कारण रोमानिया के कुछ क्षेत्रों में थोड़े बहुत मुसलमान भी हैं ।

रोमानिया में कई पुराने गिरजाघर तथा मठ हैं । दूसरी और तीसरी शताब्दी में 165 वर्षों तक रोमन साम्राज्य के अंतर्गत रहने और बाद में भी सदियों तक रोमन संस्कृति से प्रभावित रहने के कारण रोमानिया में कई चर्च तथा मठ इस दौरान बने । फलस्वरूप आज भी रोमानिया प्राचीनतम तथा मध्यकालीन गिरजाघरों और धार्मिक स्मारकों से भरा पड़ा है ।

रोमानिया के संविधान में जहाँ हर एक को अपने-अपने धर्म का पालन करने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता है, वहीं यह रोक भी है कि कोई धर्म या संप्रदाय कोई शिक्षण संस्था या विद्यालय नहीं चला सकता । इस प्रतिबंध के अंतर्गत वे खास विद्यालय नहीं आते जो चर्च के धार्मिक कार्यकर्ताओं (पादरी-आदि) को धार्मिक प्रशिक्षण देते हैं । उदाहरण के लिए, धर्मविज्ञान (थियोलोजी) की शिक्षा देने के लिए एक धर्मविज्ञान संस्था है जहाँ अन्य अध्ययनों के साथ-साथ स्नातक स्तर का धर्मविज्ञान प्रशिक्षण भी दिया जाता हैं । इनमें सभी धर्मों (विशेषत: यूरोप के धर्मों) का अध्ययन किया जाता है । यह संस्था मुख्यत: शासन द्वारा ही नियंत्रित है । यहाँ से निकले धर्मविज्ञान के स्नातक देश के विभिन्न गिरजाघरों में पादरी के रूप में नियुक्त किए जाते हैं । पादरियों तथा गिरजाघरों के कार्यकर्ताओं को सरकार द्वारा निश्चित माहवारी वेतन मिलता है ।

सरकार किसी भी रूप में धर्म या धार्मिक भावना को प्रोत्साहन नहीं देती और न ही नए गिरजाघर या मठों की स्थापना की अनुमति देती है । जो गिरजाघर या मठ देश में पहले से मौज़ूद हैं केवल उनके रख-रखाव के लिए ही जो धन अत्यंत जरूरी है सरकार उसकी व्यवस्था करती है । गिरजाघरों में सीमित स्तर पर नित्य धार्मिक सेवाएँ होती हैं तथा पादरियों के प्रवचन होते हैं लेकिन किसी भी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान, त्यौहार या समारोह का सार्वजनिक आयोजन या प्रचार संभव नहीं। इसीलिए रोमानिया में किसी भी धार्मिक त्यौहार, यहाँ तक कि क्रिसमस और ईस्टर तक की शासकीय छुट्टियाँ नहीं होतीं । वैसे भी वर्ष में केवल तीन-चार सरकारी छुट्टियाँ होती हैं, जैसे नए साल की, पहली मई को मजदूर दिवस की तथा स्वतंत्रता दिवस की । शासकीय छुट्टी न होने पर भी ज्यादातर लोग इन त्यौहारों को घर की चहारदीवारी में बड़े चाव से मनाते हैं । कहते हैं न, दुलर्भ चीज़ की कीमत ज्यादा होती है ।

आपके मन में जिज्ञासा होगी कि धर्म के प्रति इस प्रकार के दृष्टिकोण का कारण क्या है ? समाजवादी मान्यता के अनुसार, धार्मिक भावना मनुष्य को कमज़ोर बनाती है, उसे कर्म से दूर हटाती है, भाग्यवादी बनाती है और उसमें अंधविश्वास पैदा करती है । ऐसा कोई भी कार्य जिसका परिणाम आर्थिक या भौतिक उपलब्धि न हो, समाजवादी सरकारों की प्राथमिकताओं

की सूची में सबसे नीचे होता है । धर्म इनके इस आर्थिक धर्मकांटे मे पूरा नहीं उतरता । इसीलिए आज इन देशों के भव्य धार्मिक स्मारक, कलात्मकतापूर्ण गिरजाघर तथा विशाल मठ अतीत की ओर मुँह किए हुए मौन खड़े हैं । विभिन्न संस्कृतियों के संगम के प्रतीक तथा इतिहास की धारा में जातियों के जय-पराजय के चश्मदीद गवाह, ये गिरजाघर आज पर्यटकों को केवल इतिहास की याद दिलाते हैं ।

रोमानिया के शासकों ने अपनी समाजवादी नीतियों को त्यागे बिना धर्म के प्रति एक लचीला दृष्टिकोण ढूँढ़ निकाला है—उदासीनता, सज़गता और सहिष्णुता । धर्म के प्रसार के प्रति उदासीन, लेकिन इस बात के प्रति हमेशा सजग कि धर्म के माध्यम से राष्ट्रीय हितों तथा मान्यताओं को हानि तो नहीं पहुँच रही है । जहाँ तक इन हितों को हानि नहीं पहुँचती वहाँ तक सरकार जन साधारण की धार्मिक भावनाओं के प्रति पर्याप्त सहिष्णु तथा उदार है । यही कारण है कि अन्य समाजवादी देशों की तुलना में रोमानिया में धार्मिक स्वतंत्रता या सहिष्णुता कुछ अधिक है ।

इस दृष्टिकोण के पीछे एक कड़वा सच छिपा है । धर्म धार्मिक पुस्तकों और सिद्धान्तों में ही निवास नहीं करता बल्कि मानव मन और मन की गहराइयों में जमे संस्कारों में भी छिपा रहता है, और ये संस्कार कुछ सदी पुराने नहीं, बल्कि पृथ्वी पर मानव जीवन के साथ ही पैदा हुए हैं । इसीलिए, गिरजाघरो की ईंटों की तो उपेक्षा की जा सकती है, लेकिन मन के संस्कारों और उनमें लिपटी भावनाओं की नहीं ।

ये भावनाएँ इस देश में कई रूपों में प्रकट होती हैं—उस रोमानियन के रूप में जो चर्च के सामने से गुजरते हुए अपने हाथों से छाती पर क्रास बनाकर सोए इतिहास के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है, उस भद्र रोमानियन के रूप में जो किसी दूरस्थ चर्च में जाकर चोरी-छिपे अपने मन का बोझ हल्का करता है, उस रोमानियन के रूप में जो अपने पुराने गिरजाघरों और मठों की एक-एक बारीकी और उसमें लिपटी कथाओं को बड़े चाव से आपके सामने खोलकर रख देता है और उस रोमानियन के रूप में जो अदालत में शादी कर चुकने के बाद भी धर्म की दहलीज़ पर जाकर अपनी शादी पर परंपरा की मुहर लगाना नहीं भूलता ।

चित्र 8 : अतीत की ओर मुँह किए मौन खड़ा गिरजाघर पर्यटकों की इंतजार में।

धर्म को राष्ट्र के रंगीन चित्र से हटा कर रोमानिया ने एक उपलब्धि अवश्य हासिल की है—देश में धर्म नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता की भावना लोगों को एकसूत्र में बाँधती है। रोमानिया में जैसे-जैसे नई पीढ़ी का धर्म से संपर्क घटता जा रहा है, वैसे-वैसे धर्म का स्थान राष्ट्रीयता लेती जा रही है। वास्तव में राष्ट्रीयता ही उनका सबसे बड़ा धर्म है।

चौथा अध्याय
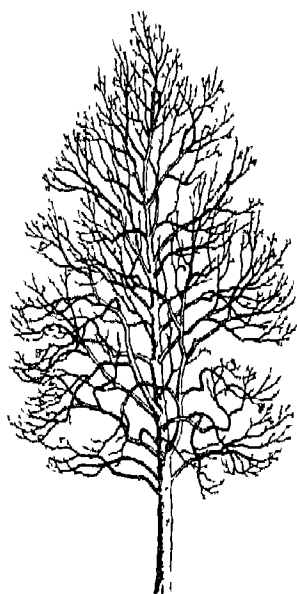
छवि भारत की

जब आप अपने देश से बाहर निकलते हैं तो आप अपने साथ अपने देश का एक 'लेबल' लेकर चलते है—भारतीय, जर्मनी, फ्रांसीसी, अमरिकी आदि । बाहर जब कभी आप किसी विदेशी से बातचीत या व्यवहार करते हैं तो आपके मन की किसी तह में यह जिज्ञासा छिपी रहती है कि विदेश मे लोग आपके और आपके देश के बारे में क्या सोचते हैं, क्या जानते हैं ? दूसरे शब्दों में, उनके मन में आपके देश की छवि क्या है ? आपको अपने देश से बाहर कितना आतिथ्य और कैसा व्यवहार मिलता है यह आपके अपने व्यवहार पर तो निर्भर करता ही है, बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप किस देश के नागरिक हैं ।

आपने सुना होगा, कई साल पहले एक आम विदेशी भारत को साधुओं, महाराजाओं, जादूगरों, हाथियों और साँपो के देश के रूप में जानता था। उन्नीसवीं सदी में इसी तरह की कुछ किताबे भारत के बारे में विदेशों में प्रकाशित हुई थीं जिनमें भारत की कुछ विचित्र-सी तस्वीर उभारी गई थी। इसीलिए जब भी कोई विदेशी भारत आता था तो वह सबसे पहले साँपों को बीन की ताल पर नचाने वाले सपेरों और रस्सी को हवा में खड़ाकर

आसमान पर विलीन कर देने वाले जादूगरों को ढूँढ़ा करता था । थोड़े समय बाद कुछ विदेशी विद्वानों के ही प्रयास से भारत के प्राचीन संस्कृत साहित्य और सभ्यता की समृद्धि की ख़बर दुनिया के कुछ हिस्सों में पहुँचनी शुरू हुई ।

समय के साथ-साथ धीरे-धीरे महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, सत्यजीत राय, राजकपूर आदि को विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के कारण भारत की एक दूसरी ही तस्वीर विदेशों में उभरने लगी । हजारो-लाखों की संख्या में भारत के वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफ़ेसर तथा सामान्य श्रमिक इंग्लैंड, अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, तथा अरब देशों में जाकर कार्य करने लगे । भारतीय अध्ययन के केन्द्र भी कई देशों में खुलने लगे । विश्व के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश के रूप में भी भारत को लोग जानने लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशों में भारत की पुरानी छवि कुछ बदली ।

भारत की छवि सभी देशों में एक समान हो, ऐसा नहीं है । भारतीयों को सभी देशों में एक समान व्यवहार मिलता हो यह भी ज़रूरी नहीं । अमेरिका, कनाडा तथा पश्चिमी यूरोप में भारतीय को अन्य विकासशील देशों की तुलना में अधिक परिश्रमी तथा कुशल समझा जाता हैं यद्यपि भारत की आम जनता की निर्धनता उनसे छिपी नहीं है । कभी-कभी एक-दो देशों में भारतीयो के साथ भेद-भाव की शिकायतें भी सुनने को मिलती रहती हैं ।

दुनिया में कुछ देश ऐसे भी हैं जहाँ भारतीय के रूप में आपको कुछ अधिक सद्भाव और प्यार मिलता है, जहाँ 'मैं भारतीय हूँ' कहने मे आप गर्व का अनुभव करते हैं । भारतीय का यह 'लेबल' कभी-कभी आपकी मुसीबतों को आसान भी बना देता है । रोमानिया ऐसा ही एक देश है । यद्यपि रूस तथा पूर्वी यूरोप के लगभग सभी देशों (बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, पोलैंड आदि) में भारतीय होने के नाते आपको अतिरिक्त स्नेह और सौहार्द्र मिलेगा, लेकिन रोमानिया में सड़कों पर, दुकानों में, बसों में, घरों में जगह-जगह आपको अनायास ही इसकी अनुभूति होगी ।

रोमानिया के जनमानस में छिपे इस भारत-स्नेह का एहसास मुझे बुख़ारेस्त पहुँचने के दूसरे-तीसरे दिन ही हो गया । मैंने 'दोरोबांस' के

चौराहे पर एक वृद्ध महिला से भारतीय दूतावास के अपने भारतीय मित्र के घर का रास्ता पूछा। मुझे रोमानियन भाषा बिल्कुल नहीं आती थी और वृद्धा रोमानियन के अलावा दूसरी भाषा नहीं जानती थी। उसे जब पता चला कि मैं 'इंडिया' से आया हूँ तो जैसे उसके चेहरे पर एक रौनक-सी आ गई। वह अपने सब्ज़ी-राशन के भारी थैले को ढोए, केवल मुझे रास्ता बताने के लिए, लगभग एक किलोमीटर की दूरी तक मेरे साथ चलती रही। रास्ते भर वह भारत के बारे में बड़े चाव से अपनी भाषा में बहुत-कुछ कहती रही जो मेरी उस समय की भाषाई पकड से बाहर थी। उसने ख़ुद इधर-उधर पूछताछ कर घर का पता लगाया। फिर अंततः मुझे एक मकान की दूसरी मंजिल पर ले गई। उसने दरवाजे की घंटी बजाई और जब मित्र की पत्नी बाहर निकली तो कहा—'ये आपके मेहमान हैं। मैं अब इन्हें आपके सुपुर्द करती हूँ। 'ला रेवेदेरे' (अलविदा)!' यह कहकर वह अज्ञात वृद्धा, मेरे मन पर एहसान का एक बोझ-सा छोड़ते हुए वापस चली गई। उसके एहसान का यह बोझ आज भी मुझ पर है।

अगर आप पुरुष हैं तो आप विदेशों में अपने रंगरूप के कारण भारतीय भी समझे जा सकते हैं, अरबी भी, पाकिस्तानी भी या किसी अन्य एशियाई देश के नागरिक भी। लेकिन यदि आप स्त्री हैं तो साडी तथा बिंदी के कारण आपकी भारतीयता कई मीटर दूर से ही घोषित हो जाती है। यह घोषणा कभी-कभी कितनी सुखद हो सकती है इसका एहसास मुझे उस दिन हुआ जब एक दिन मैं अपनी पत्नी के साथ बुख़ारेस्त के प्रसिद्ध बाज़ार 'उनिरिया' के पास से गुज़र रहा था। अचानक कुछ दूरी पर एक कार रुकी। कार के भीतर बैठे एक रोमानियन पुरुष ने कार से अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को एक साथ बाँधा और हमारी ओर इशारा किया जिसका अर्थ था—'आप हमारे मित्र हैं। भारत रोमानिया भाई-भाई।' अपने मन की ख़ुबसूरती को इस तरह हमारे सामने बिखेर कर वह कार को आगे बढ़ा कर अंतर्धान हो गया। हवा की गति से हमारी अनुभूति में आए इस अज्ञात रोमानियन ने अपनी एक छोटी सी हरकत से हमारे मन के जिस तार को छू दिया वह सदभावना के लंबे-चौडे भाषणों से भी संभव नहीं था।

मन की यह ख़ूबसूरती बडे-बूढ़ों तक ही सीमित नहीं है, एक सामान्य बालक के मन में भी भारत-स्नेह की एक हल्की धारा बहती रहती है।

भारत उसकी कल्पना में बसा एक रहस्यमय देश है । इस कल्पनालोक से निकलकर एक नौ वर्षीय भारतीय लड़का (हमारा पुत्र) जब रोमानियन स्कूल में दाखिल हुआ तो वह सारे स्कूल के लिए विशेष कौतूहल और आकर्षण का केन्द्र बन गया । तब उसे रोमानियन भाषा नहीं आती थी और स्कूलों में एक मात्र रोमानियन भाषा का ही प्रयोग होता था । खाली समय में जिज्ञासु बच्चे उसे घेरे रहते और तरह-तरह के प्रश्न पूछते । स्कूल से लौटता तो प्रायः लड़के उसका बस्ता अपने कंधे पर स्वयं ढोकर लाते और उसे रास्ता पार कराते, जैसे इस भारतीय सहपाठी को संभालने का सारा दायित्व उन्होंने अपने कंधों पर ले लिया हो ।

एक बार स्कूल में उसका रंग का डिब्बा खो गया । उसके साथियों को जब पता चला तो उन्होंने बिना उसे कुछ बताए आपस में कुछ पैसा इकट्ठा किया और इन्टरवल में बाज़ार से एक डिब्बा खरीद लाए और चुपचाप उसके बस्ते में डाल दिया । अपने सहपाठियों का यह विचित्र स्नेह क्या भारतीय शिशुमन कभी भुला सकेगा ? कभी मन सहज प्रश्न करने लगता है कि यदि किसी भारतीय स्कूल में इसी प्रकार कोई रोमानियन बालक होता तो क्या उसे यही व्यवहार मिलता । क्या इसी प्रकार का व्यवहार अमेरिका या इंग्लैड के स्कूलों में भारतीय बच्चे को मिलता है ?

अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों से होकर आए भारतीयों के लिए इसीलिए रोमानिया एक सुखद आश्चर्य हो सकता है । मैंने कई भारतीयों को कुछ देशों में अपनी भारतीय पहचान को छिपाए रखने की कोशिश करते देखा है लेकिन रोमानिया में आने वाले भारतीयों की सबसे बड़ी शक्ति उनकी भारतीय पहचान है । यह बात ज़रूर है कि रोमानिया में नए-नए आने वाले भारतीयों को, रोमानियन भाषा का ज्ञान न होने के कारण, सामाजिक व्यवहार में प्रारंभिक कठिनाई हो सकती है, क्योंकि यहाँ बहुत ही कम लोग अंग्रेजी जानते हैं । यदि आपने एक बार इनकी भाषा की कुछ पकड़ हासिल कर ली तो आप आम रोमानियन के मन के भीतर तक बड़ी आसानी से पहुँच सकते हैं ।

कुछ दिनों के लिए रोमानिया आए एक भारतीय अधिकारी होटल में बैठे अपने भाषाई तथा सामाजिक एकाकीपन की शिकायत कर रहे थे । उनकी शिकायत दूर करने के लिए मैं उन्हें खरीदारी के लिए बाज़ार ले गया ।

बुखारेस्त विश्वविद्यालय के पास हमने एक कामगर से एक दुकान का पता पूछा जहाँ हमें जाना था । उसने इशारे से हमे दुकान की दिशा बता दी । फिर वैसे ही जिज्ञासावश हम से पूछ लिया, 'आप अरब के किस देश के रहने वाले हैं ? जब हमने उसे बताया कि हम भारतीय है तो वह खुशी से उछल पड़ा । ओ, आप इंडिया से हैं ! आइए, आइए, मै बताता हूँ वो दुकान कहाँ है ।' यह कहकर उसने बड़े स्नेह से हमारी पीठ पर अपना हाथ रखा और हमें स्वयं लेकर उस दुकान तक छोड आया । कई देशों से घूमकर आए हमारे नवागंतुक मित्र के लिए यह अनुभूति बिल्कुल नई थी ।

रहस्य पूरब का

आप बस मे सफ़र कर रहे हैं और बगल के व्यक्ति को पता चले कि आप भारतीय हैं तो वह यह बताना नहीं भूलेगा कि उसने राजकपूर की फ़िल्म 'आवारा' चार बार देखी है, उसने गांधी, नेहरू और टेगौर का नाम सुना है और उसे भारतीय संगीत बहुत पसंद है । कई जिज्ञासु आपके सामने ऐसे प्रश्नों की भी झड़ी लगा देंगे जिनमें से कइयों के उत्तर शायद आपके पास स्वय न हो—आपके देश मे कौन-सा धर्म है ? आपके भगवान का नाम क्या है ? आप के यहाँ इतने अधिक भगवान (देवी-देवता) क्यों हैं ? आप गाय का मांस क्यों नही खाते ? क्या आपके यहाँ गाएँ सड़कों पर लेटी रहती हैं ? क्या वे दुकानों में घुसकर खाना माँगती है ? आपकी महिलाएँ माथे पर बिंदी क्यों लगाती हैं ? साडी कैसे 'सिला' जाता है ? आपके यहाँ सभी औरतें नौकरी क्यों नही करतीं ? आपके यहाँ लोगों की आयु-दीर्घता क्या है ? आप कुछ लोगों के साथ छूआछूत क्यों बरतते हैं ? क्या आपके यहाँ ब्राह्मण के अलावा सभी जातियाँ छोटी मानी जाती हैं ? वेद कब लिखे गए थे ? क्या आप 'योगा' जानते हैं ? नहीं तो, क्यों नहीं ? आदि ।

यह मात्र बौद्धिक जिज्ञासा नहीं—इसके पीछे उस पूर्व को समझने की एक भूख छिपी है जो उनके जीवन से धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है । जो चीज भूगोल और इतिहास से जितनी दूर होती है वह उतनी ही रहस्यमय होती है । भारत भी कइयों के लिए एक रहस्य है । भारत उनके लिए **पूर्व** का सबसे बडा प्रतिनिधि देश है, सबसे बड़ी प्रतिनिधि संस्कृति है । भारत के

बारे में अधिक न जानने वाला रोमानियन भी इतना अवश्य जानता है कि भारत की प्राचीन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके सामने पश्चिम की महान् यूनानी और रोमन संस्कृतियाँ भी शिशु हैं । वह यह भी जानता है कि **वेद-पुराण** आदि भारतीय ग्रंथ मानव सभ्यता की प्राचीनतम कृतियाँ हैं ।

रोमानियन मानस की पश्चिमी परत के नीचे एक पूर्व भी छिपा है जो उसके अतीत और उसकी प्राचीन पंरपरा से जुडा है । पूर्व की इस परत पर पश्चिम की जितनी मोटी परत जमती जाती है उतना ही पूर्व के धीरे-धीरे दृष्टि से ओझल होने की पीडा बढती जाती है । इस पीड़ा की पूरी तीव्रता और गहराई का एहसास मुझे उस दिन हुआ जब सडक पर चलती हुई एक अनजान अबोध तेरह-चौदह वर्षीय लडकी ने, जो बहुत देर से मेरी पत्नी के पीछे-पीछे चलती आ रही थी, मेरी पत्नी से अनुरोध किया, 'क्या मैं आपके हाथों को छू सकती हूँ ?'

भारतीय हाथों को बडी उत्कंठा से स्पर्श कर लेने के बाद आत्मविभोर होकर उसने जो वाक्य कहे वे और भी अधिक मर्मस्पर्शी थे– मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मै एक भारतीय को स्पर्श कर रही हूँ । मैंने भारत के बारे में इतना सुना है और फ़िल्मों में भी भारतीयों को देखा है, लेकिन उन्हे अपने निकट प्रत्यक्ष देखने और छूने की मेरी अभिलाषा आज पूरी हुई । सचमुच, रोमानियन मानस में कहाँ पूर्व ख़त्म होता है और कहाँ पश्चिम शुरू, यह बताना कठिन है ।

रोमानिया में भारतीयों की संख्या बहुत कम है । स्थाई रूप से प्रवास करने वालों में केवल एक महिला है डा. अमिता बोस, जो बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय मे बंगला और संस्कृत पढ़ाती है । बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में एक भारतीय विजिटिंग प्रोफ़ेसर दो-चार वर्षों के लिए नियुक्त होकर आता है । यह क्रम 1971 से चल रहा है और अब तक लगभग 6 भारतीय प्रोफ़ेसर हिन्दी तथा भारत-विद्या के अध्यापन के लिए यहाँ आ चुके हैं । कभी-कभी कुछ भारतीय छात्र पेट्रोलियम आदि विषयों पर उच्च अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं । इनके अलावा भारतीय राजदूतावास के कुछ सदस्य रोमानिया मे हमेशा होते हैं । बीच-बीच में कुछ भारतीय व्यापारी, सरकारी अधिकारी, शिष्टमंडल के सदस्य तथा पर्यटक

रोमानिया मे आते रहते हैं ।

कहना न होगा, भारतीयों की इतनी कम संख्या के कारण एक आम रोमानियन को भारतीयों के संपर्क में आने का बहुत कम अवसर मिल पाता है, लेकिन अधूरी या विकलांग जानकारी ही सही, भारत के बारे में एक आम रोमानियन के मन में कोई न कोई धारणा ज़रूर है । अख़बारों मे तो भारत का नाम सामान्यत: तभी आता है जब कि चुनाव, बाढ, सूखा या मारकाट आदि की घटनाएँ हों । फ़िल्मों में वे भारत की अलौकिक तस्वीर देखते हैं । इतिहास की पुस्तकों में वे भारत को विश्व की एक प्राचीनतम सभ्यता की जन्मभूमि के रूप में पढ़ते हैं ।

भारत को 'योगा' की भी जन्मभूमि माना जाता है । योग का अभ्यास शारीरिक उपचार के लिए भी किया जाता है और ब्रह्म साधना के लिए भी । रोमानिया में योग का अभ्यास शारीरिक उपचार तथा व्यायाम के रूप में ही किया जाता है, साधना के रूप में नहीं । वस्तुत: साधना या धार्मिक प्रयोजन के लिए योग के अभ्यास पर यहाँ प्रतिबंध भी है । यहाँ इसका स्थान लगभग वैसा ही है जैसा जापानी कराटे का ।

यहाँ कुछ लोग ऐसे भी मिल जाएँगे जो भारत को साधुओं और सिद्धो का देश समझते हैं, जहाँ हर व्यक्ति योग में निपुण है या कुछ दैवी गुण लिए हुए है । यह कल्पना आदमी को कहाँ तक हास्यास्पद बना देती है, इसका ज्ञान मुझे एक अद्भुत ढंग से हुआ ।

एक प्रसिद्ध चित्रकार की विधवा पत्नी ने एक बार मुझे बडे आदरभाव से अपने घर मे आमंत्रित किया और एक अनुरोध मेरे सामने रखा, 'मैंने सुना है कि भारत के लोग सिद्ध महात्मा होते हैं जो तंत्र-विद्या के ज़ोर से अकाल मौत मरे व्यक्ति को फिर से जीवित कर सकते हैं । मेरे पति की मृत्यु डाक्टर की गलती से कुछ मास पहले हो गई थी । क्या आप उन्हें ज़िन्दा कर सकते हैं ?'

मेरे यह समझाने पर कि ऐसा किसी भी हालत में संभव नहीं, उसका चेहरा अचानक मुरझा गया और आँखों से आँसू बहने लगे ।

भारत प्रेमियों की टोली

इस छोटे-से देश में ऐसे भी कई लगन के धुनी आपको मिल जाएँगे जो आपको अपने घर पर आमंत्रित कर, भारत-विद्या पर लिखी पुस्तकों का

विशाल संग्रह दिखा आपको आश्चर्य में डाल देंगे । इन पुस्तकों का महत्व इस देश में इस लिए भी है कि यहाँ भारत के संबंध में पुस्तकें सरलता से उपलब्ध नहीं होतीं और भारत या विदेशों से पुस्तक मँगाने की सुविधा विदेशी मुद्रा तथा कुछ अन्य कठिनाईयों के कारण सरल नहीं । भारतीय अध्ययन संस्कृति, इतिहास साहित्य आदि से संबंधित जो भी पुस्तकें इनके पास हैं वो अधिकांशत: इनके विदेशी मित्रों के सौजन्य से विदेशों से ख़रीदी गई है या उपहार स्वरूप प्राप्त हैं । जो चीज जितनी दुर्लभ होती है वह उतनी ही कीमती होती है । भारत के प्रति यह ललक भारत-विद्या पर काम करने वाले विशेषज्ञों तक ही सीमित हो, यह बात नहीं । आपको सामान्य जनसमूह में से भी ऐसे अनेक इजीनियर, डाक्टर, अध्यापक, लिपिक सेल्समैन लिफ़्टमैन, आदि मिल जाएँगे जो अपनी इच्छा से भारतीय संस्कृति साहित्य तथा कला का अध्ययन करना चाहते है ।

चित्र 9 : भारतीय संस्कृति, सगीत तथा हिंदी भाषा के प्रेमी युवा-युवतियो तथा छात्र- छात्राएँ

यादो का झरोखा खोलने पर मेरी आँखो के सामने इन भारत-विद्या प्रेमियो की एक लंबी पंक्ति खड़ी हो जाती है, जिनके निश्छल भारत-प्रेम की गहराई को कागज पर उतार पाना संभव नहीं । एक चेहरा जो अपनी

विचित्रता, फक्कड़पन और दीवानगी के कारण सबसे अलग उभरता है वह है निकोलाई कोस्तेल का । व्यवसाय से वितरण कार्यालय का एक कर्मचारी, लेकिन संस्कृत, भारतीय दर्शन, तिब्बती साहित्य तथा बौद्ध दर्शन का इतना प्रेमी कि उसने अपने जीवन की सारी कमाई इन पुस्तकों की ख़रीद में होम कर दी । हर बार जब फ़ोन करता तो यही कहता कि मै एक ज़बरदस्त ख़ुशख़बरी लेकर आ रहा हूँ । यह ख़ुशखबरी होती कि देखिए, आज भारतीय दर्शन, संस्कृति या तिब्बती साहित्य पर मेरी इतनी किताबें आ गई हैं । नया खिलौना मिलने पर जैसे बालक का मन नाच उठता है वैसा ही नाच मैं उनके मन के भीतर देखता था । हम भी इस आगन्तुक को हर बार घर में बने भारतीय रसगुल्ले से पुरस्कृत करते, जो उसकी दूसरी कमजोरी थी । फिर वह एक भारतीय अगरबत्ती जलाने को कहता और स्वयं डैक के पास जाकर रवि शंकर का रिकार्ड लगाता और फिर उसके झूमने का सारा वातावरण तैयार हो जाता ।

जैसे ही कुछ जिज्ञासुओं को पता चला कि बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में भारतीय प्रोफेसर आ चुके हैं, वैसे ही रोमानिया के एक प्रमुख शहर क्लुज-नापोका से अचानक एक युवक मेरे पास आया और मुझे अपनी कुछ कापियाँ दिखाई जिनमें उसने बड़े ही सुंदर अक्षरों में **गीता** के श्लोक और उनके हिन्दी अनुवाद की नकल की थी । वह ठीक तरह हिन्दी नहीं बोल पाता था लेकिन उसे लिखित हिन्दी का थोड़ा-बहुत ज्ञान था । उसने बताया कि उसका नाम दनिल इकः है, एक होटल में लिफ्टमैन है । और खाली समय में वह घर में नियमित रूप से हिन्दी का अध्ययन करता है । मुझसे भी कुछ हिन्दी की किताबें ले गया । कुछ महीने के बाद वह फिर मेरे पास आया और कहने लगा, 'मैं प्रेमचद की कहानियों का रोमानियन भाषा में अनुवाद करना चाहता हूँ । क्या आप मुझे प्रेमचंद की कुछ कहानियाँ दिलवा सकते हैं ?' मैंने पुस्तकालय से **मानसरोवर** के दो खंड उसे दिलवा दिए, यद्यपि मैं जानता था कि साहित्यिक अनुवाद जैसा जटिल काम अकेले उसके बस का नहीं है । फिर भी उसे हतोत्साहित नही करना चाहता था ।

लगभग एक वर्ष बाद अचानक फिर वह मेरे पास आया और प्रेमचंद की सात कहानियों का रोमानियन अनुवाद उसने मेरे सामने रख दिया जिनमें से एक

अनुवाद तो एक पत्रिका में भी प्रकाशित हो चुका था । मेरी ख़ुशी और आश्चर्य का ठिकाना न था । अनुवाद को मैंने बारीकी से देखा तो मेरी ख़ुशी दुगुनी हो गई—मूल अर्थ की अभिव्यक्ति मे कहीं कोई गलती नहीं थी, केवल कुछ स्थल उसने पूछने के लिए छोड रखे थे । पूछने पर उसने बताया कि उसने उसके लिए हिन्दी उर्दू, अरबी तथा रोमानियन के कोशों की सहायता ली तथा भारतीय संस्कृति पर उसने कुछ किताबें भी पढीं । अंग्रेजी उसे बिलकुल नहीं आती थी और न ही उसके शहर मे कोई हिन्दी भाषी उसकी सहायता के लिए मौजूद था । इसी बीच उसने '**आजकल**' पत्रिका में प्रकाशित एक हिन्दी कहानी (जो पंजाबी से हिन्दी मे अनूदित थी) का रोमानियन अनुवाद भी एक पत्रिका में प्रकाशित करवा लिया था। 1983 तक उसने प्रेमचद की 17 कहानियों का अनुवाद पूरा कर लिया था जिसके प्रकाशन के लिए एक रोमानियन प्रकाशन संस्था भारत से कापीराइट प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी ।

एक अन्य भारतीय विद्या-प्रेमी स्तेरियान कोर्नेल ने जो एक प्रतिभाशाली
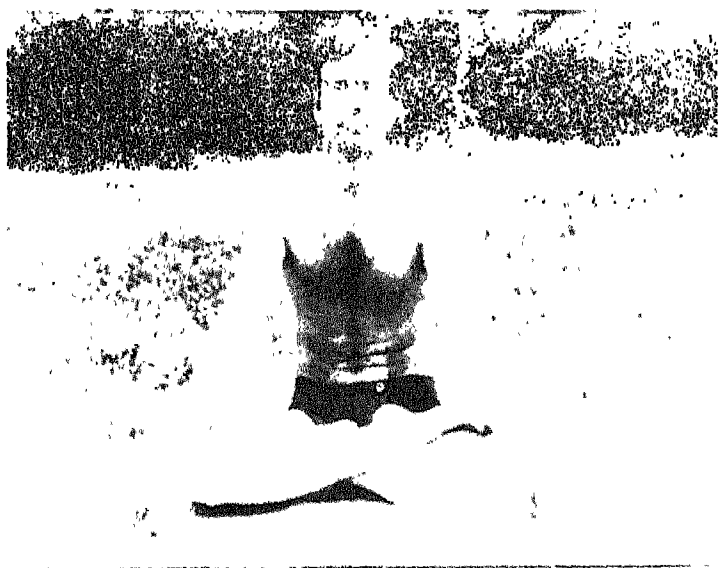
चित्र 10 : शारीरिक उपचार के लिए योगाभ्यास भारत-विद्या प्रेमी इंजीनियर स्तेरियान **कोर्नेल** ।

इर्जीनियर है एक दिन अपना यह निर्णय घोषित किया कि वे हिन्दी की विज्ञान-कथाओं का रोमानियन मे अनुवाद करेंगे । मुझसे थोडी बहुत सहायता लेकर इस धुनी इंजीनियर ने धर्मयुग मे प्रकाशित डॉ जयन्त नार्लीकर की दो कहानियों (**धूमकेतु** और **अक्ष**) का रोमानियन अनुवाद किया जो 1985 में वहाँ की प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिकाओ में प्रकाशित हुई ।

इस देश मे भारत-प्रेम केवल साहित्य और चिंतन तक ही सीमित हो ऐसा नहीं । भारत-प्रेम का हर व्यक्ति का अंदाज अलग है । कोई भारतीय पोशाक का 'फैन' है, कोई भारतीय खाने का । किसी पर भारतीय सगीत का जादू हावी है तो किसी पर भारतीय फ़िल्म का ।

. रोमानिया की कई किशोरियों तथा युवतियों के मन में भारतीय साडी पहनने, माथे पर बिंदी लगाने तथा 'भारतीय दिखाई देने' की बडी चाह है । कइयों के पास एक-दो सेट साडियों का है जिनके पास नहीं है, वे खोज़ में रहती हैं । एक लडकी का कहना है कि अपना शौक पूरा करने के लिए वह और उसकी सहेली कभी-कभी किसी दूसरे शहर में साड़ियाँ पहनकर सड़कों तथा बाजारों में निकल पड़ती हैं जहाँ भारतीय होने का नाटक करते हुए वे हिन्दी के कुछ रटे-रटाए वाक्य आपस में बोलती जाती हैं जिन्हें वहाँ समझने वाला कोई नहीं होता । लोगों की निगाहों का केन्द्र बनने का इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता है? भारतीय समारोहों और पार्टियो में साड़ी-ब्लाउज में सज़ी-धजी दो-चार रोमानियन युवतियों के दर्शन हो जाना आम बात है ।

एक साहसी लड़की ने तो अपनी भारतीय आकृति को पूर्ण करने के लिए, हमारे बहुत मना करने पर भी, सुई से अपने-आप नाक छेद ली । फिर हमसे नाक की लौंग माँग कर उसे पहनना शुरू कर दिया । उसके निश्छल अबोध चेहरे तथा हावभाव से झलकती भारतीयता उसे कई चेहरों से अलग कर देती थी । संयोग से एक पार्टी में एक दिन इस 'अलग-से' चेहरे ने अचानक एक कुँआरे चेक युवक के दिल में हलचल पैदा कर दी । मुझसे उसका नाम पता पूछते हुए उस युवक ने एक स्वीकारोक्ति की, 'मैं अपने जीवन में कई लड़कियों से मिला हूँ, लेकिन पता नहीं क्यों, इस लडकी के चेहरे में ऐसी कौन-सी चीज़ है जो मुझे आकृष्ट किए जा रही है । मैं इससे शादी करने को तैयार हूँ बशर्ते कि वह राज़ी हो ।' लेकिन इस

रोमानियन बालिका की कल्पना में तो एक भारतीय पति की तस्वीर थी चेक की नहीं ।

भारतीय चिंतन की छाया

भारत के प्राचीन ज्ञानभंडार को भारत की चहारदीवारी से निकालकर पश्चिमी जगत के सामने रखने का श्रेय पश्चिमी विद्वानों को ही है । प्रसिद्द अंग्रेज़ विद्वान विलियम जोन्स (1746-1796) ने संस्कृत का अध्ययन किया और संस्कृत ग्रंथों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया । उन्होंने सन् 1776 ई. में बंगाल में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ इन्डिया' की स्थापना की जिसका एक उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रंथो पर खोज-कार्य कर विश्व में उसका प्रसार करना था ।

उधर जर्मनी में फ्रेडरिख़ वान श्लेगल (1772-1829), उनके भाई अडोल्फ डब्ल्यू श्लेगल (1767-1845), विल्हेम फॉन हाम्बोल्ट (1767-1835) आदि कुछ विद्वानों ने न केवल संस्कृत का अध्ययन किया बल्कि संस्कृत साहित्य में छिपी हज़ारों वर्ष पुरानी सभ्यता और संस्कृति को विश्व रंगमंच पर लाकर खड़ा कर दिया । इन सबमें सबसे महत्त्व-पूर्ण योगदान था फ्रेडरिख़ मैक्समूलर (1823-1900) का । उन्होंने **पूरब की पवित्र पुस्तकें** नाम से एक पुस्तकमाला शुरू की जिसके अंतर्गत उन्होंने संस्कृत की 50 पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित किया । इन पुस्तकों ने दुनिया के विद्वानों मे एक धूम-सी मचा दी । जर्मनी के महान कवि गेटे के बारे में तो प्रसिद्ध ही है कि जब उन्होंने पहली बार कालिदास का नाटक **अभिज्ञान शाकुंतलम्** पढा तो वे खुशी से नाच उठे ।

इसी प्रकार की लहर अमेरिका और फ्रांस में भी उठी । अमेरिका के विलियम डी. व्हिटनी (1827-1894) ने सन् 1879 ई. मे संस्कृत का व्याकरण लिख कर अपने देश में संस्कृत को पूर्णत: प्रतिष्ठित कर दिया । वैसे इससे पहले येल विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर वुडवर्ड एल्ब्रिज से सेलिम्बरी वहाँ संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन का श्रीगणेश कर चुके थे । उधर फ्रांस में भी प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ सिलवें लेवी, लुई रनु और जी. फ़िल्योजा के प्रयासों से संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन शुरू हो चुका था ।

कोई आश्चर्य नही कि भारत-विद्या और सस्कृत की यह लहर रोमानिया के तटों तक भी पहुँच गई । इसका प्रमाण वह रोमानियन कवि सौ साल पहले ही दे चुका था जिसकी पंक्तियाँ हर रोमानियन के लिए आज ब्रह्म वाक्य हैं और जिन्हें एयरपोर्ट के पोर्टर से लेकर बडे से बडा राजनीतिज्ञ भी इस तरह दनदनाते हुए उगल जाता है जैसे भारत में परीक्षा से पहले छात्र उद्धरण देने के लिए कविताओं की पंक्तियाँ रट लेते हैं । इस महान कवि मिहाई एमिनेस्कु (1850-1889) ने वियाना और बर्लिन में संस्कृत का अध्ययन किया जहाँ पहली बार उनका साक्षात्कार **ऋग्वेद, उपनिषद्** व **बौद्ध ग्रंथों** से हुआ । फलतः उनकी कविताओं में जगह-जगह भारतीय चिंतन और रहस्यमयता के दर्शन होते हैं । कौन कह सकता है कि ये पंक्तियाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर या जयशंकर प्रसाद की नहीं, एमिनेस्कु की है :

तेरा समस्त जीवन लगता बस एक क्षण
एक मधुर क्षण लगता अनंत काल ।

जब अव्यक्त था तब असत् था
यद्यपि प्रत्येक सत् इसमें निहित था
जब तम से तम लिपटा हुआ था
क्या वह गह्वर था, गुफ़ा थी,
जल का अनंत विस्तार था ?

समस्त जगत एक स्थगित क्षण,
काल आए काल उड़ जाए ।

प्रिये, काल-लहरी से ऊपर उठती तुम,
उठते लंबे केश तुम्हारे,
संगमरमरी मृदु बाहें तुम्हारी ।

एमिनेस्कु रोमानिया के राष्ट्रकवि हैं और पूरी तरह लोगो के दिल और दिमाग पर छाए हुए हैं । बंगला जगत में जो स्थान रवीन्द्रनाथ टैगोर का है और अंग्रेजी में शेक्सपियर का, रोमानिया में वही स्थान मिहाई एमिनेस्कु का है । ऐमिनेस्कु ने 40 वर्ष के अपने संक्षिप्त जीवन-काल में सस्कृत-

रोमानियन शब्दकोश और संस्कृत व्याकरण पर रोमानियन में पुस्तक भी लिखने का प्रयास किया जो अधूरा ही रहा। बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय की बंगला और संस्कृत की प्राध्यापिका डॉ. अमिता बोस ने इस अधूरे कार्य को एक निश्चित स्वरूप देकर प्रकाशित करवाया है।

चित्र 11 : रोमानियां के महाकवि मिहाई एमिनेस्कु (1850-89) जिनकी पंक्तियाँ हर रोमानियन की ज़ुबान पर रहती है।

भारतीय चिंतन की छाया एमिनेस्कु के बाद के कई रोमानियन कवियों, लेखकों और विचारकों में भी मिलती है। एमिनेस्कु के ही काल के एक अन्य कवि लुच्यान ब्लागा की कुछ पंक्तियाँ देखिए :

मैंने पलकों की छाँव किसी चेहरे पर पानी चाही है
मैंने यह छाँव पूरब पश्चिम
दोनों के परी-लोकों के भूगोल में ढूँढ़ी है,
पर मुझे यह छाँव कभी नहीं मिली
कभी नहीं मिली ।

सुप्रसिद्ध रोमानियन महाकवि, कोश्बुक (1866-1918) ने **अभिज्ञान शाकुंतलम**, **ऋग्वेद** और **महाभारत** के कुछ खंडों का रोमानियन में अनुवाद किया । प्रसिद्ध रोमानियन भाषावैज्ञानिक ब.प. हश्देउ (1838-1907) ने संस्कृत भाषा के संदर्भ में रोमानियन आदि भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया ।

बीसवीं सदी के कई रोमानियन कवि, लेखक और दार्शनिक भी भारतीय चिंतन से बहुत प्रभावित हुए, जिनमें प्रमुख हैं कवि लुच्यान ब्लागा और इयोन पिलात, चिंतक तथा विद्वान मिर्च्या एलियादे, उपन्यासकार लिविउ रेब्यानु आदि ।

सन् 1926 में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर रोमानिया की यात्रा पर आए जिसे रोमानिया के लोग आज भी बडे स्नेह से याद करते हैं। इसके बाद रोमानिया और भारत के बीच साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंध और घनिष्ठ हो गए ।

भारत-विद्या के प्रेमियो में आज का सबसे बडा नाम सर्ज्यु-अल जार्जे का है जिन्होंने भारतीय दर्शन और चिंतन पर कई किताबें लिखी हैं । वे रोमानिया के पहले ऐसे संस्कृतज्ञ थे जिन्होंने **भगवद्गीता** का अनुवाद सीधे संस्कृत के माध्यम से किया, अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से नहीं । वे पाणिनि के अनन्य भक्त थे । उन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी यह स्थापित करने की कोशिश की कि भारतीय चिंतन परंपरा कई मामलों में यूनानी चिंतन परंपरा से आगे है ।

डॉ. जार्जे से मुझे बुखारेस्त में कई बार मिलने का मौका मिला । उनके अध्ययन-कक्ष को देखकर कौन कह सकता था कि यह किसी भारतीय का मकान नहीं है—चारों ओर भारतीय या भारत पर लिखी पुस्तकें, भारतीय मूर्तियाँ, भारतीय वस्त्र, भारतीय उपहार और इनसे जुड़े भारत के अनगिनत संस्मरण और स्मृतियाँ । सचमुच भारत के प्रति उनका अनुराग और मोह अविश्वसनीय-सा था । उनकी अंतिम अभिलाषा एक बार फिर भारत जाने की थी जो कई बाधाओं के बावजूद अंततः सफल हुई और वे विश्व संस्कृत सम्मेलन में भाग लेने के लिए सन् 1982 ई. मे भारत आए । संयोग कहिए या दुर्भाग्य, भारत से लौटने के पाँचवे दिन ही उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया, मानो चिरमनोकामना पूरी होने के बाद अब शरीर की भूमिका

समाप्त हो गई हो । उनकी मृत्यु के बाद उनके विशाल पुस्तक-संग्रह को खरीदने के लिए रोमानिया के भारत प्रेमियों में होड़-सी लग गई । उनकी विधवा पत्नी ने पुस्तकें बेचने से इंकार कर दिया । उनकी मृत्यु से कुछ माह पूर्व ही भारतीय चिंतन और दर्शन पर रोमानियन भाषा मे उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी ।

पाँचवाँ अध्याय

आवारा हूँ

कान्स्तांजा रोमानिया का सबसे बडा बंदरगाह है। कभी-कभी बाहर से आने वाले जहाज़ों पर काम करने वाले कुछ भारतीय यहाँ आते हैं। ऐसा ही एक भारतीय युवक जो कुछ दिनों के लिए यहाँ रुका था, एक दिन किसी काम से डाकघर गया। काउन्टर पर बैठी महिला से उसने टिकट माँगे। महिला को जब पता लगा कि वह भारतीय है तो उसने उसकी ओर गौर से देखा और कहा, 'आवारा हो ?' युवक हतप्रभ हो गया। महिला रोमानियन में कुछ गुनगुनाई और फिर ज़ोर से बोली, 'आवारा हो ?' वेगाबॉन्ड ?' युवक ने सहमे हुए कहा, 'नहीं, मैं आवारा नहीं हूँ। जहाज़ में काम करता हूँ।' महिला जोर से हँसी। अंग्रेजी जानने वाले एक कर्मचारी ने उसे फिर से स्पष्ट किया कि वह कह रही है 'आवारा हूँ।' वह जानना चाहती है तुमने 'आवारा' फिल्म देखी है।' युवक की जान में जान आई।

शायद आप जानते हैं, राजकपूर की 'आवारा' पहली भारतीय फ़िल्म थी जिसने रूस और पूर्वी यूरोप में लोकप्रियता के सारे कीर्तिमान तोड़ दिए थे। लोग आज इसे यहाँ एक दंतकथा के रूप में याद करते हैं। रूस में तो

इसके गानो तथा संवादो को भी रूसी भाषा में डब कर दिया गया है । इन देशों की अपनी फ़िल्मे अक्सर युद्ध या राष्ट्रीय विषयों को लेकर बनती हैं । ऐसी परपरागत फ़िल्मों के एक लंबे दौर के बाद अचानक जब झुमानेवाले संगीत और नृत्य के साथ एक सामाजिक भावनापूर्ण कहानी को लेकर बनी फ़िल्म 'आवारा' यहाँ आई तो जैसे ताजी हवा का एक झौंका इनके चित्रपट पर आया और देखते ही देखते 'आवारा' और 'राजकपूर' का नाम हर आम आदमी की जबान पर चढ गया । आज भी जब यह फ़िल्म बीच-बीच मे बुख़ारेस्त में दिखाई जाती है तो प्रायः एक विशालकाय स्टेडियम में इसका विशेष प्रदर्शन किया जाता है जहाँ लोगो की भीड की भीड जैसे किसी मेले में जा रही हो इसे देखने के लिए उमड़ पडती है ।

रोमानिया वर्ष में तीन-चार हिन्दी फ़िल्में भारत से खरीदता है जो अक्सर रोमानिया के सिनेमाघरो में सुपरहिट जाती है । हाल में बैठने की सीटों के भर जाने पर भी दीवाने दर्शकों की एक लंबी पंक्ति किनारे-किनारे खडे-खड़े ही फ़िल्म देखती रहती है । कई लोग तो गाने रिकार्ड करने के लिए अपने साथ कैसेट-रिकार्डर ले आते है । पर्दे पर फ़िल्मो के टाइटल्स नीचे रोमानियन में दिए जाते हैं ।

अमेरिकी तथा हिन्दी फ़िल्मे दोनों ही यहाँ काफ़ी लोकप्रिय हैं । हिन्दी फ़िल्मों के 'फ़ैन' का एक बहुत बडा वर्ग उन जिप्सी नागरिको का भी है जो अपने को अप्रत्यक्ष रूप से भारतवंशी मानते है और जो इन फिल्मों की तस्वीर में अपनी पुरानी खोई पहचान ढूँढते हैं । भारत की तरह यहाँ भी दर्शकों का एक वर्ग हिन्दी फ़िल्मों मे गाने, नृत्य भव्य सेट, सुंदर चेहरे तथा मनोरंजन ढूँढ़ता है । जो भारतीय फ़िल्में यहाँ अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं वे अधिकांशतः पारिवारिक तथा भावुकताप्रधान फ़िल्में हैं, जिन्हें कुछ शौकीन एक बार नहीं, बार-बार देखते हैं । कान्स्तांजा निवासी एक युवती कोर्नेलिया का कहना है कि उसने 'एक फूल दो माली' फ़िल्म बीस बार देखी है । कारण पूछने पर उसने बताया कि फ़िल्म को देखते-देखते जब उसकी आँखें तर हो जाती हैं तो उसका मन बहुत हल्का हो जाता है । उसने बताया 'मेरी माँ मुझे सुबह जल्दी उठाने के लिए रोज़ कैसेट-रिकार्डर पर हिन्दी गाने लगा देती है, क्योंकि वह जानती है, इसे सुनकर मैं सोई नहीं रह सकती ।'

रोमानिया के बॉक्स आफिस पर सुपरहिट होने वाली कुछ फ़िल्में हैः— **आवारा, श्री 420, एक फूल दो माली, आराधना, कटी पतंग, यादों की बारात, नूरी, मुक्ति** आदि । कुछ फिल्में कभी-कभी टेलिविजन पर भी दिखा दी जाती है । विशिष्ट दर्शकों के लिए समय-समय पर सत्यजीत राय तथा मृणाल सेन की कुछ फ़िल्में भी प्रदर्शित की जाती हैं ।

जिन लोगों के पास भारत के संबंध में जानकारी का कोई दूसरा साधन नहीं है उनके लिए हिन्दी फ़िल्में ही उनकी जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं । फलस्वरूप, सही या गलत, कुछ आम लोगों के मन में फ़िल्मों से उतारी गई भारत की एक खास छवि बन गई हैं—अपनी प्रेमिका के लिए जान की बाजी लगाने वाले सुंदर युवकों और हमेशा सजी-धजी रहने वाली सुंदर युवतियों का एक ऐसा काल्पनिक देश जहाँ भावुक युवक गीत गा-गाकर अपनी प्रेमिका या पत्नी को रिझाता है, एक ऐसा देश जहाँ लोगों के मकान फ़िल्मी सेटों की तरह भव्य होते हैं और जहाँ माँ और बहन की खातिर लोग हर तरह की कुर्बानी करते हैं ।

इन सब का एक अद्‌भुत नतीजा निकला है । किशोरियों की यहाँ एक ऐसी पूरी पंक्ति तैयार है जो हर कीमत पर एक भारतीय पति चाहती है । कारण ? भारतीय पति अधिक निष्ठावान होता है, तलाक का कोई भय नहीं। दुर्भाग्य यह कि भारतीय छात्र यहाँ बहुत कम हैं, लेकिन जो है, प्रायः खाली हाथ नहीं लौटते ।

मेघा छाए आधी रात

सुच्यावा रोमानिया का एक छोटा शहर है । एक दिन उधर से गुजर रहा था कि एक विज्ञापन देखकर बरबस पाँव रुक गए । लिखा था—MUSICA INDIAN DE SUNITA अर्थात आज शाम को लोकप्रिय गायिका मोनालीसा 'सुनीता' भारतीय संगीत प्रस्तुत करेंगी । रात वहीं ठहरने का प्रोग्राम बनाया और शाम के थिएटर का टिकट खरीद लिया ।

संपूर्ण कार्यक्रम दो भागों में था— आधा भाग भारतीय संगीत का और आधा रोमानियन रंगारंग कार्यक्रम, लेकिन हर दर्शक की ज़बान पर 'सुनीता' का नाम था, वही कार्यक्रम की स्टार थी और उसी के लिए हॉल खचाखच भरा था ।

आकर्षक साड़ी-ब्लाउज़ पहने, माथे पर बिंदी लगाए पूर्ण भारतीय वेशभूषा में, एक सुंदर रोमानियन लड़की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच स्टेज पर अवतरित होती है। एक व्यक्ति गायिका का परिचय देता है और गाए जाने वाले भारतीय गीत का केन्द्रीय भाव स्पष्ट करता है। माइक हाथ में लिए तथा फिल्मी नृत्य का हल्का सा अभिनय प्रस्तुत करते हुए मधुरकंठी गायिका गाना शुरू करती है — **मेघा छाए आधी रात, बैरन बन गई निंदिया** और हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है। फिर एक के बाद एक कई हिन्दी गाने उसकी मधुर आवाज़ में घुलकर हॉल में बहने लगते हैं — **रंगीला रे, तेरे रंग में यूं रंगा है मेरा मन, आएगा, आएगा, आने वाला आएगा, रात ढलने लगी, चाँद छुपने चला, आजाओ तड़पते हैं अरमाँ अब रात गुज़रने वाली है....**। कुछ गानों के साथ स्थानीय रोमानियन ऑरकेस्ट्रा है जो मूल गीत के पार्श्व संगीत की धुन पर बजता है।

चित्र 12 : हिंदी के फ़िल्मी गीत, गज़ल और डिस्को को रोमानियन स्टेज पर लोकप्रिय बनाने वाली प्रसिद्ध रोमानियन गायिका मोनालीष। 'सुनीता'।

कुछ गानों के साथ हिन्दी गानों के मूल रिकार्ड का संगीत स्पीकर से प्ले किया जाता है। आवाज़ में लता मंगेशकर की लोच की वही नकल और उच्चारण में एक-दो स्थल छोड़कर कहीं कोई गलती नहीं। यदि परिवेश का पता न हो तो यह बताना मुश्किल है कि गायिका भारतीय नहीं

है, विदेशी है । एक बिल्कुल अलग विदेशी भाषा के बोल तथा तर्ज पर अधिकार प्राप्त करने के लिए उसे कितना अभ्यास करना पड़ा होगा इसकी सहज कल्पना की जा सकती है ।

बाद में जब सुनीता से मुलाकात हुई तो उसने बताया कि वह रोमानियन है, उसका असली नाम 'मोनालीसा' है, वह हाईस्कूल की छात्रा है. आठ-दस साल की उम्र से ही हिन्दी फ़िल्मों को देखकर वह भारतीय संगीत के प्रति आकृष्ट हुई । भारतीय संगीत के प्रति उसकी आसक्ति इतनी अधिक थी कि सीखने का उपयुक्त साधन न होते हुए भी हिन्दी फ़िल्मी गीतों के कैसेटों या रिकार्डों को घंटों सुन-सुनकर उसने हिन्दी गानों का अभ्यास किया । धीरे-धीरे उसने हिन्दी के तीस-चालीस गाने सीख लिए और अब वह समय-समय पर अलग-अलग शहरों में हिन्दी गानों का 'स्टेज शो' देती है । यह पूछने पर कि क्या उसे हिन्दी आती है और इन गानों के अर्थ वह जानती है, उसने उत्तर दिया, 'नहीं, मुझे हिन्दी नहीं आती और न ही इन गानों के अर्थ मुझे आते हैं, लेकिन इन गानों के केन्द्रीय भावों को मैं समझती हूँ। मैं सचमुच हिन्दी सीखना चाहती हूँ । क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं ?' आज सुनीता न केवल हिन्दी गीत गा रही है बल्कि कई फ़िल्मी ग़ज़लें और हिन्दी डिस्को के गीत भी स्टेज पर प्रस्तुत कर रही है । हर कार्यक्रम के बाद उसका ऑटोग्राफ चाहने वालों की भीड़ उसे घेर लेती है ।

धीरे-धीरे पता लगा कि रोमानिया मे भारतीय गीत गाने वाली वह अकेली नही है, बल्कि पाँच-छः और भी गायिकाएँ है जो इसी प्रकार स्टेज पर हिन्दी गानो के कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं और शौकिया तौर पर गाने या सीखने वालों की सख्या तो गिनती से बाहर है ।

रोमानिया में हिन्दी गानों को स्टेज पर गाने की परंपरा नई नही है । हिन्दी गीत गाने वाली सर्वप्रथम रोमानियन गायिका थी 'नरगिता' । कहना न होगा इस रोमानियन लड़की ने अपना नाम नरगिस के नाम पर रखा था जिसका 'आवारा' में फ़िल्मी नाम 'रीता' था । नरगिता आज रोमानिया में एक 'स्टार' बन चुकी है जिसे लगभग हर रोमानियन हिन्दी गायिका के रूप में जानता है । (देखिए पारदर्शी 2)

कई वर्ष पूर्व एक बार जब पंडित जवाहरलाल नेहरु रोमानिया आए थे तो उनके सामने एक छोटी-सी रोमानियन बालिका ने मधुर कंठ से हिन्दी का एक गीत गाया था । उस समय इंदिरा जी भी साथ थीं । उन्होंने बालिका को भारत आने का निमंत्रण दिया । लड़की कुछ समय बाद भारत आई, हिन्दी भाषा और संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया, कुछ समय राजकपूर के कैंप में भी रही तथा हिन्दी फ़िल्मों में छोटी-मोटी भूमिकाएँ भी कीं । बाद में वह रोमानिया लौट गई जहाँ उसने व्यावसायिक रूप से स्टेज पर हिन्दी गानों का कार्यक्रम प्रस्तुत करना शुरू किया । उसने हिन्दी फ़िल्मी गीतों को अपने स्वर में, रोमानियन ऑरकेस्ट्रा के साथ गाकर दो डिस्क बनाए जो रोमानिया में हाथों-हाथ बिक गए और धीरे-धीरे 'नरगिता' रोमानिया के घरों का एक परिचित नाम हो गया । इतना ही नहीं, वह कभी-कभी अरब देशों के दौरे पर भी जाती है'जहाँ साड़ी पहनकर भारतीय वेशभूषा में वह स्टेज पर हिन्दी गानों के कार्यक्रम पेश करती है । सन 1981 मे जब श्रीमती इंदिरा गांधी रोमानिया आईं तो एक बार फिर उसने उनके सामने एक हिन्दी गीत प्रस्तुत किया । उम्र के साथ-साथ अब उसके कार्यक्रमों में कुछ कमी अवश्य आ गई है, लेकिन नए हिन्दी गानों का एक और डिस्क निकालने के लिए वह प्रयत्नशील है ।

नरगिता की सफलता ने कई और गायिकाओं को भारतीय संगीत की साधना के लिए प्रेरित किया । मोनालिसा भी उन्हीं में से एक है ।

एक अन्य गायिका जो अपनी असाधारण सुंदरता, मधुर आवाज़ और गायन-प्रतिभा के कारण लोकप्रिय हुई है वह है ओलिविया 'माया' । बुखारेस्त से 500 किलोमीटर दूर देवा नाम के एक छोटे शहर में रहने वाली भारतीय संगीत की वह साधिका तब मैट्रिक की छात्रा थी जब उसने सन् 1981 ई. में पहली बार स्टेज पर गाना शुरू किया । पहली बार जब वह मुझसे मिलने आई तो उसके हाथ में एक डायरीनुमा कापी थी जिसमें उसने हिन्दी के लगभग 100 फ़िल्मी गानों को रोमन लिपि में उतार रखा था जिनके अर्थ वह स्वयं नहीं जानती थी । इनमें से जब उसने एक के बाद एक हर गीत के बोल सही उच्चारण में और बिल्कुल सही तर्ज

में गाकर सुनाना शुरू किया तो विश्वास करना कठिन था कि इस बेमिसाल सुरीली आवाज़ की धनी यह लडकी रोमानियन है जिसे हिन्दी बिल्कुल नहीं आती और जिसने केवल कैसेट रिकार्डर या रेडियो के सहारे ही हिन्दी गाने सीखे हैं ।

कुछ दिनों बाद एक बार जब वह फिर बुख़ारेस्त आई तो उसकी आँखों में आँसू थे । वह बहुत हताश थी । उसे कार्यक्रमो में गाने का कहीं मौका नहीं मिल रहा था और उसके माता-पिता ने उसे गाने से मना कर दिया था । तरल नेत्रों को पोंछते हुए वह बोली, 'मुझे भारत की हर चीज से प्यार है । मैं भारतीय संगीत कैसे छोड दूँ जो आठ साल की उम्र से मेरे रोम-रोम में रम रहा है'। भारत के प्रति इसी आसक्ति को देखकर भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव श्री बालानंद ने, जो स्वयं भारतीय संस्कृति और कला में गहरी रुचि रखते थे उससे एक दिन पूछा, 'क्या तुम पूर्वजन्म में भारतीय थी ? उसने बडी गंभीरता से उत्तर दिया, 'हाँ, मैं पूर्वजन्म में भारतीय थी और दूसरे जन्म में भी भारतीय रहूँगी ।'

संयोग से उसे थोड़े दिनों बाद एक संगीत की टोली में गाने का मौका मिल गया । देखते ही देखते जगह-जगह से उसके हिन्दी गानों के कार्यक्रमों की माँग आने लगी और उसका नाम भी तारिकाओं में शामिल हो गया ।

भारत से आई एक शासकीय नृत्य मंडली में नर्तकी मालविका सरकार के साथ भी उसे हिन्दी गानों के अपने कार्यक्रम पेश करने का मौका मिला जिससे उसकी लोकप्रियता और अधिक बढ़ गई । लोग रोमानियन स्टेज पर

चित्र 13 : रोमानियन स्टेज़ की लोकप्रिय हिंदी गायिका ओलिविया 'माया' फूलो का उपहार ग्रहण करते हुए । साथ मे भारतीय नर्तकी मालविका सरकार (1985) ।

भारतीय नर्तकी की कला को देखकर जितने आह्लादित थे, उतने ही एक रोमानियन युवती की भारतीय गायन की प्रतिभा को देखकर आश्चर्यचकित थे।

9 अप्रैल 1983 की रात्रि को, जब मैं अगली सुबह रोमानिया से अलविदा लेने वाला था, अचानक देवा से उसका फोन आया। हड़बड़ाई हुई सी वह बोल रही थी, 'अपनी टोली के साथ कई शहरों-कस्बों में प्रोग्राम करके पंद्रह दिन बाद में अभी-अभी लौटी हूँ। घर आकर अभी पता चला कि आप कल सुबह भारत लौट रहे हैं। मैं अभी रात की ट्रेन से चलकर कल सुबह आपसे मिलने आ रही हूँ।' मैंने उसे मना किया कि इस थकी हालत में पाँच सौ किलोमीटर की दूरी तय करके आने की कोई ज़रूरत नहीं है, और फिर शायद सुबह उसके पहुँचने तक मै एयरपोर्ट निकल भी चुका होऊँ। उसने बड़े अधिकार से उत्तर दिया, 'नहीं प्रोफ़ेसर साहब ! मैं आऊँगी, जरूर आऊँगी'—और सुबह सात बजे, पिछले और अगले जन्म में भारत से रिश्ता जोड़ने वाली भारतीय संगीत की वह अनन्य साधिका एक भारतीय को अलविदा कहने के लिए मेरे दरवाज़े पर खडी थी।

एक अन्य शहर गालात्स में शौकिया तौर पर दो गायिकाएँ किरिला मार्लेना 'मालिनी' तथा मारिओरा क्रमशः सन् 1976-78 ई. तथा सन 1979-81 ई. के आसपास सार्वजनिक रूप से हिन्दी गानों के कार्यक्रम प्रस्तुत करती रहीं। मार्लेना के कुछ कार्यक्रम टेलिविजन से भी प्रसारित हुए। सन् 1978-81 ई. के बीच कान्स्ताजा से कोर्नेलिया ने हिन्दी गानों के कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। शादी के बाद अब तीनों ने सार्वजिनक कार्यक्रम करने बंद कर दिए हैं।

26 जनवरी के दिन बुख़ारेस्त के खचाखच भरे एक हॉल में एक मादक आवाज का आलाप छिड़ा :

गीत कितने गा चुकी हूँ इस सुखी जग के लिए,
आज रोने दो मुझे पल एक अपने के लिए।

श्रोताओं की भीड़ स्तब्ध थी—भारतीय राजनायिकों की टोली को विश्वास नहीं हो रहा था कि यह आवाज़ रोमानियन है, भारतीय नहीं। माथे पर बिंदी लगाए, ऊँचा जूड़ा बनाए साड़ी में लिपटी उस गौरवर्णा अप्सरा को कौन भारतीय न कहता? यह बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग
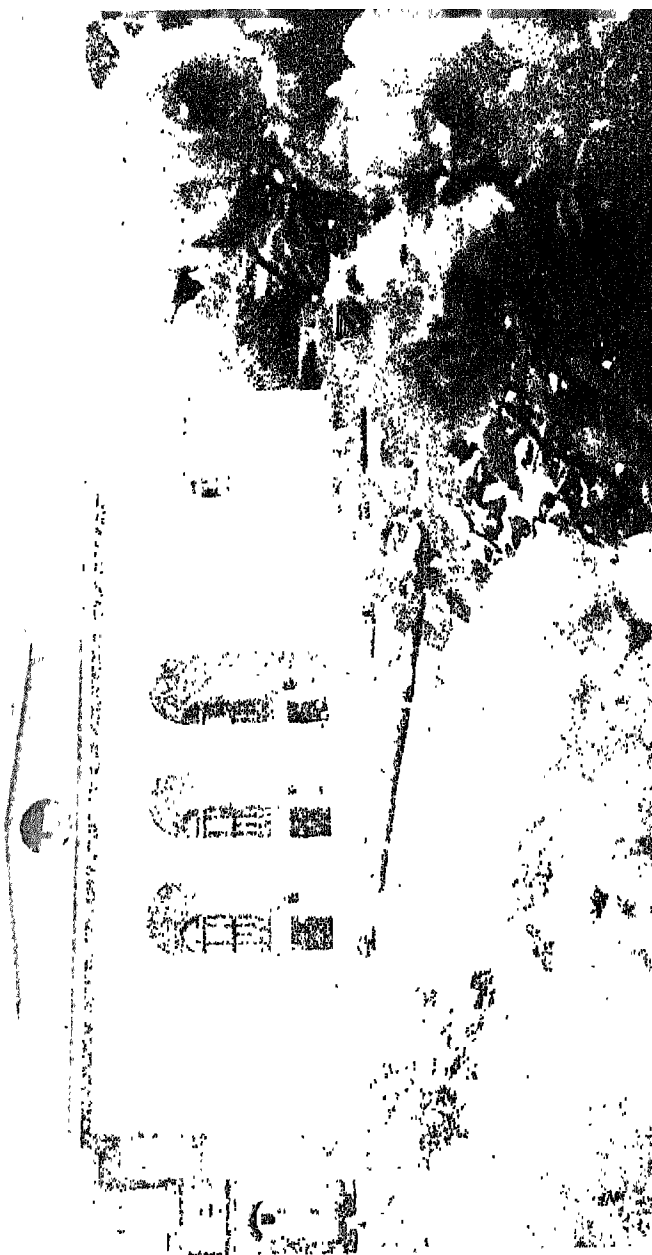
पारदर्शी 1: वसंत का आह्वान मिलते ही बुख़ारेस्त शहर में प्रकृति और बागवानी विभाग के बीच फूलों की होड़ लग जाती है। (देखिए पृष्ठ 8)
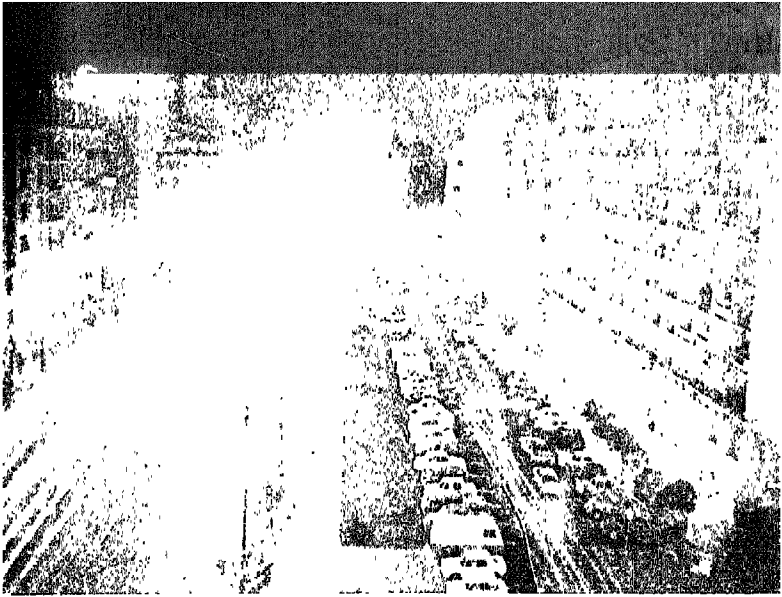
▲ पारदर्शी 3: सफ़र — अनजान मंजिल की ओर। (देखिए पृष्ठ 70)

◀ पारदर्शी 2: हिंदी की सर्वप्रथम लोकप्रिय गायिका 'नरगिता' जिसके हिंदी गानों के डिस्क हाथो-हाथ बिक जाते हैं। (देखिए पृष्ठ53)

▼ पारदर्शी 4: एक ओर सत्रह मजिला होटल इन्टरकान्टिनेन्टल और दूसरी और बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय को जोड़ने वाली मशहूर सडक जो बुख़ारेस्त यातायात का केन्द्र है। (देखिए पृष्ठ 73)
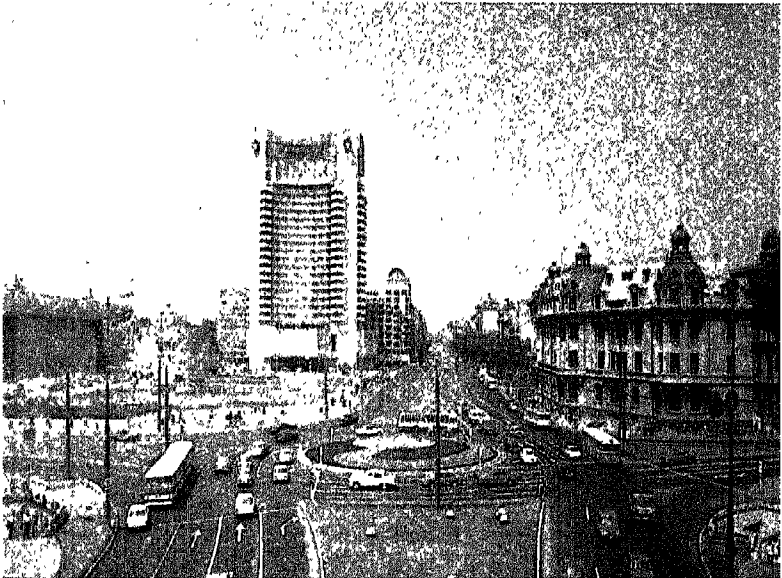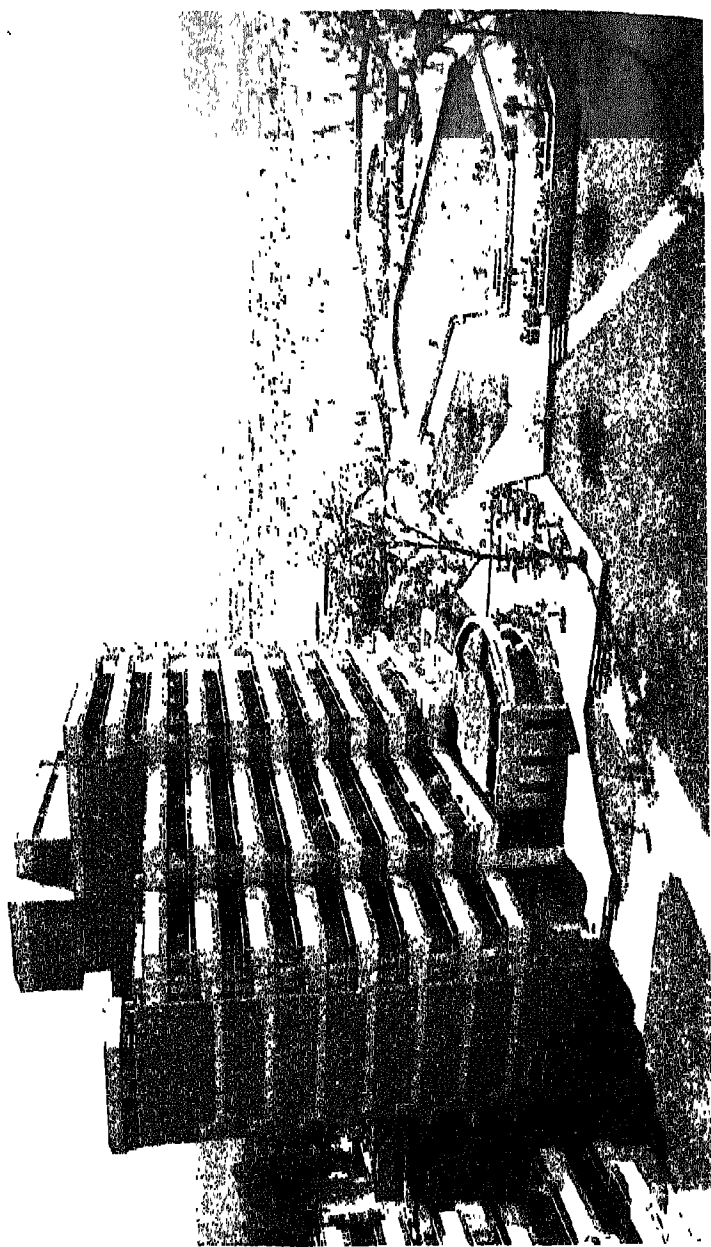
पारदर्शी 5: ममाइया समुद्र-तट पर ऐशोआराम के लिए बना सेवाय होटल। (देखिए पृष्ठ 118)।

द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम था और लड़की थी विश्वविद्यालय की छात्रा कुमारी डॉली। कार्यक्रम के अंत में एक सम्मोहित रोमानियन युवक ने, नाटकीय-सी स्थिति पैदा करते हुए, उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा। कहना न होगा, आज वे दोनों पति-पत्नी हैं। कहते हैं न, शादी की जोडी स्वर्ग में तय होती है।

छठा अध्याय
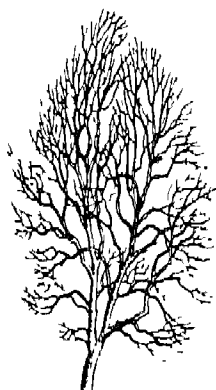
पढ़ाई और पढ़ाई

आइए, थोड़ी देर रोमानियन स्कूल हो आएँ । सामने जो एक बड़ा-सा भवन दिखाई दे रहा है वह यहाँ का हाई स्कूल है जिसे यहाँ लिचेउल' कहते हैं । सुबह के आठ बजने वाले हैं । कक्षाएँ शुरू होने का घंटा बजने वाला है । लड़के-लड़कियाँ कधे पर स्कूली बस्ता लटकाए हँसते-खेलते स्कूल की तरफ बढ़ रहे हैं ।

नेवी-ब्लू रंग का कोट-पैन्ट, बंद गोल कालर, गले में पीले बार्डरवाला लाल स्कार्फ—यह इनकी सर्दी की यूनिफार्म है । लड़कियों के लिए नीला स्वेटर और चेकदार स्कर्ट । यही यूनिफार्म, यही चित्र सारे देश के स्कूली छात्र-छात्राओं का है । भारत की तरह अलग-अलग स्कूलों की अलग-अलग यूनिफार्म यहाँ नहीं हैं । इस यूनिफार्म में टाई की जगह जो स्कार्फ़ दिख रहा है उसका एक खास महत्व है । यह इस बात का प्रतीक है कि छात्र ने अपने देश की सेवा करने की शपथ ली है । हर छात्र को पाँचवी कक्षा मे आने के बाद यह शपथ लेनी पडती है और इसके बाद उसे 'पाइनियर' (Pioneer) की पदवी मिलती है । पाइनियर बनने के बाद उसे कुछ सुविधाएँ मिलती हैं और वह राष्ट्रीय समारोहों और कार्यक्रमों में भाग लेने का अधिकारी बन जाता है ।
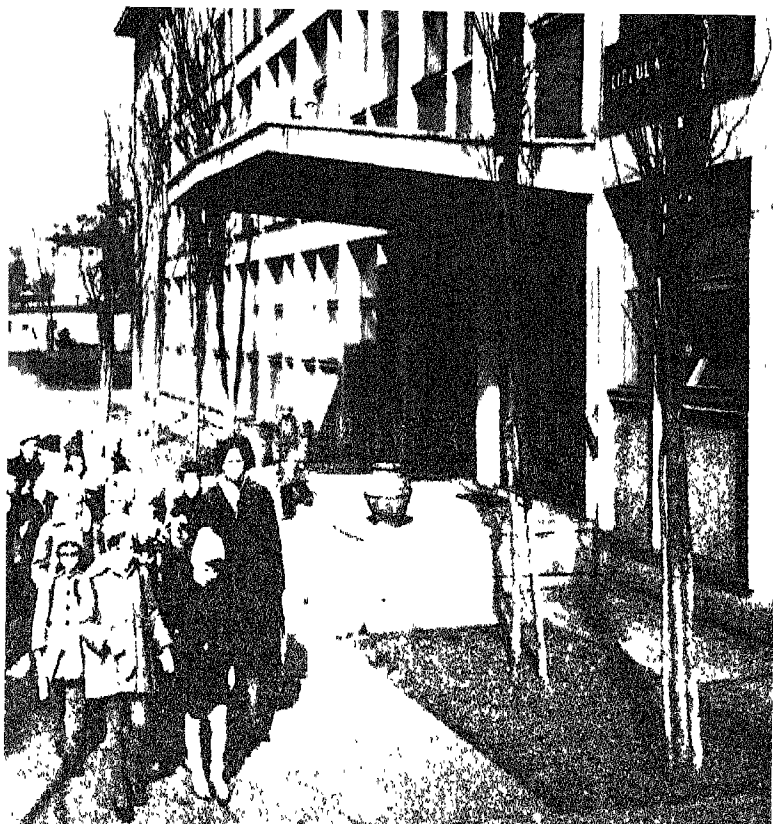
चित्र 14 : घंटा बजने का इंतजार है एक रोमानियन हाई स्कूल । भवन के सामने से गुजरते स्कूली बच्चे अपनी परिचारिका के साथ ।

आप देख रहे है कि इस स्कूल में सभी छात्र पैदल आ रहे है । रोमानिया का स्कूली छात्र अक्सर पैदल ही स्कूल आता है, क्योंकि वह अपने क्षेत्र के निकटतम स्कूल मे पढता है । भारत की तरह अच्छे स्कूल के शौक में उसे मीलों दूर का सफ़र नहीं तय करना पड़ता और न ही स्कूल की बस का इंतज़ार करना पड़ता है । उसे अनिवार्यत: उसी स्कूल में भर्ती होना होता है जो उसके घर से सबसे नज़दीक है । यहाँ सभी स्कूल सरकारी है, सभी का पाठ्यक्रम और स्तर समान है, पूरी शिक्षा मुफ़्त है इसलिए स्कूल छाँटने की जरूरत ही नहीं ।

शायद आपको यह जानने की इच्छा हो रही हो कि रोमानिया के स्कूलों का दैनिक कार्यक्रम कहाँ तक भारतीय स्कूलों के दैनिक कार्यक्रम से अलग है और कहाँ तक समान है । रोमानिया के स्कूलों का समय सामान्यत:

सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक होता है और जहाँ डबल शिफ़्ट में कक्षाएँ लगती है वहाँ एक बजे से दूसरे शिफ़्ट की कक्षाएँ शुरू होती हैं।

हमारे स्कूलों में प्राय: कक्षा शुरू होने से पहले सभी छात्र एक स्थान पर एकत्र होकर सामूहिक प्रार्थना करते हैं। रोमानिया के स्कूलों में ऐसा नहीं होता। यहाँ स्कूल शुरू होते ही छात्र सीधे कक्षाओं में जाते हैं। प्रार्थना भगवान के प्रति होती है, लेकिन, जैसा कि आपने पहले पढा, रोमानिया में धर्म को सरकार की ओर से स्वीकृति नहीं प्राप्त है और न ही भगवान की कल्पना या पूजा को सरकार प्रोत्साहित करती है। इसीलिए सामूहिक प्रार्थना की परंपरा आज रोमानिया के स्कूलों में नहीं है। कह नहीं सकते बहुत पहले ऐसा होता था या नहीं।

आप देख रहे हैं कमरे में घुसते ही छात्रों ने अपना कोट उतारना शुरू कर दिया। रोमानिया के स्कूलों में सीट पर बैठने से पहले कोट तथा टोपी उतारना हर छात्र के लिए अनिवार्य है। सो सभी छात्र अपने कोट ओवरकोट और टोपी उतारकर कमरे की दीवार के चारों ओर लगी खूटियो में टाँग देते हैं। सभी छात्र अब कमीज़ पहने बैठे हैं। चौथी कक्षा तक के छात्रों को हरे चेक की कमीज़ और इससे ऊपर की कक्षाओ के छात्रों को नीली कमीज पहननी होती है। कमरों को गरम करने के लिए गरम पानी के पाइपों के हीटर लगे होते हैं जिससे कड़ी से कड़ी सर्दी में भी आप कमीज पहनकर रह सकते हैं।

अभी अध्यापक कक्षा में पहुँचे नहीं हैं। सो चारों ओर से खुसर-पुसर की आवाज़ आ रही है। मौका मिलते ही बातें करना, अध्यापक के न होने पर शोर मचाना या छोटी-मोटी शरारत करना तो सभी बच्चों के खून में मिला रहता है। रोमानिया के छात्र भी इसके अपवाद नहीं हैं। इन सबके होते हुए भी अनुशासन के प्रति गहरी निष्ठा इनकी सबसे बडी ख़ूबी है। अनुशासन से ही स्वयं कई गुण अपने आप आ जाते हैं। अध्यापकों के प्रति आदर व सम्मान का भाव भी इसी मे शामिल है।

लीजिए, घंटा बज गया। सभी छात्र अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। अध्यापक के कमरे में घुसते ही शोरगुल का वातावरण एकदम शांत हो गया। फिर एक साथ 'बुन: दिमिन्यात्सा' (गुड मॉर्निंग) की आवाज़ से सारा कमरा गूँज गया। कुछ छात्र अपनी अध्यापिका के लिए फूलों के

उपहार लाए हैं । अध्यापिका ने धन्यवाद देते हुए फूलों को अपनी मेज़ पर रख लिया ।

हमारे स्कूलों में एक पीरियड 35-40 मिनट का होता है, लेकिन यहाँ हर पीरियड लगभग एक घंटे का होता है और हर पीरियड के बाद पाँच मिनट का विश्राम होता है । बीच में एक बार पंद्रह मिनट का इन्टरवल या 'रेसेस' होता है । क्या आप बता सकते हैं कि रेसेस में यहाँ के बच्चे क्या खाते हैं या टिफ़िन में क्या लेकर आते हैं ? ब्रेड, सेन्डविच, सलामी (मांस का एक व्यंजन), सेब, टमाटर और अंडा इनका प्रिय नाश्ता है । माँ-बाप दोनों सुबह 7-8 बजे नौकरी पर चले जाते हैं, इसलिए घरेलू नाश्ता तैयार करने का समय नहीं होता । सो बनी-बनाई चीज़ों का नाश्ता ही ये बच्चे अपने टिफ़िन के डिब्बों में डाल कर लाते हैं । विदेशी बबलगम, जो यहाँ के बाज़ारों में कभी-कभी ही आता है, छात्रों को बहुत प्रिय है ।

चित्र 15: रोमानियन स्कूल की एक कक्षा । सामने दीवार पर देश का मानचित्र, नीचे खूंटियों की कतार कोट टाँगने के लिए तथा मेज़ पर फूलों के उपहार जो छात्र अपनी अध्यापिका के लिए लाए हैं ।
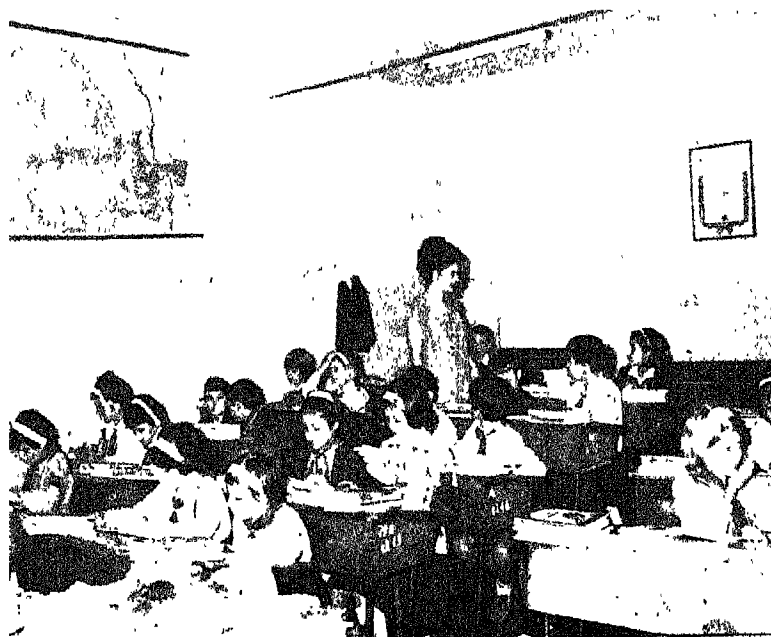
कक्षा की सारी पढ़ाई रोमानियन भाषा में ही होती है । अध्यापक भी केवल रोमानियन भाषा ही जानते हैं । अंग्रेज़ी, रूसी, फ्रांसीसी आदि कुछ भाषाओं की पढ़ाई द्वितीय भाषा के रूप में की जाती है जिसके लिए सप्ताह में दो पीरियड होते हैं । अत: रोमानियन भाषा न जानने वाले विदेशी छात्र को शुरू में कुछ कठिनाई होती है लेकिन चारों ओर एक ही भाषा का प्रयोग होने के कारण वे बहुत ही जल्दी बहुत अच्छी तरह से रोमानियन सीख जाते हैं । हाँ, इस प्रक्रिया में कभी-कभी कुछ रोचक घटनाएँ घट जाती हैं । एक रोचक घटना सुनिए ।

हमारा लड़का रोमानियन स्कूल में तीसरी में दाखिल हुआ था । एक-दो माह मैं कुछ-कुछ रोमानियन तो वह सीख चुका था । एक दिन उसकी अध्यापिका हमारे घर आई और कहने लगी, 'यह लड़का बहुत धीरे जवाब देता है और मैं इसे बार-बार 'तारे' (ज़ोर से बोलो) कहती हूँ, वह शायद नहीं समझता ।' वह अंग्रेज़ी नहीं जानती थी, सो बार-बार रोमानियन भाषा में ही 'तारे' ! 'तारे' ! कहती जाती थी ।

अध्यापिका ने हमसे पूछा कि हिन्दी में इसके लिए क्या शब्द है । हमने बताया, 'जोर से बोलो ।' उसने इस वाक्य को बार-बार दोहराया और लिखकर ले गई । दूसरे दिन जब उसने लड़के से हिन्दी में कहा 'ज़ोर से बोलो' तो वह आश्चर्यचकित रह गया और घर आकर कहने लगा—'हमारी अध्यापिका तो हिन्दी जानती है ।'

स्कूलों में सप्ताह में दो घंटे हस्तकार्य का पीरियड होता है जिसे यहाँ 'लुक्रु मानुआल' कहते हैं । जिस दिन हस्तकार्य होता है उस दिन छात्रों को स्कूल के निर्धारित समय से दो घंटे पहले बुलाते हैं । इसमें लड़के कागज़ का डिज़ाइन बनाना, लकड़ी के विभिन्न आकार बनाना, रंदा चलाना तथा अन्य उपयोगी घरेलू चीज़ें बनाना सीखते हैं । लड़कियाँ कपड़े के डिज़ाइन बनाना, काढ़ना, बुनना और सीना सीखती हैं । सप्ताह में शारीरिक व्यायाम का भी एक पीरियड होता है जिसके लिए विशेष ढंग के सिंथेटिक कपड़े की बनी नीली कमीज़ और नीले पाजामे की यूनिफ़ार्म पहननी होती है । रोमानिया में स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक की जो शिक्षा व्यवस्था है वह भारत की शिक्षा-व्यवस्था से कुछ अलग है । रोमानिया की शिक्षा-पद्धति पूरी तरह देश की वास्तविक ज़रूरतों तथा लक्ष्यों को ध्यान में रखकर

निर्धारित की गई है । सन् 1978 में रोमानिया में एक नया शिक्षा कानून पास हुआ जिसमे शिक्षा प्रणाली का रूप इस प्रकार निर्धारित किया गया

3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए	स्कूल पूर्व शिक्षा
प्राथमिक स्कूल शिक्षा (सात वर्ष की उम्र से)	कक्षा 1 से 4
माध्यमिक स्कूल शिक्षा	कक्षा 5 से 8
हाइ स्कूल (लिचेउ) : चरण — 1	कक्षा 9 से 10
चरण — 2	कक्षा 11-12
सायंकालीन कक्षाओं के लिए	कक्षा 11-13
विश्वविद्यालय शिक्षा (बी.ए. तथा एम.ए. का मिश्रण)	चार वर्ष का
व्यावसायिक शिक्षा (इंजीनियरी, चिकित्सा आदि)	पाँच-छह वर्ष का
पीएच.डी. (डाक्टरेट)	

इनमें से दस वर्ष (हाई स्कूल) तक की शिक्षा सभी रोमानियन बच्चों के लिए अनिवार्य है । सामान्य पढाई के अतिरिक्त हर स्कूली छात्र को किसी-न-किसी हस्तकला, कौशल या छोटे-मोटे व्यावसायिक कार्यों का प्रारंभिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है, जैसे लकडी का काम, कागज का काम, टाइपिंग पाकविद्या, बुनाई, पैकिंग आदि । दस वर्ष की इस पढाई का पाठ्यक्रम कुछ इस प्रकार रखा जाता है कि विद्यार्थी पढ़ाई खत्म करने तक किसी-न-किसी व्यवसाय में दक्ष हो जाए ताकि अगर वह चाहे तो इसके बाद कारीगर, कर्मचारी, सेल्समैन आदि के रूप मे नौकरी शुरू कर सके । किसी भी नौकरी के लिए सामान्यत: दस वर्षीय हाई स्कूल की शिक्षा न्यूनतम योग्यता है ।

हाई स्कूल के दूसरे चरण में प्रवेश के लिए छात्रों की रुझान की परीक्षा ली जाती है । उत्तीर्ण होने पर ही दूसरे चरण में प्रवेश की अनुमति दी जाती है । दूसरे चरण के इन दो वर्षों में उन्हें किसी एक-व्यवसाय की विशिष्ट ट्रेनिंग या शिक्षा दी जाती है । इस प्रयोजन से कुछ चुने हुए हाई स्कूलो को विषयवार अलग-अलग वर्गों में बाँट दिया गया है, जैसे उद्योग टेक्नॉलॉजी, बिजली इंजीनियरी, तेल, खनिज, धातु, रसायन, कृषि, लेखा प्रशासन, चिकित्सा, नर्सिंग, गणित, भौतिकी, प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास,

कला आदि। जो विद्यार्थी जो विषय या व्यवसाय चुनता है उसे उसी विषय से संबंधित हाई स्कूल में प्रवेश दिया जाता है।

हाई स्कूल का दूसरा चरण समाप्त करने के बाद अधिकतर लोग नौकरी करने लग जाते हैं। जो लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं वे या तो विश्वविद्यालय में दाखिला लेते है या उच्च व्यावसायिक कोर्सों मे चले जाते हैं, जैसे इंजीनियरी, डाक्टरी आदि। विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्ष का होता है जो हमारे यहाँ के बी.ए. तथा एम.ए. का मिलाजुला रूप है। इस पाठयक्रम को यहाँ 'फ़ाकुल्ताते' (फ़ैकल्टी) कोर्स कहते हैं। पीएच.डी. (डाक्टरेट) करने की अनुमति बहुत ही कम लोगों को मिल पाती है, क्योंकि विश्वविद्यालय की परीक्षा समाप्त करते ही उन्हें तीन साल तक सरकार की नौकरी करनी पड़ती है और उसके बाद भी कई और शर्तें है जिन्हे पूरा करने पर ही कोई पीएच.डी के लिए आवेदन करने का हकदार होता है।

रोमानिया के विश्वविद्यालयों मे जो प्रवेश की पद्धति है वह हमारे यहाँ के विश्वविद्यालयों की प्रवेश-पद्धति से अलग है। हमारे यहाँ मैट्रिक या इंटर में प्राप्त अंकों के आधार पर बी.ए. की कक्षाओं में दाखिला दिया जाता है। इस आधार पर भारत के कालेजों में दाखिला पाना उतना कठिन नहीं है। रोमानिया के विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाना उतना ही कठिन है जितना हमारे यहाँ आई.ए.एस. या इंजीनियरी की परीक्षा पास करना।

विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए एक बहुत कठिन राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा होती है। इच्छुक छात्र वर्षभर ट्यूशन पढ़ कर तथा ख़ास तैयारी कर इस परीक्षा में बैठते हैं। इसका कारण यह है कि विश्वविद्यालय में सीटें बहुत कम होती हैं। कुल परीक्षार्थियों में से केवल 5-10% को ही दाखिला मिल पाता है। हर साल उतनी ही सीटों की व्यवस्था रखी जाती है जितनों की देश को आवश्यकता होती है, अर्थात जितनों को सरकार अपने उद्योगों और कार्यालयो में नौकरी दे सकती है। हर व्यक्ति को नौकरी देने की गारंटी सरकार की है, इसलिए अलग-अलग उद्योगों तथा कार्यालयों आदि से प्राप्त माँगों के अनुसार ही अलग-अलग विषयों में सीटों की संख्या तय की जाती है।

यहाँ उच्चशिक्षा केवल मुख्य विश्वविद्यालयों में ही प्रदान की जाती है, हमारे यहाँ की तरह यहाँ कालेज नहीं होते । हाँ, अलग-अलग विषयों की शिक्षा के लिए अलग-अलग संस्थान या विभाग अवश्य हैं, जैसे इंजीनियरी चिकित्सा, गणित, अर्थशास्त्र, पेट्रोलियम, खनिज आदि । इस समय सारे रोमानिया में सात विश्वविद्यालय है जिनमें से इयाश विश्वविद्यालय (1860) सबसे पुराना है । इसके बाद 1864 में बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई । इनके अलावा चार पोलिटेकनिक विश्वविद्यालय हैं और बाइस उच्च शिक्षा के संस्थान, जहाँ अर्थशास्त्र, कृषि, वास्तुकला, चिकित्सा, रंगमंच, कला आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है ।

रोमानिया मे सारी शिक्षा निःशुल्क है चाहे स्कूल शिक्षा हो, विश्वविद्यालय शिक्षा हो या चिकित्सा, इंजीनियरी आदि की शिक्षा हो । जिन छात्रों के माता-पिता दोनों का वेतन मिलाकर 3,000 रुपए से कम हो उन्हें सरकार की ओर से 400 से लेकर 600 रुपए तक प्रतिमाह वजीफ़ा दिया जाता है । स्कूल के छात्रों को सभी पुस्तकें स्कूल की ओर से मुफ़्त मिलती हैं जो उन्हें परीक्षा के बाद स्कूल को वापस कर देनी पडती हैं । छात्रों को अपनी ओर से केवल कापियाँ, पैंसिल, रंग के डिब्बे आदि ख़रीदने पड़ते हैं ।

रोमानिया में प्रमुख अल्पसंख्यक भाषा-भाषियों के लिए भी कुछ विशिष्ट स्कूल हैं, जैसे हंगेरियन (मग्यार), जर्मन, बुल्गारियन आदि भाषा-भाषी स्कूल । ये स्कूल अधिकांशतः प्राथमिक स्तर के हैं । एक अंग्रेज़ी माध्यम अमेरिकी स्कूल भी है, जिसका संचालन एक अमेरिकी बोर्ड करता है । इसकी फीस 3-4 हज़ार रुपए प्रतिमाह है जिसका भुगतान डालर में करना पड़ता है । इसलिए इसमे अधिकतर विदेशी ही अपने बच्चों को भेजते हैं जिन्हें उनके दूतावासों से फ़ीस का भुगतान करने की सुविधा प्राप्त है ।

प्रश्नों की लाटरी

रोमानिया के स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में परीक्षा लेने और अंक देने का तरीका भी बहुत रोचक है । स्कूलों में नवीं कक्षा तक केवल क्लास-टेस्ट होते हैं । सत्र के शुरू में ही छात्र को एक अंक-कार्ड दे दिया जाता है जो हमेशा उसी के पास रहता है। हर तीन माह में अध्यापक उन पर

क्लास- टेस्ट के आधार पर अंक भरता है और उन्हें छात्रों को वापस लौटा देता है; एक प्रति रिकार्ड के लिए कार्यालय भेज देता है ।

अंक 10 में से दिए जाते हैं और काफ़ी उदारता से दिए जाते हैं । कभी-कभी तो 10 में से 10 अंक भी दे दिए जाते हैं । 5 अंक का अर्थ है छात्र बहुत कमज़ोर है और फ़ेल भी हो सकता है । 9 अंक बहुत अच्छे माने जाते हैं । साल के अंत में इन अंकों को जोड़ा जाता है और उन्हीं के आधार पर उनके परिणाम घोषित किए जाते हैं । इस व्यवस्था में लगभग सभी छात्र उत्तीर्ण हो जाते हैं । छात्रों के परीक्षा परिणामों में पहले तीन स्थानों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय घोषित किया जाता है, लेकिन हमारे यहाँ की तरह अंक प्रतिशत के आधार पर श्रेणी या डिवीज़न नहीं घोषित किया जाता ।

विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली है, यानी वर्ष में तीन बार छात्रों की लिखित तथा मौखिक परीक्षा होती है । अंक देने का तरीका वही है जो स्कूलों में, यानी प्रत्येक विषय या प्रश्नपत्र में 10 में से अंक दिए जाते हैं जो छात्रों के पास रखे अंक कार्ड में दर्ज कर दिए जाते हैं। चार वर्ष के अंत में इन्हें जोड़कर ही परीक्षा परिणाम घोषित किया जाता है ।

विश्वविद्यालयों में परीक्षा लेने का इनका तरीका भी हमारे तरीके से अलग है । प्रत्येक सेमेस्टर में हर विषय की परीक्षा वही अध्यापक लेता है जो उस विषय को पढ़ाता है । हमारे यहाँ की तरह छपे हुए प्रश्नपत्र नहीं दिए जाते। अध्यापक कागज़ के स्लिपों पर प्रश्न लिखकर अपने साथ लाता है । हर स्लिप में दो तीन प्रश्न होते हैं । इन स्लिपों को एकसाथ मिलाकर मेज़ पर या किसी डिब्बे मे रख दिया जाता है । हर छात्र को बिना देखे इन स्लिपों में से एक स्लिप छाँटनी होती है, जैसे लाटरी से नंबर निकाला जा रहा हो । छात्र के हाथ में जो भी स्लिप आती है उसे उन्हीं प्रश्नों का उत्तर वहीं बैठकर कापियों में लिखना होता है । कापियाँ विश्वविद्यालय की ओर से नहीं दी जातीं, छात्रों की अपनी होती हैं । जहाँ ईमानदारी का अभाव होता है वहीं हर तरह के सख्त नियम बनाने पड़ते हैं । यहाँ यह भय नहीं कि छात्र अध्यापक की नजर बचाकर नकल कर लेगा या किसी से सवाल पूछ लेगा ।

अध्यापक परीक्षा के दौरान वहीं बैठा रहता है और परीक्षा के बाद सभी

कापियों को वहीं बैठकर जाँचता है । छात्र तब तक बाहर इंतज़ार करते रहते हैं । कापियो की जाँच पूरी हो जाने के बाद छात्र एक-एक कर अपने अंक-कार्ड लेकर भीतर आते है और अध्यापक उनमें अक भरता जाता है ।

कई विषयों में मौखिक परीक्षाएँ भी होती हैं । यहाँ भी जो छात्र मौखिक परीक्षा के लिए आता है उसे प्रश्नों की लाटरी में से दो-तीन स्लिप उठाने को कहा जाता है । भाग्य से जो भी स्लिप हाथ में आ जाए उसमें लिखे प्रश्नों का मौखिक जवाब उसे देना होता है । ज़ाहिर है, ऐसी स्थिति में अध्यापक पर प्रश्न पूछने में पक्षपात बरतने का आरोप नहीं लगाया जा सकता । चौथे वर्ष के अंत तक छात्रों की किसी एक विषय पर सौ दो सौ पृष्ठों का शोधप्रबंध लिखना होता है ।

चित्र 16: इतजार परीक्षा का : देखे, लाटरी मे क्या प्रश्न हैं ?

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के परिणामों की घोषणा और खाली पदों की घोषणा लगभग एक साथ ही की जाती है । छात्रों के लिए नौकरियों की घोषणा करने का तरीका बड़ा रोचक है । अंकों के आधार पर जिस दिन छात्रों की 'मेरिट लिस्ट' विश्वविद्यालय में टँगती है उसी दिन नौकरी के लिए ख़ाली स्थानों की भी एक सूची बगल में टँगती है जिसमें लिखा होता है कि किस शहर या गाँव में कौन-कौन से पद ख़ाली हैं । सामान्यत: ये खाली स्थान स्कूलों में अध्यापक पदों के होते है, लेकिन कुछ पद

अनुवादक, इन्टरप्रेटर, कार्यालय सहायक आदि के भी होते हैं । विश्वविद्यालय में कोई भी व्यक्ति सीधे प्राध्यापक नहीं बन सकता । उसे पहले कुछ वर्ष किसी स्कूल में पढाना होता है ।

इसके बाद एक दिन सभी उत्तीर्ण छात्रों को एक हाल में एकत्र होने को कहा जाता है । वहाँ एक अधिकारी एक-एक कर इन खाली पदों की घोषणा करता है और छात्रों को मौखिक रूप से अपनी पसंद का पद स्वीकार करने को कहा जाता है । एक ही पद के लिए दो या अधिक उम्मीदवार हों तो सबसे अधिक अक प्राप्त करने वाले को प्राथमिकता दी जाती है । इस प्रकार जिस छात्र के सबसे अधिक अंक होंगे उसे उसकी पसद का पद, यदि वह खाली है तो अवश्य मिलेगा । ऐसा देखा गया है कि अधिकांश छात्र बुख़ारेस्त शहर में ही कार्य करना पसंद करते है या फिर उस शहर में जहाँ उनका मकान हो । ऐसी मनपसंद नौकरी सबसे अधिक अंक पाने वाले को ही मिल सकती है । जिस छात्र के जितने कम अक होंगे उसे बुखारेस्त से उतनी ही दूर नौकरी मिलेगी और हो सकता है, उसे किसी दूरस्थ गाँव के स्कूल में पढाने जाना पड़े । इस प्रकार इस बँटवारे मे जो भी नौकरी उसे मिलती है उसे स्वीकार करने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं, क्योंकि विश्वविद्यालय की पढाई समाप्त करने के बाद हर छात्र को तीन साल तक अनिवार्यत: सरकारी नौकरी करनी पडती है । तीन साल के बाद ही वह दूसरे विभाग मे नौकरी ढूँढ़ सकता है ।

यदि कोई छात्र नौकरी करने से इनकार करता है तो उसे उसकी शिक्षा पर हुए सरकारी खर्च को लौटाना पड़ता है और पुलिस उसे नौकरी न करने तथा आवारा घूमने के जुर्म में गिरफ़्तार कर सकती है । इस हालत में आगे भी उसे किसी सरकारी कार्यालय या उद्योग में मुश्किल से नौकरी मिल पाती है ।

सातवाँ अध्याय

सफ़रनामा

अगर आप जल्दी में यूरोप का कोई शहर घूमना चाहते हैं— और थकना भी नहीं चाहते और अधिक पैसे भी नहीं ख़र्च करना चाहते तो एक राज़ बता सकता हूँ । आप शहर में उतरते ही बस का एक दैनिक पास (टिकट) ले लीजिए, यानी दिनभर आप जब चाहें, जहाँ चाहें इस टिकट पर बस की सैर कर सकते हैं । यूरोप के लगभग हर बडे शहर में यह सुविधा है । आप चाहे तो बस गाइड या नक्शा भी ले लें ।

अब आप किसी भी बस में चढ़ जाइए और जहाँ-जहाँ बस जाए बाहर का नज़ारा देखते जाइए । जहाँ कुछ रौनक-सी दिखाई दे या दर्शनीय स्थल नज़र आए, उतर जाइए । थोड़ी देर वहाँ घूम लीजिए । फिर एक पैकेट 'चीज़' (पनीर), एक दो पैकेट बादाम, मूँगफली आदि ख़रीद कर फिर किसी बस में बैठ जाइए । आप नोट करते जाइए कि आप किस-किस नंबर की बसों में बैठ चुके हैं । फिर खिड़की से बाहर, चलचित्र की तरह सामने से गुज़रते लोगों, मकानों, पार्कों, दुकानों, होटलों, चौराहों, विज्ञापनों आदि पर नज़र दौड़ाते जाइए । भूख लगे तो उतरकर किसी रेस्तराँ में खाना खा लीजिए या खडे-खडे नाश्ता कर लीजिए । यूरोप के रेस्तराँ में बैठकर खाने

के दुगुने पैसे लगते है, खड़े-खड़े किसी जगह खाएँगे तो आधे दाम में काम बन जाएगा । थकान अपनी बस पर ही उतारिए । निश्चित रहिए, यहाँ की बसें दिल्ली, कलकत्ते की बसो की तरह हिचकोलेदार नहीं होगी । (देखिए पारदर्शी 3)

सारे पश्चिमी यूरोप में यातायात बहुत महँगा है । इन देशों में प्राय: अपनी कार ही सस्ती पड़ती है । भारत की बसों में जितनी दूरी आप एक रुपए मे तय करते है उसके लिए 10 रुपए तक यहाँ बस में खर्च करने पड सकते हैं । पूर्वी यूरोप में अलबत्ता सार्वजनिक यातायात (बस, मेट्रो आदि) काफ़ी सस्ता है—शायद रूस में सबसे सस्ता ।

अगर आप रोमानिया में है तो शहर घूमने के लिए आपके पास चार मुख्य साधन हैं—टैक्सी (या कार) बस, ट्रालीबस (ट्रालीबूज़) तथा ट्राम जिसे यहाँ 'ट्रामवाय' कहते हैं । स्कूटर या साइकिल पर सवार होकर हवाखोरी करने का सुख रोमानिया में नहीं है क्योंकि यहाँ की हवा पूरे नौ माह इतनी ठण्डी रहती है कि खुले मोटर-साइकिल या स्टकूटर मे आपके हाथ और मुँह ठिठुर जाएँगे । कही-कही मोटर-साइकिलें अवश्य दिखाई देती है लेकिन वे भी गर्मी के मौसम में । साइकिल, शौकिया तौर पर, बच्चे पार्क मे सैर सपाटे के लिए चलाते है ।

आपको टैक्सी चाहिए तो आप घर से ही मुख्य टैक्सी-केन्द्र पर फ़ोन कर सकते हैं जो वायरलेस के जरिए शहर के सभी टैक्सीवालो को कार के भीतर ही सूचना प्रसारित कर देगा । हर टैक्सी के भीतर एक वायरलेस सेट लगा रहता है । अगर टैक्सी ख़ाली है या खाली होने वाली है तो टैक्सी ड्राइवर अपना वायरलेस सेट 'ऑन' कर देता है जिसके ज़रिए उसे मुख्य टैक्सी-केन्द्र से एक के बाद एक उन स्थानों के नाम सुनाई पडने लगेंगे जहाँ टैक्सियों की ज़रूरत है । जैसे ही ड्राइवर को अपने से निकट के किसी स्थान की घोषणा सुनाई देती है, वैसे ही वह बैठ-बैठे तुरंत वायरलेस माइक के ज़रिए अपनी स्वीकृति और टैक्सी नंबर घोषित कर देता है । इसके बाद केन्द्र आपको टेलीफ़ोन द्वारा सूचित कर देगा कि अमुक नंबर की टैक्सी शीघ्र ही आपके बताए स्थान पर पहुँच रही है । लीजिए, देखते-ही-देखते टैक्सी आपके मकान के सामने खड़ी हो गई । टैक्सी चलाने का काम यहाँ स्त्री तथा पुरुष दोनों ही करते हैं ।

ट्राम (या ट्रामवाय) बिजली के तार के ज़रिए चलती हैं । रास्ते भर बिजली के दो समानांतर तार ऊपर खिंचे रहते हैं और नीचे रेल की सी पटरियाँ होती है जिन पर दो डिब्बों वाली शाही ट्रामें टनन-टनन करते हुए भागती चली जाती हैं । ट्राम की ऊपरी छत से, गाय की सींग की तरह, दो लंबे छड़ ऊपर खिंचे तारों को छूते जाते हैं जिनके करेन्ट से ट्राम चलती है । ये बसों की तुलना में कुछ कम तेज़ चलती हैं, लेकिन लोहे की पटरियों पर चढे होने के कारण आप इसमें बैठकर बिना हिचकोले या झटके खाए सफ़र का आनन्द ले सकते हैं ।

बसें यहाँ देखने मे तो वैसी ही हैं जैसे हमारे शहरों में होती हैं, लेकिन एक बार आप बस में घुसे तो आपको लगेगा कि हमारी और इनकी बसों में कितना अंतर है । यहाँ की किसी भी बस में कोई कंडक्टर नहीं होता, कोई टिकट देने वाला नहीं होता, खींचने की घंटी नहीं होती, महिलाओं के लिए सुरक्षित कोई सीट नही होती, यद्यपि वृद्ध तथा बच्चे वाली महिलाओं को कोई भी यात्री अपनी सीट दे देता है । बसों के दरवाजे चलते समय हमेशा बद रहते हैं, केवल स्टॉप आने पर ही ड्राइवर अपनी ही सीट से बटन दबाकर दरवाज़ों को खोलता और बंद करता है । ड्राइवर की सीट के सामने तथा दाएँ-बाएँ आइनों का ऐसा जाल बना होता है कि वह अपनी सीट पर बैठे-बैठे दरवाज़ें से चढने और उतरने वाले लोगों को देखता रहता है । सभी यात्रियों के चढ़ या उतर जाने के बाद वह स्वचालित दरवाज़ों को बटन दबाकर बंद कर देता है । दिल्ली या कलकत्ते की बसों की तरह यात्री चौराहों पर या लाल बत्ती पर नहीं उतरते। उतरें भी कैसे, दरवाज़ें तो बंद हैं ।

सर्दियों में बसों तथा ट्रामों को भीतर से गरम करने की व्यवस्था रहती है । खिडकियों के शीशे प्राय:बद ही रहते हैं जिन्हे खोलने का अवसर केवल गर्मियों के दो-तीन महीनों मे ही मिलता है ।

बुख़ारेस्त में अपनी पहली बस-यात्रा मैं कभी नहीं भूल सकता । विश्वविद्यालय से भारतीय राजदूतावास के लिए मैं पहली बार बस मे चढ़ा । भीतर पहुँचकर मैं टिकट ख़रीदने के लिए इधर-उधर कडक्टर को ढूँढ़ने लगा और अंग्रेज़ी में एक दो लोगों से पूछा भी । मेरी बात कोई नहीं समझा और अगर किसी ने समझा भी तो जवाब रोमानियन में दिया जो मै

नहीं जानता था । एक व्यक्ति जो बस स्टॉप पर मेरे साथ चढ़ा था, मेरी दुविधा समझ गया । उसने मेरी ओर टिकट बढ़ाया और कुछ कहाँ । वह बार-बार मुझे टिकट दिखा रहा था लेकिन दे नहीं रहा था । मै अंत तक समझ नहीं पाया कि वह क्या कह रहा है । खैर, अंत में मैं अपना स्टॉप आने पर बिना टिकट के ही उतर गया ।

दूतावास में एक भारतीय अधिकारी से जब मैंने इस घटना की चर्चा की तो उसने बताया कि यहाँ बसों में कंडक्टर नहीं होते और वह यात्री जो आपको टिकट दिखा रहा था, संकेत से यह कह रहा था कि आप चाहें तो पैसे देकर मुझसे टिकट ले लें । भारत में तो यात्रियों द्वारा टिकट बेचना जुर्म होता है, सो इस आतरिक व्यापार का मतलब मेरी समझ से बाहर था ।

आपके मन में सहज़ प्रश्न उठा होगा कि अगर बसों में कंडक्टर नहीं होते तो लोग टिकट कैसे ख़रीदते हैं । टिकट यहाँ सिगरेट-माचिस वालों की दुकानों में मिलता है या खास-खास स्टॉप पर बने बूथों मे । हर यात्री सामान्यतः तीन प्रकार के टिकटों के दस-दस के पैकेट ख़रीद कर अपने पास रखता है—बस, ट्रालीबस, तथा ट्राम का बस का टिकट कुछ महँगा (लगभग एक या डेढ़ रुपया चाहे जहाँ जाएँ) होता है, ट्रालीबस का उससे सस्ता, और ट्राम का सबसे सस्ता ।

जैसे ही यात्री बस या ट्राम में घुसता है वह बस के डंडों में लगे पंचिंग मशीन के छिद्र में अपना टिकट घुसाता है और मशीन दबाकर अपना टिकट पंच करता है । टिकट में कुछ खास जगहों पर कुछ छिद्र हो जाते हैं । हर बस या ट्राम की पंचिंग मशीन से बनने वाले छिद्रों का डिज़ाइन अलग-अलग होता है जिससे आप एक बार प्रयुक्त टिकट को दूसरे बस या ट्राम मे नहीं चला सकते । कभी-कभी टिकट चेकर आकर टिकट की चेकिंग करते हैं और बिना टिकट यात्री को 100-200 रुपए तक जुर्माना करते हैं, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है । सामान्यतः सभी यात्री बस में घुसते ही नियमतः अपना टिकट पंच करते हैं—किसी डर से नहीं, बल्कि इसलिए कि उनके लिए यही सहज है, ऐसा न करना अपराध है । कभी कभी जब संयोग से किसी के पास टिकट न हो तो वह वहीं अपने पडोसी यात्री को पैसे देकर उससे टिकट ख़रीद लेता है । नए टिकटों का बंडल हरेक की

जेब में रहता ही है ।

पेरिस में बसों की व्यवस्था कुछ अलग है । वहाँ यात्री बस मे आगे से चढ़ते हैं । यात्री दूर से अपना मासिक बस-पास ड्राइवर को दिखाते हुए भीतर घुसते हैं । ड्राइवर बैठे-बैठे ही यात्रियों को देखता रहता है । यहाँ फुटकर टिकट बहुत महँगे हैं, इसलिए लोग अक्सर मासिक या त्रैमासिक बस-पास बनाकर रखते हैं । अगर आपको फुटकर टिकट ख़रीदना हो तो ड्राइवर ही आपको साथ लगी एक मशीन की मदद से टिकट दे देता है । बटन दबाने से मशीन से अपने-आप रेजगारी बाहर आ जाती है । दूसरा बटन दबाने से टिकट बाहर निकल आता है जिसे यात्री खुद उठा लेता है ।

बुख़ारेस्त के बस और ट्रालीबस में अंतर है । बस डीज़ल से चलती है लेकिन ट्रालीबस बिजली से । ट्रालीबस के लिए भी ट्राम की तरह सड़क के किनारे बिजली के दो मोटे समानांतर तार खिंचे रहते हैं । बस की छत से दो छड़ें इन तारों में फँसी रहती हैं । ये छड़ें इतनी लंबी और लचीली होती हैं कि ट्रालीबस किनारे से सडक के बीच तक जा सकती है और दूसरी गाडियों को ओवरटेक कर सकती है । ये बसे लोहे की पटरी पर नही चलती । इनके पहिए सामान्य बसों के पहियो की तरह ही होते है । अंतर केवल यह है कि यह तार या केबल के ज़रिए बिजली से चलती हैं । बुख़ारेस्त में यही 'ट्रालीबूज़' सबसे अधिक लोकप्रिय सवारी है ।

देखिए पारदर्शी 4

बुखारेस्त शहर मे जमीन के नीचे चलने वाली रेलें भी हैं, जिन्हें 'मेट्रो' कहा जाता है । ये मेट्रो लाइनें यहाँ हाल ही में बनी हैं । इसका आधा हिस्सा अभी भी बन रहा है । यह मेट्रो लाइन एक प्रकार के रिंग-रेलवे की तरह है, जो पूरे बुख़ारेस्त शहर के चारों ओर बिछी है ।

रोमानिया की मेट्रो रेल-सेवा अभी उतनी विकसित तथा विस्तृत नहीं है जितनी रूस, फ्रांस, जर्मनी तथा हगरी की । पेरिस में तो मेट्रो का इतना विस्तृत जाल बिछा है कि वह अपने में ख़ुद एक शहर है—ज़मीन के नीचे बसा शहर जहाँ भूतल मे ही बड़े-बड़े बाज़ार हैं, स्टेशन हैं, आरामगृह हैं और हर प्रकार की मानवीय सुविधा की चीज़ें है । चाहे आप पेरिस में नए हो या पुराने बिना मेट्रो मार्गदर्शिका (रूट-गाइड) के आप काम नही चला

सकते । आपके लिए पाकेट कम्प्यूटर रूट-गाइड भी उपलब्ध है— आपको जहाँ जाना है वहाँ का बटन दबाइए और मार्ग का सारा नक्शा आपके सामने उभर आता है ।

पेरिस के मेट्रो रेल के प्लेटफार्म में घुसने से पहले ही द्वार पर लगी एक मशीन के छेद मे आपको अपना टिकट घुसाना होता है जो तीन चार मीटर दूर के एक दूसरे छेद से बाहर निकलता है । इसके साथ ही भीतर घुसने का बंद द्वार खुलता है । हर टिकट पर गहरे भूरे रंग की एक पट्टी छपी होती है जो वास्तव में टेप का ही एक रूप है । इस टेप पट्टी में सभी आवश्यक सूचनाएँ अंकित रहती हैं—टिकट कौन-सी तारीख का है, कब तक का है, दैनिक है, साप्ताहिक है या मासिक आदि । इन सूचनाओं को आप नहीं पढ सकते, जैसे आप टेप में भरे संगीत या आवाज़ को नही पढ सकते, लेकिन मशीन पढ़ लेती है । इसलिए अगर आपने कोई गलत या पुराना टिकट छिद्र में डाल दिया तो दरवाज़ा नहीं खुलेगा।इस हालत में न यहाँ टिकट चेकर की ज़रूरत पड़ती है और न कंडक्टर की ।

रेल की दुनिया

आकार में बहुत विशाल न होने पर भी बुख़ारेस्त रेलवे स्टेशन रूस, बुल्गारिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, पूर्वी जर्मन, पोलेन्ड आदि देशों से आने-जाने वाली ट्रेनों का अंतर्राष्ट्रीय रेलवे जंकशन है । एक आम रोमानियन को वैसे बहुत लंबा सफ़र करने की नौबत नहीं आती । हमारे उड़ीसा राज्य से भी छोटे आकार के इस देश में एक रात के सफ़र में ही उसके देश की सीमा पार हो जाती है । अपने लंबे सफ़र की दुखभरी दास्तान सुनाते हुए एक रोमानियन ने एक दिन कहा, 'मेरी माँ का घर यहाँ से बहुत दूर है । कुछ न पूछिए, रात को ट्रेन में बैठो तो सुबह जाकर पहुँचते हैं ।' एक भारतीय को, जो तीन-तीन दिन लगातार रेल में गुज़ारने का आदी है, यह सुनकर हँसी आएगी । रोमानियन क्या, यूरोप के किसी भी व्यक्ति के लिए यह नई चीज है, क्योंकि यूरोप के अधिकांश देश इतने छोटे हैं कि आपने 15-20 घंटे का रास्ता तय किया नहीं कि आप दूसरे देश में पहुँच गए ।

सारे यूरोप में रेलो की व्यवस्था इतनी साफ-सुथरी और सुनिश्चित है कि देख कर ईर्ष्या होती है । अगर आप सारे यूरोप का भ्रमण करने निकलें

तो आप अपने एक-एक मिनट के कार्यक्रम को पहले से निश्चित कर सकते है । ट्रेनें आपको कहीं धोखा नहीं देंगी ।

यूरोप के सभी देशो ने मिलकर एक ऐसी आकर्षक रेल-भ्रमण योजना शुरू कर रखी है कि आप 15 दिन से लेकर 90 दिन तक का रिआयती यूरेल पास (EURAIL PASS) खरीदकर सारे यूरोप का भ्रमण कर सकते हैं । 'यूरेल' का अर्थ है 'यूरोप की रेल' । इस यूरेल पास के ज़रिए आप पश्चिमी यूरोप (ब्रिटेन को छोडकर) के किसी भी देश में उस अवधि के दौरान जितनी बार और जहाँ चाहें रेल में सफ़र कर सकते हैं । आप उतने दिनो तक यूरोपीय रेल-साम्राज्य के बादशाह है । आस्ट्रिया, बेल्जियम डेनमार्क, फ़िनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस (यूनान), हालैंड, आयरलैंड, इटली, लक्ज़मबर्ग, नार्वे, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडन और स्विटज़रलैंड आपके यूरेल पास में शामिल हैं । इसमें ब्रिटेन और पूर्वी यूरोप के देश शामिल नही है ।'

यूरेल का प्रथम श्रेणी का 15 दिन के पास का दाम सन् 1982 में लगभग 250 डालर (2,500 रुपए) था । अब कुछ बढ गया है । इस पास में द्वितीय श्रेणी नहीं होती । 28 वर्ष से कम उम्र के लोगों के लिए 'यूरेल यूथ पास' की व्यवस्था है जिसका दाम लगभग आधा होता है । यह पास द्वितीय श्रेणी का होता है ।

यूरेल पास आपकी जेब में है तो ज़ाहिर है आपको कहीं भी टिकट ख़रीदने के लिए टिकट-खिड़कियों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे । हाँ, आपके पास 'वीज़ा' सभी देशो का होना चाहिए । आपको साथ में यूरेल टाइम टेबल भी दिया जाएगा जिसमें सारे पश्चिमी यूरोप के देशों की रेलो का समय दिया होगा । समय की पाबंदी क्या होती है, यह देखना हो तो यूरोप की रेलों में अवश्य सफ़र कीजिए । मजाल है जो कोई ट्रेन नियत समय से एक मिनट इधर-उधर हो । आने-जाने वाली गाडियों का समय, सख्या, गंतव्य-स्थान आदि सभी सूचनाएँ प्लेटफ़ार्म पर जगह-जगह फ़्लैश होती रहती हैं । डिब्बों में भारत की तरह भीड़-भाड़ नहीं होतीं, सो बिना रिज़र्वेशन के भी आप सामान्यत: आराम से सफ़र कर सकते हैं ।

रात हो गई, सोने का मन है तो अपनी सीट को आगे खींच दीजिए और इसी तरह सामने वाली सीट को भी आगे खींच लीजिए । लीजिए बिस्तर

हाज़िर है । अब आप रातभर आराम से खर्राटे भरते हुए सो सकते हैं । एक केबिन में दोनों ओर तीन-तीन सीटें होती हैं और इस प्रकार कम से कम तीन व्यक्तियों के सोने का इतंज़ाम तो आराम से हो गया । आपका कोई साथी है तो एक सीट पर दो भी सो सकते हैं ।

आप यूरोप भ्रमण के लिए निकले हैं तो याद रखिए, यूरोप में सारी पर्यटन व्यवस्था ऐसी बनाकर रखी गई है कि आप वहाँ पहुँचते ही शरीफ आदमी की तरह होटल में ठहरें, कुछ पैसे ख़र्च करें । शौच का उपयोग करना है, हाथ-मुँह धोना है तो मशीन में पैसे डालिए तभी दरवाज़ा खुलेगा । स्नान करना हो तो बीस-तीस रुपए का टिकट लेना ही होगा । कई स्टशनों में तो,प्रतीक्षालय और कॉफ़ी हाऊस एक ही हैं । प्रतीक्षा करनी है तो कुछ खाने पीने के लिए आर्डर देना ही होगा । अगर आप सोच रहे हों, तडके ही तो गाड़ी पकड़नी है,सो रात के कुछ घंटे यहीं प्लेटफ़ार्म पर ही बैठे या लेटे गुज़ार लें तो आप अपने को पुलिस स्टेशन में भी पा सकते हैं । आप रात को प्लेटफ़ार्म पर या आसपास कहीं नहीं लेट सकते, सोने की तो बात ही अलग है । पुलिस के सिपाही चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं और अगर कोई व्यक्ति बैठे-बैठे भी ऊँघ रहा होगा तो उसे भी सतर्क कर देंगे । हॉलैंड की राजधानी एम्स्टरडम के स्टेशन में तो रात के 11-12 बजे के बाद प्लेटफ़ार्म के हर यात्री को बाहर निकाल दिया जाता है और प्लेटफ़ार्म का दरवाज़ा बंद कर दिया जाता है । रात को वहाँ ट्रेनों का आना-जाना भी बंद हो जाता है । ऐसी व्यवस्था यहाँ की सरकारों ने खासकर अपने देशों मे अवैध रूप से बाहरी देशों से नौकरी आदि की तलाश में आने वाले बेघरबार युवकों, उठाईगीरों तथा हिप्पियों आदि को बसने से रोकने के लिए कर रखी है ।

अगर आपके पास यूरेल पास है तो आप बिना किसी होटल में पैसा खर्च किए भी सारे यूरोप का भ्रमण कर सकते हैं । आप जानना चाहेंगे, कैसे? इसके लिए आपको रेलवे टाइम-टेबल देख कर बड़ी सावधानी से अपना दौरा-कार्यक्रम बनाना पड़ेगा जिसमें आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि आपकी हर रात ट्रेन में ही कटे । अब आप स्टेशन पर उतरते ही ट्राली में अपना सामान डालिए और क्लोक रूम तक जाइए । यहाँ सामान रखने की स्वचालित व्यवस्था है । आप संदूक रखने के लिए बने एक खाने में

अपना बक्सा रखिए, खाने की खिड़की बंद कीजिए, छिद्र में पैसे का सिक्का डालिए और चाबी घुमाकर बाहर निकाल लीजिए। चाबी जेब में डालकर अब आप हल्के होकर शहर घूमने जा सकते हैं। याद रहे, बीच में आपको फिर संदूक निकाल कर दुबारा डालना हो तो फिर से सिक्का डालना पड़ेगा।

दिनभर आप बाहर घूमिए और रात को किसी ऐसी ट्रेन में चढ़ जाइए जो आपको रात भर अपनी गोद में सुलाकर दूसरी सुबह किसी दूसरे शहर में उतार दें। दिन भर इस शहर का आनन्द लीजिए। अब अगर आप पहले वाले शहर में दुबारा जाना चाहते हैं तो उस रात फिर से वहाँ की गाड़ी पकड़िए, नहीं तो दूसरे शहर के लिए किसी रात वाली गाड़ी का दामन पकड़िए।

आप दिन के समय शहर में चल-चल कर थक गए हैं और थोड़ा पैर सीधा करना चाहते हैं या झपकी लेना चाहते हैं तो अपना टाइम-टेबल निकाल कर देखिए। स्टेशन जाकर फिर कोई ऐसी गाड़ी पकड़ लीजिए जो आपको एक-दो घंटे में किसी दूसरे शहर या स्टेशन ले जाकर छोड़ दे। इस तात्कालिक सफ़र के दौरान आप गाड़ी के भीतर हाथ-मुँह धो सकते हैं, लेट सकते हैं, झपकी ले सकते हैं, नाश्ता-पानी कर सकते हैं, पत्र लिख सकते हैं, डायरी लिख सकते हैं और कुछ नहीं तो टाइम-टेबल उलट-पलट कर भावी कार्यक्रम की योजना बना सकते हैं। फिर, पुनः दूसरी गाड़ी से अपने पुराने शहर लौट सकते हैं।

ट्रेन का सफ़र इतना शांत भी हो सकता है यह एक आम भारतीय की कल्पना से बाहर की चीज़ है। बहुत देर तक चारों ओर शांति और व्यवस्था को देखते-देखते भारतीय आँखें अचानक बाहर प्लेटफ़ार्म पर फेरीवालों, चाय वालों, कुलियों और यात्रियों के कोलाहल को ढूँढ़ने लगती हैं। यहाँ प्लेटफ़ार्म पर कोई बेचनेवाला या फेरीवाला चक्कर नहीं लगा सकता, कुली तो दीखते ही नहीं दीखते भी हैं तो अप-टू-डेट कुली। खाने की कोई चीज़ चाहिए तो प्लेटफ़ार्म पर लगी मशीन में सिक्का डालिए और छिद्र से सेंडविच, केक, बिस्कुट, काफ़ी आदि का तोहफा ग्रहण कीजिए।

यूरोप की सबसे प्रसिद्ध रेल-सेवा ट्रान्स-यूरोप एक्सप्रेस (TEE) का नाम शायद आपने सुना हो। तेज़ रफ्तार, लंबे सफ़र और यात्रियों की

आधुनिकतम सुख-सुविधाओं की दृष्टि से यह यूरोप की सबसे अधिक प्रतिष्ठित रेल-सेवा है। इसमें केवल प्रथम श्रेणी के डिब्बे होते हैं अन्य दर्जों के नहीं। यह रेल-सेवा यूरोप के लगभग 130 शहरों को एक दूसरे से जोड़ती है। गाड़ियाँ एक के बाद एक देश की सीमाओं को धड़धड़ाते हुए ऐसे पार करती चली जाती हैं जैसे भारत में गाड़ियाँ राज्य की सीमाओं को पार करती हुई निकल जाती हैं।

अगर आप डेनमार्क या स्वीडन जा रहे हैं तो आपकी गाड़ी देखते-ही-देखते बाल्टिक सागर या उत्तर सागर के पानी पर तैरती नजर आएगी। जी हाँ, आपको पता भी नहीं लगेगा और आपकी गाड़ी एक लंबे स्टीमर पर सवार हो चुकी होगी। स्टीमर आपको और आपकी गाड़ी को अपने कंधों पर ढोए, समुद्र के उस पार उतार देगी और आप कोपेनहेगेन या स्टाकहोम के मेहमान बन चुके होंगे।

आठवाँ अध्याय
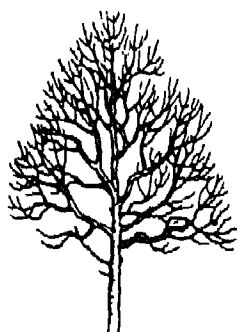
भरे बाज़ार में

आइए, आज बुख़ारेस्त का बाज़ार घूमें । किसी भी शहर को पहचानना हो तो बाज़ार से अच्छी कोई जगह नहीं । यहाँ एक ही जगह पर आप शहर का ही नहीं, सारे समाज का जीता-जागता चलचित्र देख सकते हैं, उसकी धड़कनें सुन सकते हैं ।

वैसे तो बुख़ारेस्त शहर में कई बड़े बाज़ार हैं, कई एक से एक बढ़कर डिपार्टमेन्टल स्टोर्स हैं, लेकिन हम यहाँ के एक प्रसिद्ध बाज़ार 'पियात्सा उनीरिया' चलते हैं । 'पियात्सा' का अर्थ होता है 'चौराहा,' 'चौक' या 'बाज़ार'। 'उनीरिया' का अर्थ है 'एकता' या 'एकीकरण' । सन् 1918 में काफ़ी वर्षों के प्रयत्न और संघर्ष के बाद तीन राज्य वालाचिया, मोल्दोविया और त्रान्सिल्वानिया ने मिलकर पहली बार आज के रोमानियन राष्ट्र की नींव डाली थी । इसी की याद में इस बाज़ार का नाम 'प्यात्सा उनीरिया' रखा गया ।

प्यात्सा उनीरिया के चौराहे की एक ओर सब्ज़ी मंडी है, जो गर्मी और बसंत में सब्ज़ियों और फलों से भरी रहती है, लेकिन सर्दियों में, बर्फ पड़ने के बाद, वीरान-सी हो जाती है ।'चौराहे' के दूसरी ओर उनीरिया

डिपार्टमेन्टल स्टोर्स है । यह यहाँ का बहुत पुराना और बहुत बड़ा डिपार्टमेन्टल स्टोर्स है । इस पाँच मंजिले स्टोर के मुख्य द्वार पर सैकड़ो स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े थैला लिए आते-जाते दिखाई देंगे । आपने इस डिपार्टमेन्टल स्टोर्स को देख लिया तो जैसे आपने रोमानिया के सभी स्टोर या बाज़ार देख लिए । समाजवादी देशो की यही विशेषता है—एक-ही सा पैटर्न एक-ही से सामान और एक-ही से दाम ।

आइए, पहले सीढ़ियाँ उतरकर इसके बेसमेन्ट (ज़मीन के नीचे की मंजिल) में चलें । यहाँ घुसते ही आपको एक खाली बड़े हॉल में लोगों की एक लंबी लाइन लगी मिलेगी । आप नहीं जानते यह लंबी लाइन किसके लिए है, लेकिन यहाँ का दस्तूर है कि पहले तुरंत लाइन में खड़े हो जाइए, फिर सामने वाले से पूछिए कि आगे क्या चीज बिक रही है । अगर इधर-उधर पूछने या देखने लगेंगे तो तब तक लाइन की पूँछ और लंबी हो चुकी

चित्र 17 : गर्मी और बसंत में सब्जियो का बाज़ार गर्म रहता है : ख़रीद फ़रोख्त मे लीन रोमानियन तथा जिप्सी स्त्री-पुरुष ।

होगी । इस हॉल में फुटकर चीज़ें फुटपाथ स्टाइल पर बिकती हैं । जो चीज़ बहुत समय से मार्केट में न हो, जिसकी कमी हो या जो चीज़ ताज़ी-ताजी आई हो या जिसे भीड के कारण नियमित काउन्टर पर बेचना संभव न हो, उसे इस हॉल में लाकर रख दिया जाता है । देखते-ही-देखते सामने लंबी लाइन लग जाती है और एक-दो सेल्स गर्ल्स (सामान बेचने वाली) फटाफट बिक्री शुरू कर देती है । कुछ ही क्षणों में सारा माल खत्म हो जाता है । जो चीज़ें अक्सर इस हाल में बिकती हैं वे हैं—कॉफी, ताजा गोश्त के पैकेट, विदेशी चाकलेट, संतरे, केले, विदेशी जूस के डिब्बे आदि । आप सोचेंगे क्या ये चीज़ें सामान्य ढंग से नहीं मिलतीं । मिलती हैं, लेकिन अच्छी किस्म की चीज़ों की समय-समय पर कमी हो जाती है ।

स्टोर में और आगे घुसने से पहले यहाँ के व्यापार या बाज़ार के तौर-तरीके जान लेना ज़रूरी है क्योंकि यहाँ के मार्केट या ख़रीदफरोख्त का तरीका हमारे यहाँ के तरीके से काफी-कुछ अलग है ।

यहाँ देश का लगभग सारा मार्केट, (सारा बाज़ार) सरकारी है । इसलिए दुकानदार की व्यक्तिगत मुनाफ़ाखोरी का सवाल नहीं पैदा होता । सभी चीज़ों के दाम नियत हैं—चाहे आप पड़ोस की छोटी दुकान से माल ख़रीदे या बड़े स्टोर से । दाम सरकार ही नियत करती है जो हर पैकेट पर छपा रहता है । यह ध्यान रखने की बात है कि चीज़ों के दाम लोगों को दिए जाने वाले वेतन को ध्यान में रखकर ही निर्धारित किए जाते हैं । प्रायः यह दाम अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत कम होता है—कभी-कभी तो आधा या दो-तिहाई । इसीलिए देखा गया है कि जो लोग रोमानिया से पश्चिमी यूरोप रेल या कार में घूमने निकलते हैं वे कुछ दिनों के लिए खाने-पीने का सामान यथासंभव यहीं से भरकर साथ ले जाते हैं । विश्वव्यापी महँगाई के साथ चीज़ों के दामों में यहाँ परिवर्तन नहीं होता—यदि कभी परिवर्तन हुआ तो उसी अनुपात में लोगों का वेतन बढ़ा दिया जाता है । इसलिए दामों मे संतुलन बनाए रखने के लिए उपभोग की चीज़ों की मात्रा नियंत्रित रखी जाती है । यही कारण है कि जब कोई दुर्लभ या अच्छी चीज मार्केट में आती है तो लोगों की लाइने लग जाती हैं और प्रायः लोग फ़ोन द्वारा अपने घरों मे या मित्रों को तुरंत सूचित कर देते हैं कि फलाँ जगह फलाँ चीज़ मिल रही है, तुरंत ले आओ । शाम दफ़्तर से लौटते समय शायद ही कोई व्यक्ति हो

जो रास्ते से सामान बटोरता हुआ न आए । नौकर-नौकरानियों की सुविधा तो यहाँ है नहीं । चाहे कोई कितना ही बडा अधिकारी क्यों न हो आम आदमी के साथ ही लाइन मे खड़ा होकर सामान लेता है ।

यहाँ के लोग अब लाइनों के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि उन्हें यह सब सहज लगता है । एक बड़ी मजेदार बात यह है कि यहाँ दुकानों में चार आदमी भी होंगे तो बाकायदा लाइन में खड़े होंगे, लेकिन बस स्टाप पर कितनी ही भीड हो कभी लाइन नहीं दिखाई देती । कभी-कभी आप यहाँ पाएँगे कि बस में बैठा कोई व्यक्ति रास्ते में किसी दुकान के सामने लंबी लाइन देखकर झट उतर जाएगा और लाइन में खड़ा हो जाएगा—कभी-कभी तो बिना यह जाने कि लाइन किस चीज़ के लिए है । इसीलिए यहाँ के हर व्यक्ति के पर्स या जेब में एक फोल्डिंग थैला हमेशा रहता है । यह मशहूर है कि यहाँ आदमी जो चीज खरीदने के लिए बाहर निकलता है उसको छोड़ बाकी सब चीज़ें लेकर लौटता है ।

हम अभी तक उनीरिया स्टोर के बेसमेन्ट के पहले हॉल में ही खड़े हैं । आइए, अब आगे बढ़ें । दूसरे हाल के भीतर घुसते ही आप को काउन्टरों की एक लंबी कतार दिखाई देगी । इन काउन्टरों पर आपको हर समय ग्राहकों की छोटी-बडी लाइने लगी मिलेंगी । यहाँ कॉफी, केक, मिठाइयाँ, गोश्त के पकवान (घर ले जाने के लिए) तथा मसाले आदि मिलते हैं । दूसरी ओर सामने कटघरों से घिरा राशन आदि (आलिमेन्तारा) का बहुत बड़ा स्टोर है, जहाँ शराब से लेकर साबुन, आटा, चावल, तेल आदि तक हज़ारो तरह के सामान आपको मिल जाएँगे । पास ही टोकरियाँ पड़ी मिलेंगी । आप हाथ में एक टोकरी लेकर भीतर घुसते हैं, उसमे मनपसंद सामान डालते हैं और बाहर निकलने से पहले द्वार पर भुगतान करते हैं ।

आइए, बेसमेन्ट से बाहर निकलें और पहली मंजिल के विशालकाय स्टोर में घुसें । यहाँ चारो ओर टापुओं की तरह बिखरे काउन्टरो पर कहीं शृंगार के सामान (कॉस्मेटिक्स) बिक रहे हैं, कहीं सिले-सिलाए कपड़े, कहीं बनियान, कहीं बक्से और कहीं काँच और क्रिस्टल के सामान । यहाँ मंज़िलों का विभाजन एक खास प्रकार से किया जाता है जैसे एक मंज़िल पर केवल बच्चों के सामान मिलते हैं, दूसरी पर स्त्रियों के, तीसरी पर पुरुषों के तथा चौथी पर मशीनें, बिजली के सामान, टी.वी., फ्रीज़, कपडे

चित्र 18 : हाँ, यह मेरे मुन्ने के लिए ठीक है: स्टोर्स की एक पूरी विशाल मंजिल बच्चों के नाम – उसमें भी उम्रवार ज़रूरतों के लिए अलग-अलग खंड ।

धोने की मशीन, क्राकरी आदि । एस्केलेटर (सरकती सीढ़ियों) पर चढ़कर आप खड़े-खड़े दूसरी और तीसरी मंजिलों पर जाते हैं । सभी जगह वही भीड़, वही लाइन और वही हड़बड़ी । कोई सेल्सगर्ल मुस्कराकर आपका स्वागत करती है, कोई अनमने ढंग से और कोई शुद्ध व्यापारी ढंग से– लेना हो तो लो, नहीं तो मेरी बला से । तभी अचानक दिल्ली के चाँदनी चौक या करोलबाग की दुकानों का चित्र सामने आ जाता है जहाँ दुकानदार या उनके सेल्समेन 'बहन जी, आइए, क्या चाहिए आपको' और 'देखने के पैसे नहीं लगते' का नारा लगा-लगा कर आपको सड़क पर से फुसलाते रहते हैं ।

मोलभाव करने वाले और चीजों को बार-बार उलट-पलटकर छाँटने वाले भारतीयों को ऐसे मार्केट से कुछ निराशा होगी । कुछ चीज़ों के काउन्टर तो ऐसे है जहाँ आपसे आशा की जाती है कि आप चीजों के नाम, साइज़, तादाद बताइए और सेल्सगर्ल सीधे सामान लाकर आपके सामने रख दे । आप तुरन्त परची कटाएँ और भुगतान के लिए 'कैश काउन्टर' पर चले जाएँ । आप चीज़ों को इतमीनान से उलट-पलट कर देखना चाहेंगे तो पीछे खड़े लोगों की कतार को देखकर आपको एहसास होने लगेगा कि आप उनका समय बरबाद कर रहे हैं ।

अपनी इस व्यवस्था पर कभी-कभी खुशदिल रोमानियन स्वयं भी हँस लेते हैं। यहाँ के टी.वी. में आया एक छोटा-सा हास्य कार्यक्रम देखिए,– एक व्यक्ति अपने बच्चे के लिए चाबी से चलने वाली एक कार ख़रीदने आता

है। सेल्सगर्ल उसे एक कार निकाल कर दिखाती है। ग्राहक उसे चलाकर दिखाने को कहता है। महिला चलाने की कोशिश करती है, लेकिन वह नहीं चलती। दूसरी कार निकालती है, वह भी चलते-चलते बीच में रुक जाती है। इस तरह वह एक के बाद एक कई कारें निकालती है, लेकिन कोई नहीं चलती। अंत में अचानक एक कार ठीक निकल आती है। ग्राहक खुश होकर उसे बाँधने को कहता है, लेकन सेल्सगर्ल कहती है :

चित्र 19:बच्चों को आकर्षित करने के लिए दुकान के सामने बना विराट पुतला: पर्वत सैरगार ब्राशोव में बच्चो की एक दुकान।

'नहीं, यह मैं आपको नही दे सकती।

'आखिर क्यों ?' ग्राहक पूछता है।

'क्योंकि इसे मैं अपने बच्चे के लिए ले जाना चाहती हूँ।

साडी पहने भारतीय महिला साथ हो तो विदेशी होने के नाते सेल्सगर्ल्स आप पर कुछ अधिक कृपा कर देती है—कुछ खास दुर्लभ माल भीतर से निकाल कर आपको दे देंगी। आप मनपसंद चीज़ें छाँट सकते हैं और वे आपका थोडा बहुत नखरा भी सह सकती है। अगर एहसान बडा है तो इसकी एवज में कभी-कभी आप उन्हें छोटा-मोटा उपहार दे देंगे—यह एक दस्तूर है। विदेशी होने के नाते आपसे ऐसी आशा रखना अस्वाभाविक नहीं। विदेशी सिगरेट उनकी पहली पसंद है। अगर आप भारतीय है तो भारतीय चूडियों, मालाओं, अगूठियों आदि के कुछ नग हमेशा अपने थैले में रखिए। ये उन्हें बहुत पसंद हैं—पता नहीं कब कौन मेहरबान हो जाए। कुछ लोग फूलों का गुलदस्ता भी उपहार में देते हैं। यह बख़्शीश और उपहार के बीच की चीज़ है। यह परपरा केवल ख़रीदारी तक ही सीमित

नहीं, किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सेवा के लिए इस प्रकार का उपहार स्वीकार्य है ।

डिपार्टमेन्टल स्टोर्स के हर खंड का अधिकारी अलग होता है । अगर किसी खंड से कोई चीज़ गुम हो जाती है तो उसका हर्जाना उस खंड के कर्मचारियों में बराबर बँट जाता है । इसीलिए, स्टोर्स का हर कर्मचारी चोरी आदि के प्रति सजग रहता है । कुछ कर्मचारी तो केवल इसी निगरानी के लिए नियत रहते हैं ।

रोमानिया में विदेशियों के लिए अलग से भी कुछ विशिष्ट दुकानें है जिन्हें यहाँ 'डालर शाप' कहते हैं । इन दुकानों मे केवल विदेशी लोग ही डालर या अन्य विदेशी मुद्रा से इम्पोर्टेड चीज़ें खरीद सकते हैं । रोमानियन लोग इन दुकानों से चीज़ें नहीं खरीद सकते क्योंकि उनको विदेशी मुद्रा रखने का अधिकार नहीं है । इन दुकानों में विदेशी सेन्ट, जीन पैन्ट, सिगरेट, शराब, कैसेट रिकार्डर, टी.वी. आदि कई चीज़ें मिलती हैं । विदेशी दूतावासों के अधिकारियों के लिए 'डिप्लोमेटिक शॉप' अलग है जहाँ चीज़ें बिना टैक्स (ड्यूटी) के कुछ रियायती दरों पर मिलती है ।

यद्यपि रोमानिया का लगभग सारा व्यापार और सारी दुकानें सरकारी हैं, फिर भी कुछ व्यापार सरकारी (कोआपरेटिव) पद्धति से किए जाते हैं, जैसे जूते की मरम्मत का काम, दर्जी का काम, बढ़ई का काम आदि । इनमें मालिक एक निश्चित संख्या तक ही कर्मचारियों को नौकरी पर रख सकता है और उसे अपना सारा हिसाब सरकार को बताना पड़ता है । सरकार को भी मुनाफ़े का एक हिस्सा दिया जाता है ।

इसी प्रकार कुछ खास सब्ज़ियाँ तथा फल किसान स्वयं अपने खेतों मे उगाते हैं और सब्ज़ी मंडी में बेचने आते हैं । इनके दाम भी सरकार द्वारा निर्धारित होते हैं । सेब, अंगूर, अख़रोट, बंदगोभी, धनिया, बैंगन, मिर्च, टमाटर, पालक, सलाद, खीरा, मसाले, लहसुन, प्याज, तरबूज, स्ट्राबेरी, संतरे, माल्टा, आलू आदि सरकारी तथा प्राइवेट दोनों प्रकार की दुकानों मे मिलते हैं ।

रोमानिया में पान या चाय की दुकानें नहीं हैं । कॉफी हाउस अवश्य है । चाय यहाँ लोकप्रिय नहीं और कुछ लोग तो इसे बीमारों का पेय मानते हैं जो एक खास प्रकार की जड़ी या पौधे के सूखे फूल से बनाते हैं । इसके

विपरीत, पडोसी देश पोलैंड मे चाय बहुत लोकप्रिय है जहाँ इसे बडे गिलास मे भरकर पीते हैं । रोमानिया में कॉफी के कप बहुत छोटे होते हैं । यहाँ सामान्यत: तुर्की कॉफी पीते हैं जो बिना दूध की पी जाती है और कड़वी होती है । भूख लगने पर अगर आप चलते-चलते कुछ खाना चाहते हैं तो हमारे यहाँ के गुलगुलों की तरह का एक खाद्य (जिसे यहाँ 'गोगोशा' कहते हैं) जो ताज़ा बनता रहता है, बहुत लोकप्रिय है । और अगर आप इतमीनान से बैठकर यूरोपीय ढंग से कुछ खाना-पीना चाहते हैं तो किसी खास रोमानियन रेस्तराँ में घुस जाइए । अगर आप कहीं 'पार्कुल त्रान्दा फेरिलोर' (गुलाब-पार्क) रेस्तराँ में पहुँच गए तो भवन की छटा देखकर ही आपकी आधी थकान दूर हो जाएगी ।

चित्र 20 : रेस्तराँ भवन की छटा देखकर ही आधी थकान दूर : बुखारेस्त का पार्कुल त्रान्दाफेरिलोर (गुलाब पार्क) रेस्तराँ ।

नौवाँ अध्याय
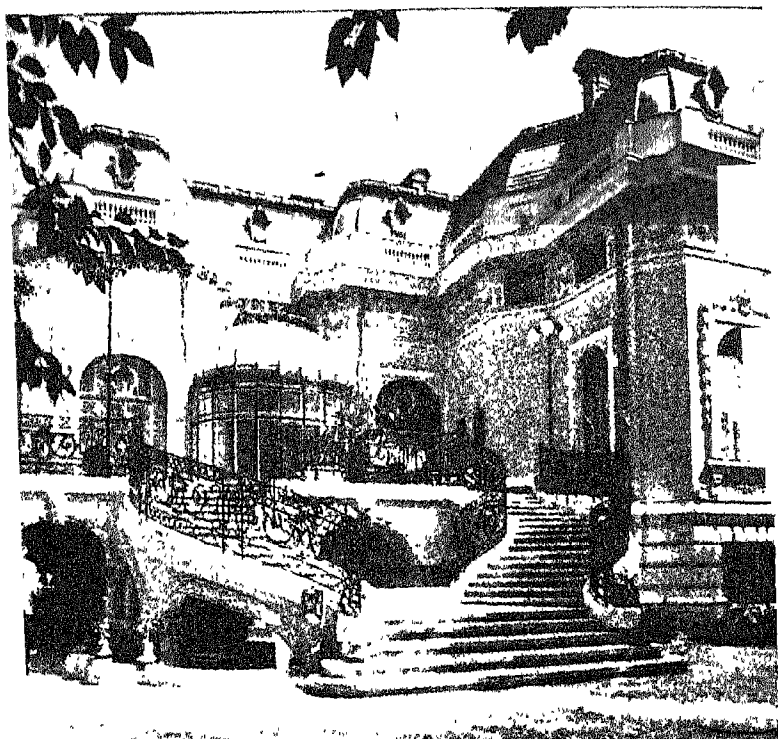
खेल-खेल में

अगस्त 1984 में लॉस एन्जलेस (अमेरिका) में हुए ओलम्पिक खेलों की याद आपके मस्तिक में अभी ताज़ा होगी। आपको याद होगा कि इन खेलों में सबसे अधिक स्वर्णपदक जीतने वालों में अमेरिका के बाद दूसरा स्थान रोमानिया का था जिसने 20 स्वर्णपदक जीते थे और रजत तथा कांस्य पदकों को मिलाकर कुल 53 पदक जीते थे। इस छोटे-से देश ने पहली बार इतने अधिक पदक जीतकर खेलकूद की दुनिया में एक हलचल-सी मचा दी। 80 करोड़ की आबादी वाला हमारा देश बिना किसी पदक के ओलम्पिक से लौट आए और दो-सवा दो करोड़ की आबादी वाला यह छोटा-सा देश 53 पदक बटोर कर ले जाए, यह आश्चर्य ही तो है।

इससे पहले सन् 1976 के मोन्ट्रियल के ओलम्पिक खेलों में भी रोमानिया की 15 वर्षीय नादिया कोमनेच जिम्नास्टिक्स के इतिहास में अपने अद्भुत करतबों से रोमानिया को अमर कर चुकी थी। सन् 1976 के इस ओलम्पिक में रोमानिया ने कुल 27 पदक जीते थे। सन् 1980 में मास्को में हुए ओलम्पिक में इसने 6 स्वर्णपदक जीते थे। डेविस कप
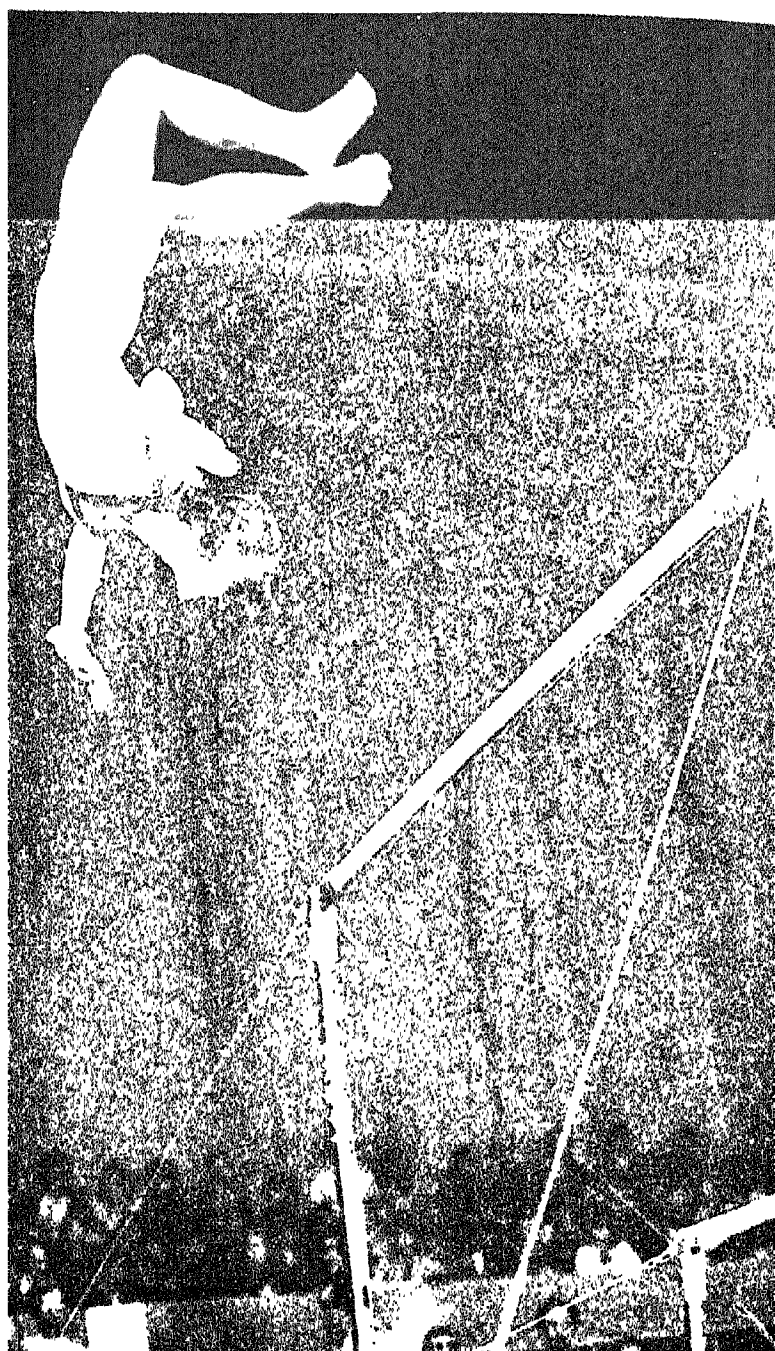
में तीन बार द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले इलिए नस्तासे का नाम भी आपने सुना होगा ।

इन सब सफलताओं के पीछे क्या राज़ छिपा है ? यह राज़ है इनकी जातिगत तथा राष्ट्रीय विशेषता । यहाँ खेलकूद और व्यायाम को समय की बरबादी नहीं बल्कि एक कला की साधना के रूप में लिया जाता है । खेलकूद में रुचि रखने वाले बच्चों को छोटी ही उम्र में छांट कर अलग कर दिया जाता है और उन्हें खास तरह की शारीरिक ट्रेनिंग दी जाती है। रोमानिया में कई ऐसे स्कूल हैं जहाँ पढाई के साथ-साथ शारीरिक व्यायाम

◀ चित्र 21 : जिमनास्टिक की अनंत ऊँचाई छूती हुई ओलम्पिक सरताज नादिया कोमनेच।

चित्र 22 : कच्ची उम्र में ही बच्चों को छाँटकर जिमनास्टिक्स की कड़ी ट्रेनिंग दी जाती है।
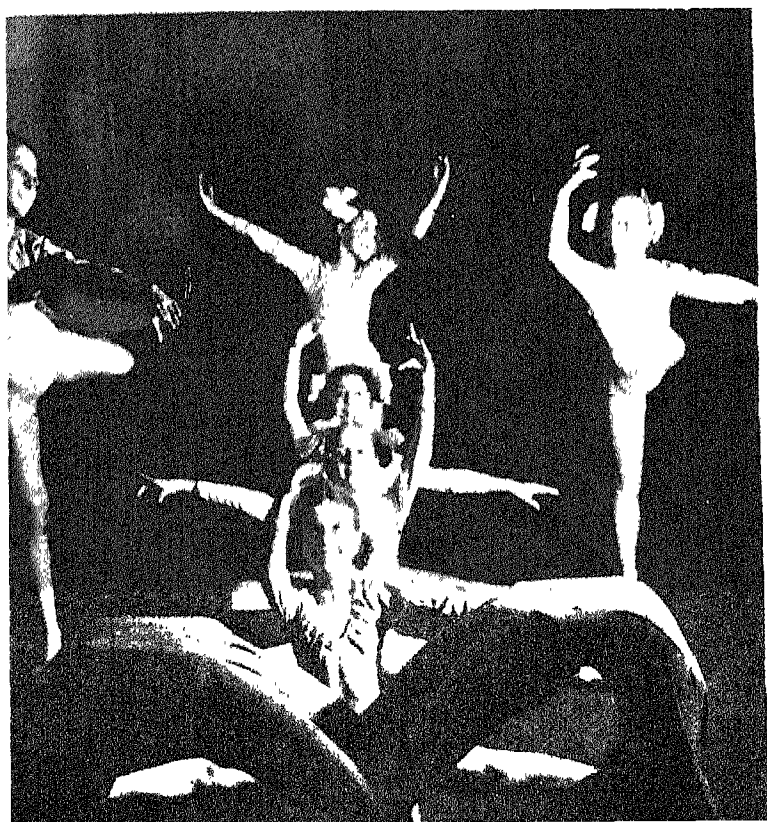
तथा खेलकूद का विशेषरूप से अभ्यास कराया जाता है । उद्देश्य यह होता है कि बच्चे-बच्चियाँ बड़े होकर पूरी निष्ठा से खेलकूद को अपने कैरियर के रूप में स्वीकार करें । शिक्षा समाप्त होने के बाद भी इन छात्र-छात्राओं की उच्च-शिक्षा के लिए खेलकूद विश्वविद्यालय की व्यवस्था है । जिस तरह सामान्य विश्वविद्यालयों में स्नातक आदि की उपाधियाँ दी जाती हैं, उसी तरह इन्हें भी खेलकूद में स्नातक आदि की उपाधियाँ दी जाती हैं ।

इस प्रकार की व्यवस्था का एक फ़ायदा यह होता है कि कई छात्र-छात्राएँ किसी खास खेल में महारत हासिल कर लेते हैं और उसी क्षेत्र में अपना नियमित कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं । उम्र अधिक हो जाने या सक्रिय रूप से खेलकूद में भाग न ले पाने पर ये छात्र इन्हीं विश्वविद्यालयों या स्कूलों में अध्यापक या प्रशिक्षक आदि के रूप में नियुक्त हो जाते हैं । इन्हें उतना ही वेतन और सम्मान मिलता है जितना अन्य अध्यापकों को ।

भारत में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है । हमारे यहाँ साधारणतः बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना माता-पिता अच्छा नहीं मानते । आपने यह कहावत सुनी होगी— **पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब** । दूसरी बात यह है कि हमारे यहाँ अगर कोई किसी खेल विशेष में महारत हासिल करना चाहता है तो उसे पढ़ाई-लिखाई से हाथ धोना पड़ता है या कम से कम उच्च शिक्षा प्राप्त करने में, उसके

चित्र 23 : नौका-विहार नहीं, नौका दौड़ की तैयारी पूरे रस्मोरिवाज़ के साथ ।
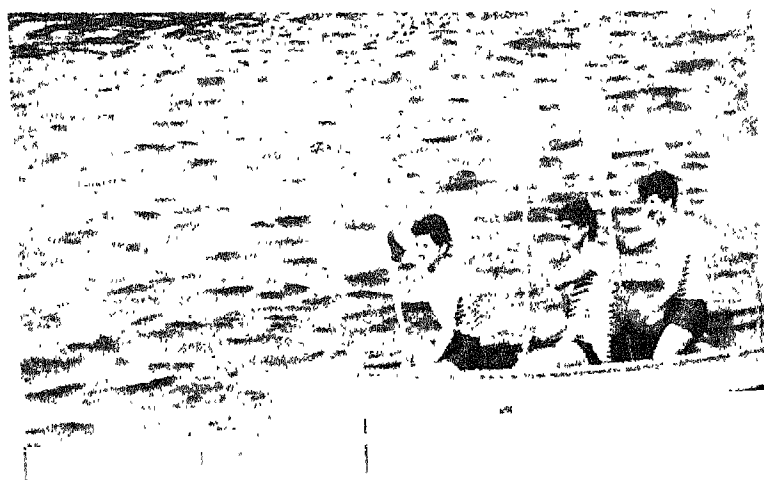
सामने कई रुकावटें आती हैं । अगर हमारे यहाँ भी खेलकूद या व्यायाम को नियमित विषय के रूप में शामिल किया जाए और इन्हीं की विशेषज्ञता के आधार पर उपाधियाँ दी जाएँ तो शायद यहाँ भी कई छात्र-छात्राएँ खेलकूद को कैरियर के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दें ।

हमारे यहाँ हर खिलाड़ी के सामने यह प्रश्न भी खड़ा हो जाता है कि वह सक्रिय खेल कूद की उम्र पार करने के बाद जीविका उपार्जन के लिए क्या करे । अगर हमारे यहाँ भी खेल कूद (स्पोर्टस) के नियमित स्कूल तथा कॉलेज खोले जाएँ तो निश्चित ही इन खिलाडियों के सामने इनके भविष्य की समस्या न हो ।

रोमानिया का सबसे प्रिय खेल फुटबाल है । आए दिन फुटबाल मैचों का सीधा प्रसारण टेलीविज़न पर आता रहता है । 'दिनामो' और 'स्ताउवा' यहाँ के दो प्रसिद्ध फुटबाल क्लब हैं जिनके बीच हमेशा कड़ी होड़ लगी रहती है और इनके चाहने वालों (फैन्स) की अलग-अलग टोलियाँ हैं । क्रिकेट, जिसका नाम भारत के बच्चे-बच्चे की जबान पर रहता है, यहाँ कोई नहीं जानता । इसी प्रकार हॉकी या बैडमिंटन का खेल भी यहाँ नही खेला जाता । अन्य खेलो में लॉन टेनिस, टेबल टेनिस, बेसबाल, तैराकी, कुश्ती, बॉक्सिग नौका-दौड़, शतरंज आदि यहाँ के लोकप्रिय खेल हैं ।

खेल जगत में रोमानिया की खास विशेषज्ञता जिमनास्टिकस में हैं । जिमनेस्टिक्स भारत का सबसे कमजोर पक्ष है । विश्व-चेम्पियन नादिया

कोमनेच के अलावा कई और रोमानियन लड़कियाँ हैं जिन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत या कांस्य पदक जीते हैं।

सर्दियों में बर्फ़ के मौसम में इनका खेलकूद का एक नया कार्यक्रम शुरू होता है। दिसम्बर-जनवरी-फरवरी में जब पर्वत तथा मैदान बर्फ़ से ढक जाते हैं तो पर्वतों में एक खास प्रकार के 'खेल मेले' का आयोजन होता है जिसमें बर्फ़ में खेले जाने वाले बीसियों तरह के खेल खेले जाते हैं—स्केटिंग, बाधा-दौड़, तेज़ दौड़, आँख मिचौली, संगीत की ताल पर दौड आदि।

खेलकूद और शारीरिक व्यायाम को विशेष रूप से प्रोत्साहित करना सरकार की घोषित नीति है। सरकार ने शारीरिक शिक्षा और खेलकूद का एक राष्ट्रीय परिषद् बनाया है जिसके अध्यक्ष का दर्जा खेलकूद मंत्री के बराबर होता है। इस छोटे से देश में भी 100 ऐसे खास स्कूल हैं जिनमें शारीरिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। इनमें तीस हज़ार छात्र-छात्राएँ पढ़ते हैं। हाई स्कूलों में इस समय प्रति सप्ताह दो घंटे की शारीरिक शिक्षा तथा एक घंटे की खेल प्रतियोगिता पाठ्यक्रम के अंतर्गत शामिल है।

चित्र 24 : बर्फ़ीले मनोरंजन की तैयारी : पोइआना ब्राशोव।

दसवाँ अध्याय

बोली अपनी-अपनी

रोमानिया में रोमानियन भाषा बोली जाती है। रोमानियन रोमांस भाषा है। लैटिन से निकली भाषाओं को 'रोमांस भाषा' कहते हैं— फ्रांसीसी, इतालवी, स्पैनिश, पुर्तगाली और रोमानियन आदि रोमांस भाषाएँ कहलाती हैं। रोमानियन भी लैटिन से निकली है। संस्कृत और हिन्दी में जो घनिष्ठ संबंध हैं, लगभग वही घनिष्ठ संबंध आप लैटिन और रोमानियन में समझ सकते हैं। रोमानियन भाषा के शब्द और व्याकरण फ्रांसीसी, स्पैनिश और इतालवी भाषाओं के शब्दों और व्याकरण के बहुत निकट हैं। मध्यकाल में रोमानियन शब्दों पर रूस आदि की स्लाविक भाषाओं का भी प्रभाव पड़ा, लेकिन उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में रोमानियन भाषा से विदेशी शब्दों और रूपों को हटा दिया गया।

रोमानियन भाषा की एक खूबी यह है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इसलिए इसके उच्चारण में उस तरह की परेशानी नहीं आती जैसी अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी भाषाओं के उच्चारण में आती है। इसकी लिपि वही है जो अंग्रेज़ी की है लेकिन इसमें कुछ खास चिह्न हैं। अंग्रेज़ी भाषा के ऐसे शब्द जो मूलतः लैटिन से आए हैं थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ

रोमानियन भाषा में भी मौजूद हैं । उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी शब्द temperature (टेम्परेचर) (रोमानियन में) temperature है जिसका उच्चारण है 'तेम्पेरेतुरा । इसी प्रकार radio (रेडियो) का उच्चारण रादियो, और national (नेशनल) का उच्चारण नात्स्योनाल' होता है ।

रोमानियन भाषा में ट-वर्ग (यानी ट, ठ, ड, ढ, ण) की ध्वनियाँ नहीं होतीं, इसीलिए इनके स्थान पर केवल दंत्य ध्वनियाँ 'त, द, न, का उच्चारण किया जाता है । इतालवी, फ्रांसीसी और स्पैनिश में भी ट-वर्ग की ध्वनियाँ नहीं मिलतीं । आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हिन्दी के कुछ शब्द भी थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ रोमानियन भाषा में मिलते हैं । इन शब्दों का संबंध या तो संस्कृत से है या फिर अरबी,. फ़ारसी, तुर्की या पुर्तगाली आदि भाषाओं से, जो हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं । कुछ शब्दों के नमूने देखिए :

हिन्दी	**रोमानियन**	
कमीज़	कमाशः	(Camaşa)
कमरा	कामेरा	(Camera)
मुसाफ़िर	मुसाफ़िर	(Musafir)
दुश्मन	दुश्मान	(Duşman)
किराया	किरिए	(Chirie)
पायजामा	पिजामा	(Pijama)
दाँत	दिन्ते	(Dinte)
आज	आज़	(Azi)
तू	तु	(Tu)
पत्थर	पियात्रा	(Piatra)
जुराब	चियोराप	(Ciorap)
अस्ति	एस्ते	(Este)

रोमानिया के लोग अपने व्यवहार में केवल रोमानियन भाषा का ही प्रयोग करते हैं । कुछ लोग फ्रांसीसी भाषा जानते हैं । अंग्रेज़ी जानने वाले

बहुत कम हैं, लेकिन अब अंग्रेज़ी पढ़ने का नया शौक युवा-वर्गों में देखने को मिलता है । यहाँ का सारा काम-काज रोमानियन भाषा में ही होता है । इस देश के राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू ने भाषा, जाति और संस्कृति की एकता पर इतना ज़ोर दिया है कि चाहे आपस की बातचीत हो या सम्मेलन, रेडियो हो या टेलिविज़न, स्कूल हो या कार्यालय, विज्ञान हो या साहित्य, पुस्तकें हो या पत्रिकाएँ–सभी जगह हर रोमानियन को अनिवार्यत: रोमानियन भाषा का ही व्यवहार करना होता है । इसका एक नतीजा यह हुआ है कि सामान्य बातचीत से लेकर ऊँचे से ऊँचे तकनीकी प्रयोगों में रोमानियन भाषा पूरी तरह सक्षम है । इसका दूसरा नतीजा यह हुआ है कि हर रोमानियन की अपनी भाषा पर पकड़ इतनी मज़बूत है कि साधारण से साधारण आदमी भी बिना गलती के,बिना अटके, सटीक शब्दों और मुहावरों का इस्तेमाल करते हुए धारा-प्रवाह भाषण देने या बोलने की पूरी काबलियत रखता है ।

भारत की स्थिति से तुलना करें तो आपको यह बात कुछ अटपटी लगेगी कि हमारे यहाँ बहुत कम ऐसे लोग हैं जो अपनी मातृभाषा में (चाहे वह हिन्दी हो या गुजराती, बंगला हो या तमिल, पंजाबी हो या असमिया) इस तरह की क्षमता रखते हैं । सामान्य बातचीत तो हम अपनी मातृभाषा में कर लेते हैं,लेकिन अपनी मातृभाषा में किसी विषय पर भाषण देने या विज्ञान और तकनीकी विषयों पर कुशलतापूर्वक बोलने में हममें से ज़्यादातर लोग अपने को पूरी तरह समर्थ नहीं पाते । बिना अटके, बिना वाक्य को दोहराए, बिना अनावश्यक अंग्रेज़ी शब्दों का सहारा लिए और बिना गलती या असंगति के हममें से कितने लोग पाँच मिनट लगातार अपनी भाषा में बोल सकते हैं ?

ऐसा हो सकता है कि हम जीवनभर अपनी भाषा का व्यवहार करते रहें, लेकिन यह न जान पाएँ कि इसकी अपनी ऐसी कौन-सी ख़ूबी या पहचान है जो इसे और भाषाओं से अलग करती है । यह ख़ूबी दूसरी भाषा बोलने वाले अधिक आसानी से पकड़ सकते हैं । रोमानियन भाषा और उसके बोलने वालों को नज़दीक से देखने के बाद कई ऐसी बातें मुझे भी दिखाई दीं जो रोमानियन भाषा को हमारी भाषाओं से अलग करती है । इनमें से एक बात जो आपको सबसे रोचक लगेगी वह यह है कि इस भाषा में शिष्टाचार के

शब्दों और मुहावरों की भरमार है । वैसे तो हिन्दी, उर्दू तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं में शिष्टाचार आदि के शब्दों की कमी नहीं, लेकिन हमारे यहाँ इनके इस्तेमाल में अक्सर कंजूसी बरती जाती है । रोमानिया में सामाजिक जीवन के हर छोटे-बड़े अवसर के लिए हर प्रकार के शिष्टाचार को व्यक्त करने के लिए शब्द और वाक्य भरे पड़े हैं । इससे भी खास बात यह है कि रोमानियन लोग इनका दिल खोलकर इस्तेमाल करते हैं । इनका इस्तेमाल केवल शिष्टाचार मात्र दिखाने के लिए या खास प्रकार के लोगो के साथ ही नहीं किया जाता, बल्कि ये उनके सामान्य दैनिक जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं जो बार-बार स्वत: उनके मुख से निकलते हैं । कुछ खास मौकों के लिए प्रयुक्त शिष्टाचारसूचक वाक्यों के कुछ नमूने देखिए :

1 खाना खाने से पहले अगर रोमानियन किसी से मिलता है या विदा लेता है (व्यक्तिगत रूप से या फ़ोनपर) तो वह कहेगा :
— पोफ़्त: बुन: (आपको अच्छी भूख लगे)
2. सोने से पहले कही जाने वाली शुभकामना :
— सोम्न उशोर (अच्छी नींद आए)
3 बीमार व्यक्ति से या वैसे भी किसी से विदा लेते समय की शुभकामना (व्यक्तिगत रूप से या फ़ोन पर) :
— सन:ताते (स्वास्थ्य की कामना) :
4 किसी के छींक आने पर:
— नोरोक (शुभ हो)
5 महिलाओं के लिए अत्यंत आदर का शब्द:
— सर:मीना (मैं आपका हाथ चूमता हूँ)

सर:मीना' अभिवादन का प्रयोग बच्चे भी अपने से बड़े (स्त्री या पुरुष) के लिए करते हैं जिसके उत्तर में कहा जाता है 'स (क्रेश्ते) मारे' (खूब बडे हो) । शिष्टाचार के ये दोनों शब्द हमारे यहाँ के 'पाँव लागूँ' तथा 'चिरंजीव रहो' के निकट हैं, लेकिन हमारे यहाँ ये शिष्टाचार के शब्द केवल गाँवो या परंपरागत परिवारों तक ही सीमित हैं, लेकिन यहाँ समस्त शहरी और शिक्षित समाज इनका उदारता से प्रयोग करता है ।

रोमानियन में अलग-अलग समय के अनुरूप नमस्कार के कम-से-कम चार प्रकार हैं :

सुबह के लिए	बुनः दिमिनियात्सा	(गुड मॉर्निंग)
दिन के लिए	बुनः ज़िवा	(गुड डे)
शाम के लिए	बुनः सियारा	(गुड इवनिंग)
रात्रि के लिए	न्वाप्ते बुनः	(गुड नाइट)

जब मेहमान किसी के घर जाता है तो मेज़बान मिलते ही कहेगा— 'बीने आत्स वेनित' (आपका स्वागत है)। इसके उत्तर में मेहमान हमेशा जवाब देगा—'बीने वाम गसित' (मुझे ख़ुशी है कि आप मिले/उपलब्ध हुए) ।

जब फ़ोन पर बात शुरू होती है तो शायद ही कोई रोमानियन हो जो सबसे पहले नमस्कार तथा शिष्टाचार के दो-तीन नग न जड़ देता हो और फ़ोन समाप्त होने पर 'धन्यवाद' सुन्दर' 'स्वास्थ्य कामना' आदि शिष्टाचार के शब्दों की लंबी कड़ी जोड़कर ही फ़ोन रखता है । आप नाराज़ भी हों या झुँझला भी रहे हों तो शिष्टाचार की ये मीठी गोलियाँ आपकी जबान पर कड़वाहट नहीं आने देंगी ।

इसी मानसिक संस्कार का फल है कि एक आम रोमानियन जगह-जगह आपके लिए प्रशंसा के मीठे शब्द छिडकता रहता है, संकोच नहीं करता । अपरिचित हो तो भी वह आपकी ओर मुख़ातिब होकर उन्मुक्त भाव से आपकी, आपके कपड़ों की या आपके बच्चों की तारीफ़ करेगा— चे फ्रुमोस' (कितना सुन्दर), 'मिनुनात' (गज़ब) आदि शब्दों को मुँह से निकलते देर नहीं लगती ।

आप जानते हैं, आम भारतीय जब अपनी भाषा बोलता है तो वह जाने-अनजाने बहुत से अंग्रेज़ी के शब्दों का इस्तेमाल करता है, यहाँ तक कि आधा हिस्सा हिन्दी और आधा हिस्सा अंग्रेज़ी होता है, जैसे 'ट्राइ करना, 'रिफ़्यूज करना', यूज करना', 'नरवस होना' आदि । एक आम रोमानियन के लिए यह बड़ी विचित्र और नई चीज़ है । हिन्दी के छात्र बार-बार पूछते हैं—'ऐसा आप लोग क्यों करते हैं ? क्या आप केवल हिन्दी में ही नहीं बोल सकते ?' एक बार कुछ छात्र वीडियो पर एक हिन्दी फ़िल्म देख रहे

थे । मैने सुना एक रोमानियन छात्रा दूसरे से कह रही थी — 'देखो, देखो यह लड़का कितने मजे से हिन्दी में अंग्रेज़ी शब्द मिला रहा है । अजीब बात है ।' चूँकि उनकी भाषा में इस तरह की मिलावट कही होती ही नही, वे इस तरह की भाषा के अभ्यस्त नहीं है । इसलिए कई लोगों को भाषा का यह मिश्रण एंक कौतूहल सा लगता है । भाषा के प्रति उनके सोचने का यह शुद्ध-वादी तरीका उनकी परंपरा की देन है, इसलिए नहीं कि सरकार ने ऐसी कोई नीति बनाई है । हर जगह अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना उनके लिए उतना ही सहज है जितना अपने देश से प्रेम करना ।

एक बार मैं सडक से गुज़र रहा था । फुटपाथ पर लगी एक लंबी लाइन को देखकर रुक गया । पास जाकर देखा तो पुस्तकों का एक ढेर पड़ा था । युवक-युवतियाँ धड़ाधड़ पुस्तकें ख़रीद रहे थे । मैंने एक से पूछा कौन-सी किताब है तो पता चला कि एक नया उपन्यास आया है । देखते ही देखते पुस्तकों का ढेर समाप्त हो गया । पुस्तकों के लिए इस तरह की भीड़ देखना रोमानिया में एक आम बात है ।

नई किताब या शब्दकोश मार्केट मे आया नहीं कि समाप्त हो जाता है । लोग एक नहीं, दो-दो, चार-चार ख़रीदते हैं—एक अपने लिए, बाकी स्वजनो, मित्रों या बडों को उपहार देने के लिए । आश्चर्य यह है कि जिन्हें दूसरी भाषा नहीं भी आती, वे भी उसके शब्दकोष ख़रीद लेते हैं, क्योंकि यह संभाल कर रखने की चीज़ है । हिन्दी-रूसी शब्दकोष के दो बृहत् खंड मुझे इसी प्रकार उपहार में मिले थे जो किसी ने इसी प्रकार हिन्दी भाषा न जानने पर भी ख़रीद कर रख लिए थे । काश, किताबो का यह शौक हमारे यहाँ भी होता ।

यहाँ भारत या पूर्वी देशों से संबंधित पुस्तकें, जो सख्या में अधिक नहीं हैं, बहुत लोकप्रिय हैं । पूर्वी देशों से संबंधित किताबें लिखने के लिए लेखक को रॉयल्टी या पारिश्रमिक भी अधिक देने की व्यवस्था है । दो-सवा दो करोड की आबादी वाले इस देश में एक सामान्य किताब की भी पचास हजार से एक लाख तक प्रतियाँ छापी जाती हैं । देश-विदेश, इतिहास, पुरातत्व आदि से संबंधित किताबें यहाँ बहुत लोकप्रिय हैं । जगह-जगह पर पुरानी पुस्तकों की दुकानें हैं जहाँ रोमानियन घंटों गुज़ार कर अपनी पसंद की दुर्लभ पुस्तकें ढूँढ़ने में लगे रहते हैं ।

एक ही भाषा में सारा काम करते हुए भी शिक्षित रोमानियन कोई न कोई दूसरी भाषा ज़रूर सीखता है—बाहर की दुनिया में झाँकने का यही एक सबसे आसान तरीका है। फ्रांसीसी, अंग्रेज़ी रूसी, जर्मन, स्पैनिश, अरबी, जापानी, चेक, बुल्गारियन, हंगेरियन (मग्यार), पुर्तगाली, चीनी, तुर्की, हिन्दी, संस्कृत तथा बंगला आदि कई भाषाओं को सीखने की यहाँ व्यवस्था है। विश्वविद्यालय में जो छात्र मानविकी या भाषा विभाग में पढ़ते हैं उन्हें अपनी मातृभाषा रोमानियन के अलावा दो अन्य भाषाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करनी होती है—एक पर खास विशेषज्ञता और दूसरी पर गौण। खास विशेषज्ञता में सामान्यतः कोई एक अतर्राष्ट्रीय भाषा पढ़नी होती है, जैसे फ्रांसीसी, अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, स्पैनिश आदि। गौण विशेषज्ञता में सामान्यतः अरबी, तुर्की जापानी, चीनी, हिन्दी, बुल्गारियन, हंगेरियन (मग्यार) आदि भाषाओं में से कोई एक भाषा पढ़नी होती है। पहले यहाँ फ्रांसीसी बहुत लोकप्रिय भाषा थी, लेकिन अब धीरे-धीरे अंग्रेज़ी के अध्ययन का ज़ोर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा बन चुकी है।

दो भाषाओं की विशेषज्ञता के अलावा विश्वविद्यालय में एक तीसरी भाषा की विशेषज्ञता की भी व्यवस्था है जो एक ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाती है। इसमें उत्तीर्ण होने पर छात्रों के प्रमाण-पत्रों में उल्लेख कर दिया जाता है कि उन्होंने एक तीसरी भाषा पर भी गौण विशेषज्ञता प्राप्त की है। इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम में विज्ञान, इंजीनियरी, इतिहास आदि अन्य विभागों के छात्र भी पढ़ने आ सकते हैं। इसकी कक्षाएँ अक्सर शाम को लगती हैं। इसलिए इसमें इच्छुक नौकरी-पेशा छात्र भी प्रायः पढ़ने आ जाते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हिन्दी या संस्कृत को ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक होती है। हिन्दी उनके लिए हर तरह से एक बिल्कुल ही नए प्रकार की भाषा है। संस्कृति भी बिल्कुल अलग है। फिर भी जो धुनी है उनके लिए यह कोई समस्या नहीं। जहाँ इच्छा प्रबल हो वहाँ सभी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। इसी प्रबल इच्छा या संकल्प का फल है कि आज कई रोमानियन छात्र अच्छी हिन्दी लिख सकते हैं, बोल सकते हैं। इनमें भी कुछ ने तो ऐसा

कमाल हासिल किया है कि आप फ़ोन पर उनकी हिन्दी सुनिए तो आप विश्वास नहीं कर सकते कि यह साल-दो-साल हिन्दी सीखा हुआ विदेशी है। इरीना नामक 19 वर्षीया लडकी ने जिस लगन और रफ़्तार से साल दो साल के भीतर धड़ल्ले से हिन्दी बोलना और लिखना सीखा वह अविश्वसनीय-सा है। आज भी उसके पत्र आते हैं। नीचे मै उसके पत्रों में से दो अंश दे रहा हूँ। (जो थोड़ी-बहुत गलतियाँ या असंगति उसकी भाषा में हैं उसे मैं वैसे ही रख रहा हूँ। ये थोड़ी बहुत गलतियाँ ही उसकी भाषा को रोचक बनाती हैं।)

21.06.83 बुख़ारेस्त
रोमानिया

प्रिय प्रोफ़ेसर जी,

नमस्ते।

मुझे कुछ दिनों पहले ही आपका पत्र मिला। मैं बहुत खुश हुई।.....

.....अब भी भारतीय खाना बना रही हूँ। मैं आपको एक खुफिया बात बता रही हूँ। आशा है आपको मजा नहीं आएगा। मैं और जुलिया साडी पहनकर खाना बना रही हैं। और हम हिन्दी में ऐसा बात करती हैं कि अपने पति दफ्तर से आने वाले है और हम उन्हे खिलाते हैं।

एक बार हम Tineratului पार्क में साड़ी पहनकर गई और हिन्दी बात कर रही थीं। तब हमने आनन्द साहब (भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव) को बच्चों के साथ देखा। हमें शर्म आ गई और जल्दी चली गई ताकि वह नहीं देखें। दौड़ते हुए देखकर एक-दो रोमानियन आदमी ने कहा: मैने तुम्हारे माता-पिता को देखा। वे थोड़े-से आगे हैं। उन्ही को ढूँढ़ती होंगी। तब हमको इतना मजा आ गया। हमें बहुत अच्छा लगता है जब लोग समझते हैं कि हम भारतीय हैं। लेकिन बदकिस्मती मेरा चेहरा भारतीय लड़कियों की जैसी नहीं हैं। जुलिया का है। कुरता भी कभी-कभी पहनते है, लेकिन साड़ी ज्यादा अच्छा लगता है।

बिंदी भी लगाती हैं हम लोग।

सस्नेह आपकी इरीना

1.9.83 **बुख़ारेस्त**
रोमानिया

प्रिय प्रोफ़ेसर जी,

नमस्ते ।

.... मैं इस छुट्टियों में समुद्रतट गई थी, 10 दिनों के लिए। जुलिया भी आई थी अपनी नानी के पास । फिर दो बार सिनाया गई थीं। गाँव में पता नहीं जाऊँगी या नहीं । समुद्रतट पर साडी लेकर गई थी । वहाँ टैनिंग हो गई भारतीय जैसे । शाम को साड़ी पहन क़र जुलिया के साथ घूमती थी । लोग बहुत हमारे तरफ देख रहे थे । तब हम हिन्दी में बात कर रहे थे ।

.... इन दिनों याशी से एक लडकी आई थी जिसका नाम मारियाना है । वह भारतीय गाने गाती है । उसने 'प्रवेश' के लिए एम्बेसी में पैसे दिए । मैंने और जुलिया ने उसे देखा था । वह सब गाने का उच्चारण बहुत गलत करती है, लेकिन उसकी आवाज अच्छी है । उसके पास भी एक साडी है । उसने अपनी साड़ी एक श्रीलंका लड़की से खरीदी । मै कभी-कभी एम्बेसी जा रही हूँ । वहाँ से मैं किताबें लेकर पढ़ती हूँ ताकि मैं भूल न जाऊँ । अभी एक अंग्रेज़ी किताब का अनुवाद हिन्दी में कर रही हूँ ।........

...........मै अपना पत्र खत्म करती हूँ । उमाजी और बच्चों को बहुत प्यार कहना और मेरा नमस्कार ।

सस्नेह आपकी इरीना

चित्र 26 : 'मैं भारतीय लगती हूं न ?' साड़ी और चूड़ी पहनने, बिंदी लगाने और हिंदी बोलने का शौक : कुमारी ओलिविया ।

70 वर्षीय अवकाश प्राप्त कर्नल निकोलाई ज्वेर्या आज शायद रोमानिया में हिन्दी के सबसे बड़े ज्ञाता हैं। उन्होंने हिन्दी का अध्ययन करना तब शुरू किया जब वे सेना से रिटायर हो चुके थे। वे भारत आकर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, में भी हिन्दी पढ चुके हैं। कुछ समय इन्होंने बुखारेस्त विश्वविद्यालय में भी हिन्दी पढ़ाई। उनके द्वारा हिन्दी में भेजे गए एक पत्र का अंश देखिए :

28.6.84 **बुख़ारेस्त,**

आदरणीय सिंह जी,

डॉ. भक्तराम शर्मा ने, अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र के निदेशक, जिनसे मैं पत्र-व्यवहार करता हूँ मुझे 'रोमानिया में हिन्दी' के बारे में एक लेख लिखने का प्रस्ताव किया, जो 'विश्व में हिन्दी के भगीरथ' में प्रकाशित किया जाए।

...अत : मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे रोमानिया में अपने सांस्कृतिक तथा शिक्षा संबंधी कार्य के बारे में एक संक्षिप्त वर्णन लिखकर (एक फोटो के साथ) भेजें।

एक प्रार्थना और है। आपको मालूम है कि मैं प्राचीन भारतीय ट्रेजडी (त्रिवेन्द्रम के गणपति शास्त्री के अविष्कार के फलस्वरूप) में बड़ी रूचि रखता हूँ। आप मेरी अमूल्य सेवा करेंगे अगर मुझे यह बता सकेंगे कि मैं इस विषय पर कहाँ से सामग्री प्राप्त कर सकता हूँ। क्या भारत में इस समस्या के लिए विशेषता संस्था या संगठन है ?...........

शुभकामनाओं सहित

आपका स्नेहाभिलाषी
नि. ज्वेर्या

एक दूसरे हिन्दी प्रेमी पावेल निकोलाई ने एक छोटी फ्रांसीसी कविता का हिन्दी अनुवाद किया है जो इस प्रकार है :

प्रिये तुम्हारे लिए

मैं चिडियों के बाजार गया
और, प्रिये, तुम्हारे लिए
मैंने कुछ चिड़ियाँ ख़रीदीं ।
मैं फूलों के बाज़ार गया
और, प्रिये, तुम्हारे लिए
मैंने कुछ फूल ख़रीदे ।
मैं लोहार की दुकान गया
और, वहाँ से, प्रिय तुम्हारे लिए
मैंने कुछ जंजीर ख़रीदे, भारी जंजीर ।
और फिर मैं गुलामों के बाज़ार गया
और प्रिय मैंने तुम्हें ढूँढा,
लेकिन, प्रिये, मैंने तुमको वहाँ नहीं पाया ।

जाक प्रेवर
अनुवाद: पाव्रेल निकोलाई

1965 में हुए भारत-रोमानिया सांस्कृतिक समझौते के अन्तर्गत भारत-सरकार बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापन के लिए एक भारतीय प्रोफ़ेसर प्रतिनियुक्त करती है । नवम्बर 1965 से 1967 तक डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय, सितम्बर 1968 से जून 1972 तक उस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ. विद्यासागर दयाल, मार्च 1973 से मई 1974 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, 1975 से दिसम्बर 1978 तक पुनः डॉ. विद्यासागर दयाल तथा अप्रैल 1979 से अप्रैल 1983 तक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के प्रो. सूरजभान सिंह और 1984 में जबलपुर विश्वविद्यालय के डॉ. महावीर सरन जैन भारत सरकार की ओर से बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रोफ़ेसर

प्रतिनियुक्त होकर गए। इस दौरान समय-समय पर बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय की बंगला प्राध्यापिका डॉ. अमिता बोस तथा रोमानियन हिन्दी विशेषज्ञ श्रीयुत निकोलाय ज़्वेर्या, लोरेत्सिअ थेबान, इओन पेतेरेस्कु, और मारिया लीला पोपेस्कु ने विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापन में योग दिया।

डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय ने रोमानिया में पहली हिन्दी पाठ्यपुस्तक (1967) लिखी। डॉ. विद्यासागर दयाल ने 'हिन्दी भाषा कोर्स' तथा, सहलेखक इयोन पेतेरेस्कु के सहयोग से, 'हिन्दी-रोमानियन शब्दकोश तथा 'रोमानियन-हिन्दी शब्दकोश' (1978) लिखे। डॉ. सूरजभान सिंह ने नवीन भाषा वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर दो खंडों में 'हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक' (1980, 1981) लिखी।

ग्यारहवाँ अध्याय
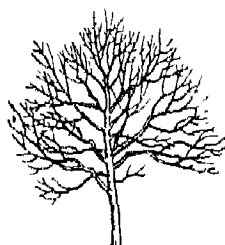
गाता जाए बंजारा

मक्खन ख़रीदने के लिए एक दिन मैं बुखारेस्त की दुकान के एक काउन्टर पर खड़ा था, सामने खडी एक महिला मुझे बार-बार देख रही थी। हल्का गेहुँआ भारतीय रंग, बालों में चुटिया, ढीला ब्लाउज़, नीचे घाघरा, चप्पल, कलाई में कड़ा या कंगन जैसी कोई चीज, कान में झुमके और चेहरे पर झिझक। साहस जुटाकर उसने मुझसे पूछा—'रोमा ?' मैं नहीं समझा वह क्या पूछ रही है। उसने फिर रोमानियन में कहा—'मैं रोमा हूँ।' मैं समझा वह रोम (इटली) की रहने वाली है। फिर वह मुझे अलग ले गई और रोमानियन में कुछ कहने लगी जो मैं पूरी तरह नहीं समझ पाया। मैं तब उतनी रोमानियन नहीं समझता था। मैंने उसे बताया कि मैं 'इंडिया' से हूँ। बाद में पता लगा, यहाँ के जिप्सी लोग अपने को 'रोमा' कहते हैं। रोमानियन लोग इन्हें 'त्सिगान' कहते हैं। भारतीय समझकर वह मुझसे अपनापन दिखा रही थी, ऐसा मुझे उसके हाव-भाव और उसकी आँखों की चमक से लगा।

आप बुखारेस्त की किसी सड़क, किसी गली या किसी बाजार से गुजर जाइए, रंग बिरंगा ढीला स्कर्ट या लहँगा पहने, बालों को बिना सँवारे,

चप्पल या छोटा-मोटा सेन्डल पहने कुछ जिप्सी महिलाएँ या लडकियाँ फुटपाथ पर कुछ सामान बेचती मिल जाएँगी । पुरुष भी ढीला-ढाला कोट पहने, बाल बिखेरे और सिगरेट पीते इधर-उधर ख़रीद फरोख्त करते दिखाई दे जाएगे । सारे रोमानिया में इनकी संख्या लगभग 1% है, सो जाहिर है जीवन के हर मोड़ पर यहाँ आप इनसे मिलते रहेंगे ।

एक समय जिप्सियों का इतिहास अंधकार में पड़ा हुआ था । लोग नहीं जानते थे वे किस देश से आए, कब आए और कहाँ-कहाँ बिखर गए। आज रोमानिया का हर जिप्सी यह जानता है कि वह भारतवंशी है, उसके पूर्वज कई सौ साल पहले भारतीय थे और वे इतिहास के किसी अंधकार काल में भारत से आकर यहाँ बसे है ।ऐसे समय जब उनकी अपनी पहचान समाज में धुंधली होती जा रही है और कोई उन्हें सहर्ष अपने समाज में अपनाने को तैयार नहीं, उनके लिए यह ख्याल एक बहुत बडा सहारा है कि उनकी जडें कभी भारत में थीं । यही कारण है कि हर भारतीय को वे बडे स्नेह से देखते हैं और उसमें अपनी खोई पहचान ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं ।

इनकी कहानी अपने में बहुत दर्दनाक है । आज अधिकांश लोग यह मानते हैं कि सैंकड़ों साल पहले जब भारत पर विदेशियों का आक्रमण शुरू हुआ तो भारत के पंजाब, राजस्थान, बिहार तथा मध्य प्रदेश के इलाकों से कई बंजारा जातियाँ भय या अन्य कारणों से भारत के उत्तर से अन्य देशो की तरफ निकल गईं । कई लोग इनके भारत से बाहर जाने का समय दसवीं या ग्यारहवी सदी बताते हैं, कई इससे पहले । ऐसा भी लगता है कि ये लोग कई किश्तों में बाहर जाते रहे । अफ़गानिस्तान से होते हुए ये लोग धीरे-धीरे रूस, रोमानिया, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, हंगरी, पोलैंड फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इंग्लैंड तथा पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों में फैलते रहे । कुछ लोग इन देशों मे जाकर बस गए और कुछ अपनी परपरा के अनुसार खानाबदोश कबीलों की तरह एक देश से दूसरे देश बढते चले गए ।

मूल बंजारे या जिप्सी लोग अपना कोई स्थाई देश या राज्य नहीं मानते । इसलिए इन्हें पहले-पहल किसी देश ने आसानी से अपने देश की नागरिकता नही दी । कई वर्षों तक तो ऐसा ही चलता रहा, लेकिन उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी में इन्हें एक देश पार कर दूसरे देश जाने में

कठिनाइयाँ सामने आने लगीं । कारण कि हर देश ने पासपोर्ट और वीजा आदि की व्यवस्था कडी कर दी थी। इस हालत में कुछ लोग वहीं बस गए जहाँ वे थे और कुछ लोग देश से बाहर जाने की सुविधाओं के लिए संघर्ष करते रहे । राज्यरहित नागरिक होने के कारण इन्हें धीरे-धीरे भ्रमण तथा प्रवास में कई कानूनी, सामाजिक और आर्थिक मुसीबतों का सामना करना पड़ा ।

आज इनकी स्थिति उतनी दयनीय या उपेक्षित नहीं है, जितनी कुछ वर्षों पहले थी । आज संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इन्हें मान्यता प्रदान कर दी है और इनके हितों की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सस्था बनाई है । इन्हें सामाजिक सुरक्षा और मान्यता प्रदान करने के लिए भी पर्याप्त धन की व्यवस्था की गई है । वैसे तो ये समस्त विश्व में फैले हुए है लेकिन युगोस्लाविया और जर्मनी में इन्हें अपनी स्थिति सुदढ़ करने में अधिक सफलता मिली है । युगोस्लाविया में इनका एक स्थाई कार्यालय भी है । 1981 में पश्चिमी जर्मनी में इनका एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी हुआ था ।

इनकी भाषा 'रोमानी' कहलाती है । ये लोग जिन-जिन देशों में जाकर बसे, वहाँ की बोलियों तथा भाषाओं का असर इनकी अपनी भाषा पर पडा और इतना पडा कि आज हर देश में, बल्कि हर प्रमुख राज्य में, इनकी भाषा या बोली अलग-सी हो गई है । आज एक देश का जिप्सी-वर्ग सामान्यत: दूसरे देश के जिप्सी-वर्ग की बोली नहीं समझ सकता यद्यपि इनमें कई शब्द और रूप समान है ।

इन भाषाओं की एक ख़ूबी यह है कि इनमें भारतीय मूल के कई शब्द आज भी मौज़ूद हैं । खासकर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से संबंधित कई शब्द आज भी रोमानिया के जिप्सियों की भाषा में उन्हीं रूपों में या किंचित परिवर्तित रूपों में मिलते हैं जिन रूपों में हिन्दी में, जैसे एक, दो, तीन, पानी, कान, खाना आदि ।

भाषा में भले ही बदलाव आया हो लेकिन इनकी अपनी संस्कृति, परंपरा तथा रीति रिवाजों में आज भी काफ़ी हद तक एकसूत्रता दिखाई देती है, चाहे वे किसी भी देश, में जाकर बसे हों । जिप्सियों में अपने वर्ग को 'विदेशियों' से अलग रखने की प्रबल प्रवृत्ति भी दिखाई देती है, यहाँ

तक कि स्वयं इन्हीं में इस बात को लेकर विवाद होता रहता है कि हमारा कुल असली जिप्सी है, तुम्हारा नहीं । शादी-ब्याह को वे सामान्यतः अपने वर्गों तक ही सीमित रखना पसंद करते हैं, यद्यपि शिक्षित जिप्सी वर्ग अब समाज के अन्य वर्गों में धीरे-धीरे घुलता-मिलता जा रहा है । स्वयं जिप्सियों मे एक ऐसा पढ़ा-लिखा और जागरुक वर्ग उभर कर निकल रहा है जो अपनी जाति के इतिहास, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक स्थिति का अध्ययन कर रहा है । इन लोगों की एक आम शिकायत यह रही है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने जिप्सियों की स्थिति सुधारने और उन पर कार्य करने के लिए जो धन दिया उसे ज़्यादातर गैर-जिप्सी लोग इस्तेमाल कर रहे हैं । यह सारा धन जिप्सियों के अध्ययन तथा खोजों पर ही खर्च किया जा रहा है, न कि जिप्सियों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए ।

कथा उखड़े भाइयों की

देखिए, रोमानियन जिप्सी कह रहा है, आप तो दुनियाभर के जिप्सियों में खो गए, हमारी कथा कब सुनेंगे ? आइए, रोमानियन जिप्सी को ज़रा गौर से देखे, इनकी मर्मकथा सुनें ।

चौदहवीं सदी के आसपास जब रोमानिया में सामन्तवाद का बोलबाला था, ये जिप्सी ज़मींदारों तथा सामंतों के नीचे गुलामों की जिन्दगी बसर कर रहे थे। ये 'रोबी' कहलाते थे, जिसका अर्थ होता है 'गुलाम' । तब की कानून की किताबों में इन जिप्सियों की परिभाषा 'संपत्ति' के रूप में दी गई हैं, जैसे पशु, मकान आदि व्यक्ति की संपत्ति होते हैं ।

सन् 1830-1870 के बीच जब से रोमानिया ने अपनी भूमि से सामंतवाद को उखाड़ फेंका, तब से इन जिप्सियों की स्थिति में थोड़ा सुधार आया । पहले ये भूमिहीन गुलाम थे । अब ये आज़ाद मज़दूर हो गए । धीरे-धीरे रोमानिया में जिप्सी लोगों को राज्य के पूरे नागरिक के रूप में स्वीकार कर लिया गया, लेकिन इनकी सामाजिक और आर्थिक दशा अब भी बहुत उपेक्षित थी ।

दो विश्वयुद्धों के बीच की अवधि में रोमानिया को एक पृथक जाति के रूप में मान्यता देने की बात उठी । इस दौरान कुछ जिप्सी तो रोमानियन समाज में पूरी तरह घुल-मिल गए, लेकिन अधिकांश अपनी अलग पहचान

बनाए रखने के लिए आतुर होने लगे। उन्होंने एक जिप्सी संघ भी बनाया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जब रोमानिया में समाजवादी व्यवस्था स्थापित हुई तो जिप्सियों को लगभग समान सरकारी सुविधाएँ मिलनी शुरू हुईं। इसका फायदा उठाते हुए कई प्रबुद्ध जिप्सियों ने समाज के कई खास क्षेत्रों में प्रवेश किया। फलस्वरूप आज शिक्षित जिप्सी वर्ग के कुछ सदस्य डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, इंजीनियर आदि के पदों पर भी मिलते हैं। दो-तीन कम्युनिस्ट पार्टी के महत्वपूर्ण पदों पर भी हैं। इन सबके बावजूद सामाजिक वर्ग के रूप में इनकी समस्याएँ नहीं हल हुई हैं। अब भी वे समाज में निचले स्तर के सदस्य माने जाते हैं। कई लोग इन्हें भिन्न जाति के सदस्य मानते है। कई लोग इन्हें समाज में गलत कामों में लगे लोगों के रूप में देखते हैं। इसमें संदेह नहीं कि अपनी ऐसी तस्वीर बनाने में इनका भी अपना कुछ हाथ रहा है। ये अब भी अपने परंपरागत व्यवसायों या पुराने रीति रिवाजों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। कई अब भी लोहे तथा लकडी का काम करते हैं, रद्दी कपड़े तथा बोतल बेचते हैं, घोड़े का व्यवसाय करते हैं, प्लास्टिक की चीज़ें, मसाले व जड़ी-बूटियाँ बेचते हैं। कुछ लोग सब्ज़ी उगाने का काम करते हैं और कुछ गहनों का क्रय-विक्रय करते हैं। कुछ लोग ऐसे धंधों में भी लगे हैं जो सरकारी कानून की निगाह में ठीक नहीं। रोमानिया में दसवीं तक शिक्षा अनिवार्य है, मुफ़्त तो है ही, लेकिन फिर भी अधिकांश जिप्सी इस सुविधा का फ़ायदा नहीं उठाते।

शहरों में रहने वाले जिप्सियों में धीरे-धीरे कुछ जागरूकता आ रही है, लेकिन यहाँ भी कई लोग कुछ खास मुहल्लों में अपने वर्ग के लोगों के बीच ही रहना पसंद करते हैं—शायद अपनी जातिगत संस्कृति, परंपरा और रीति रिवाजों को टूटने से बचाने का यही रास्ता उन्हें नज़र आता है। जिस प्रकार भारतीय गाँवों के मेलों में कुछ महिलाएँ भड़कीले रंग के पोशाक, चमकदार सस्ते गहने, छल्ले, कंगन, हेयरपिन, हार, झुमके आदि पहनती हैं उसी प्रकार का शौक इनमें भी दिखाई देता है। पायजेब, बाजूबंद, कमरबंद, लहंगा, घाघरा, चुटिया आदि का जो शौक भारतीय गाँवों की महिलाओं में देखने को मिलता है वही शौक इनमें से कइयों में आज भी बचा हुआ है। परंपरा के प्रति यही मोह और अनुराग जिसे सदियों तक

समय के थपेडे भी न मिटा सके, इनकी सबसे बडी शक्ति है और सबसे बड़ी कमज़ोरी भी ।

कई जिप्सी स्त्री-पुरुषों ने गायन और संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है । आज भी कई जिप्सी गायक और गायिकाएँ होटलों, क्लबों, रेडियो तथा टेलिविजन पर अपने संगीत से लोगों का मनोरंजन करते हैं । यद्यपि ये लोग सभी रोमानियन गाने ही गाते हैं, लेकिन शायद ही कोई ऐसा जिप्सी परिवार हो जिसके पास हिन्दी गानों का कोई कैसेट न हो या जो भारतीय गानों की धुनें न गुनगुनाता हो । जिस प्रकार भारत में गोआ के बहुत से लोगों ने संगीत को व्यवसाय या शौक के रूप में अपनाया है, उसी प्रकार रोमानिया में बहुत-से जिप्सियों ने संगीत तथा ऑरकेस्ट्रा को व्यवसाय या शौक के रूप में अपनाया है । हम जिस होटल मे जाते थे वहाँ के कुछेक ऑरकेस्ट्रा वादक भारतीय परिवार या महिला को देखकर बिना कुछ कहे अपने ऑरकेस्ट्रा से 'आवारा हूँ' या किसी और हिन्दी फ़िल्म की धुनें बजाना शुरू कर देते । भारतीय फ़िल्मों तथा संगीत को लोकप्रिय बनाने में इनका बडा हाथ है । भारतीय स्त्री या पुरुष को सडक पर देखकर जिप्सी बच्चे हिन्दी गानों की धुनें या बोल गुनगुनाने लगते है, भले ही उनके अर्थ उन्हें न आते हों । भारतीय फिल्में देखने के लिए इनका काफिला का काफिला सिनेमाघर की तरफ निकल पडता है ।

चित्र 27: अपने खून की तलाश में रोमानियन जिप्सी विद्वान निकोल जार्जे

कभी-कभी ऐसा लगता है कि जड़ से उखड़े ये लोग हर भारतीय चीज़ को महसूस कर और भारतीय धुनें गुन-गुनाकर जाने-अनजाने अपने खोए देश और खोए खून के प्रति अपना ऋण चुका रहे हैं ।

इसी तरह अपने खून को पहचानने के लिए एक व्यग्र विद्वान प्राध्यापक एक दिन मेरे पास आया और कहने लगा—'प्रोफ़ेसर साहब, मैं एक जिप्सी हूं। जिप्सी होना क्या होता है यह मैंने बचपन से लेकर अब तक जान लिया, लेकिन जब से मुझे पता लगा कि हमारे पूर्वज भारत से आए हैं तब से मैं अपने खून को ढूंढने के लिए आतुर हूँ। मैंने जिप्सी पर उपलब्ध लगभग सभी किताबें पढ़ डाली हैं। मैं भारत के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं। हिन्दी, संस्कृत और पंजाबी भी पढना चाहता हूं और एक बार अपने पूर्वजों की धरती को छूकर आना चाहता हूँ।'

बारहवाँ अध्याय
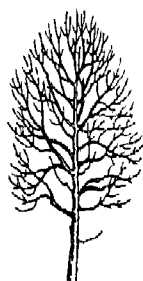
सैरगाह की तलाश

अगर आप एक पर्यटक के रूप में रोमानिया जाते हैं तो शायद आपकी रुचि बहुत-कुछ उन बातों में नहीं होगी जो आप इस पुस्तक में पढ़ रहे हैं। आप सबसे पहले उन दर्शनीय स्थानों की खोज करेंगे जहाँ आपको जाना है और शायद उन होटलों के बारे में जानना चाहेगें जहाँ आप ठहरेंगे।

रोमानिया आने का सबसे सुन्दर समय जुलाई-अगस्त-सितंबर है। आप हवाई जहाज़ या रेल से बुख़ारेस्त पहुँचेंगे तो सबसे पहले इसी शहर को देखना पसंद करेंगे। यहाँ आप पाँच सितारा होटल में भी ठहर सकते हैं और सस्ते होटल में भी। सत्रह मंजिला 'होटल इन्टरकान्टिनेन्टल', जो अमेरिकी सहयोग से बना होटल है, यहाँ का सबसे मशहूर और महँगा होटल है। इसकी सबसे ऊपरी मंजिल की छत पर स्विमिंग पूल है। ठहरें आप किसी भी होटल में, भुगतान आपको अमेरिकी डालर या अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा में ही करना पड़ेगा। यहाँ की स्थानीय मुद्रा में आप भुगतान नहीं कर सकते ।

ध्यान रहे कि विदेशी टूरिस्ट के रूप में आप किसी रोमानियन के घर मे नहीं रह सकते । सामान्यत: आपसे यह आशा की जाती है कि आप अमेरिकी डालर की हल्की सी रकम हर रोज़ खर्च करेगें जो होटल-खर्चे मे स्वत: शामिल हो जाता है । हंगरी भी समाजवादी देश है लेकिन वहाँ आवास की व्यवस्था एक अलग प्रकार की है । होटलों की कमी के कारण सरकारी तौर पर कई इच्छुक हंगरी निवासियो के मकानों में कुछ कमरे विदेशी पर्यटकों या प्रतिनिधियों के लिए निर्धारित कर दिए गए हैं । इनकी दरें भी निर्धारित है । मेज़बान को इस राशि का एक हिस्सा सरकार को देना पड़ता हैं । यह एक अलग प्रकार की पेइंग गेस्ट व्यवस्था है ।

बुख़ारेस्त में रहेंगे तो आप हेरस्त्राउ पार्क गए बिना नहीं रह सकते । इस विशाल पार्क के बीचो-बीच एक बहुत बडी झील है जहाँ आप नौका-विहार का आनन्द ले सकते हैं । गर्मियों में जगह-जगह यहाँ संगीत और ऑरकेस्ट्रा के कार्यक्रम खुले मैदान में आयोजित होते हैं । चाहे तो आप किसी एक सार्वजनिक मंच पर खडे होकर अपना राग आलाप सकते हैं । बुखारेस्त में लगभग 6-7 ऐसे और बडे-बड़े पार्क है, जैसे 'पार्कुल लिबेरतत्सि' (स्वतंत्रता पार्क), पार्कुल तिनरेतुलुई (युवक पार्क) आदि । इनमें सबसे पुराना चिस्मिज्यु सार्वजनिक पार्क है जो सन् 1806 में बना था । आप यहाँ जाएँगे तो एक खंड में आपको कतार से शतरंज खेलने वालों की कई मंडलियाँ बैठी मिलेंगी । आप शौकीन हों तो आप भी शतरंज के बोर्ड के सामने बैठकर किसी भी अपरिचित खिलाड़ी से एक-दो हाथ आजमा सकते हैं ।

आप बुख़ारेस्त में और कुछ देखें न देखें, ग्राम अजायबघर, जिसे यहाँ 'सातुल मुजेउ' कहते हैं, ज़रूर देखिए । शायद ही किसी और देश में इस तरह की चीज़ आप देखने की आशा कर सकते हैं । यहाँ रोमानिया के विभिन्न राज्यों के गाँवों के घर तथा उनसे झलकती विशिष्ट संस्कृति और रहन-सहन की झांकियाँ आप देख सकते हैं । यह सब कुछ खुले मैदान में है जहाँ अलग-अलग खंडों में अलग-अलग राज्यों के गाँवों के नमूने आप देख सकते हैं । इन खंडों में बनाए गए मकान या मकान के अंश फ़र्नीचर, कपड़े, बर्तन, औज़ार आदि ख़ुद उन्हीं गाँवों से लाकर यहाँ स्थापित किए गए हैं । हर खंड आपके सामने किसी पुराने गाँव या मुहल्ले का माहौल

और तस्वीर साकार कर देता है । मिट्टी के मकान, कच्चे रसोईघर, लकडी के चम्मच, पुराने घडे, खाने की मेज़ें, सज़ावट के सामान, दरियाँ बिस्तर, बिछौने, पुराने ढंग के बर्तन, शराब की बोतलें, बाहर गाय या मवेशी के लिए जगह, पनचक्कियाँ -ये सभी रोमानिया के ही नहीं, हर देश के गाँवों की याद ताज़ा करते है ।

बुख़ारेस्त शहर में ही आपको 50 संग्रहालय (म्युज़ियम) मिल जाएँगे—कला संग्रहालय जिसमें रोमानियन तथा विश्व कला के 70,000 चित्र हैं, इतिहास संग्रहालय, सैनिक संग्रहालय, आभूषण संग्रहालय आदि । लेकिन ज़ाहिर है आप सबको तो नहीं देख पाएँगे, क्योंकि बुख़ारेस्त से बाहर भी आपको बहुत सी चीज़ें देखनी हैं । चाहे और कुछ देखें न देखें, प्राकृतिक इतिहास का संग्रहालय आप अवश्य देखें । इसमें विश्व के प्रारंभ से लेकर अब तक के मानव विकास, पशु इतिहास तथा खनिज इतिहास का सारा चित्र वास्तविक रूप में आप अपनी आँखों के सामने देख सकेंगे । हर देश के जानवरों के पुतले वास्तविक खालों में भर कर रखे गए हैं । कई देशों के पशुओं और खनिजों का जिक्र होते देख आप सोचने लगेंगे कि क्या भारत के पशुओं के पुतले भी हमें यहाँ मिल जाएँगे । आपको निराश नही होना पडेगा । भारत के हाथी, शेर, सांप आदि के जिस्मों से भी आपकी मुलाकात यहाँ हो जाएगी ।

आप बुख़ारेस्त के बाहर जाने को बेताब हैं । चलिए,पहले समुद्रतट चलें और समुद्रतट के नाम पर पहला नाम आपकी ज़बान पर कांस्तांजा का ही होता है ।काला सागर के तट पर स्थित कांस्तांजा यहाँ का सबसे बडा अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह भी है । जिन समुद्रतटों पर छुट्टियाँ मनाने लोग जाते हैं वे कांस्तांजा से थोड़ी-सी दूरी पर है । कालासागर के किनारे-किनारे रोमानियन भूमि पर एक के बाद एक नौ ऐसे समुद्रतट हैं जहाँ ग्रीष्मावकाश में लोग धूप सेकने तथा आनन्द लेने के लिए आते हैं । इन समुद्रतटों के अधिकतर नाम ग्रहों के आधार पर रखे गए हैं—ममाइया, इफ़ोरिए नार्द (उत्तर), इफ़ोरिए सुद (दक्षिण), कोस्तिनेश्ति, नेप्चून, जुपिटर, वीनस, सातुर्न (सेटर्न) और मंगालिया ।

गर्मियों में इन समुद्रतटों पर खास तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । जगह-जगह संगीत, नृत्य तथा नाटकों के कार्यक्रम होते हैं,

होटलों में फैशन शो होते हैं । दो-तीन महीनों के लिए एक विशेष रेडियो केन्द्र इन समुद्रतटो के लिए खोला जाता है जिससे चौबीसों घंटे संगीत और समाचार का कार्यक्रम आता रहता है और पर्यटकों के लिए उपयोगी सूचनाएं प्रसारित होती रहती हैं । इनमें विभिन्न भाषाओं के संगीत प्रसारित किए

चित्र 28 : काला सागर के तट पर सूरज की गर्मी और सागर की ठंडक का आनंद लेने वालो की चहल-पहल : वीनस समुद्रतट ।

जाते हैं, जिनमें कभी-कभी लता मंगेशकर और मुकेश के हिन्दी के फ़िल्मी गानों की मधुर लहरी भी आप सुन सकते हैं। ये कार्यक्रम चार भाषाओ मे प्रसारित किए जाते हैं। (देखिए पारदर्शी 5)

वैसे तो यूरोप के सभी समुद्रतटों का चित्र लगभग समान ही रहता है—होटलों में सुख-सुविधा के सभी साज़ो सामान, मनोरंजन के विविध कार्यक्रम, खेलकूद, समुद्र-स्नान, रेत की शैया पर सूर्य-स्नान, तैराकी और इन सब पर छाया फक्कड़पन का एक माहौल। रोमानिया के समुद्रतटों की एक खास ख़ूबी है—वह है प्राकृतिक इलाज। रोमानिया का खनिज जल यूरोप का सबसे अधिक गुणकारी जल माना जाता है जिससे गुर्दे के कई प्रकार के रोगों का इलाज किया जाता है। मंगालिया समुद्रतट के पानी से या वहाँ की एक खास तरह की मिट्टी के लेप से गठिया का रोग दूर किया जाता है। वृद्धों को नवजीवन प्रदान करने का विश्वप्रसिद्ध इलाज मंगालिया के साथ-साथ इफ़ोरिए और नेप्चून में भी होता है। इस अद्भुत इलाज के अन्वेषक रोमानियन डॉक्टर आना असलम आज एक विश्वविख्यात नाम है। इन समुद्रतटों पर इलाज के लिए विशेष प्रकार के उपचार होटल भी बने हैं। 'पोइनित्सा' नामक एक अत्यंत आधुनिक उपचार होटल अभी सन 1984 में ही खुला है। हर साल देश-विदेश से हज़ारो पर्यटक इन समुद्रतटों पर उपचार तथा आनंद दोनों का लाभ लेने के लिए आते हैं।

रोमानिया का प्राकृतिक तथा खनिज जल उपचार के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रहा है। फ्रांस के नेपोलियन तृतीय ने यहाँ के खनिज जल से अपने गुर्दे का इलाज किया था। आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांज़ योसेफ़ गठिया के इलाज के लिए रोमानिया आए थे। उनका निवास-गृह आज भी यहाँ संग्रहालय के रूप में सुरक्षित है।

हमें आशा है आप यहाँ इलाज कराने नहीं आए हैं। आप यहां घूमने आए है। सो थोडा समय पर्वतों पर भी गुज़ार लिया जाए। पर्यटन की दृष्टि से रोमानिया के तीन पहाड़ी सैरगाह मशहूर हैं—सिनाया, प्रेदयाल और ब्राशोव। कहना न होगा इन छोटी-छोटी सैरगाहों पर हर तरह की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं—साफ-सुथरी सडकें, आकर्षक होटल पर्यटन सूचना केन्द्र, हर तरह के भोजन की व्यवस्था, सांस्कृतिक तथा

मनोरंजन कार्यक्रम, खेलकूद आदि । केबल (तारों) के जरिए एक चोटी से दूसरी चोटी तक पहुँचने के लिए खास तरह के तार-यान (रोप वे) उपलब्ध हैं जो तार पर लटक कर चलते हैं ।

अगर आप शौक रखते हों तो रोमानिया भर में फैले हुए पुराने गिरजाघरों को भी देख सकते हैं । गोर्ज नामक एक जगह पर आप चौदहवीं शताब्दी में बना प्रसिद्ध तिस्माना मठ भी देख सकते हैं । स्वयं बुखारेस्त में

चित्र 29 : जी नहीं, ये असली सारस नहीं, सफ़ेद पत्थर से बने हैं। ब्राशोव शहर के बीचो-बीच बने पार्क का एक हाथ।

ही आप सेन्टजासेफ कैथिडल, ग्रीक चर्च, रूसी चर्च, सेन्ट ग्योरगे नोउ चर्च को देखकर इनमें छिपे उस पुराने इतिहास को ढूँढ़ सकते है जो आज सोया पड़ा है ।

बुखारेस्त लौटकर आप अब यहाँ का प्रसिद्ध ऑपेरा देख सकते हैं । ऑपेरा में नृत्य और संगीत के माध्यम से कथा प्रस्तुत की जाती है और इसकी एक खास शैली है । वैसे भी रोमानिया के लोग अन्य पडोसी देशों की तुलना में कला, साहित्य और संगीत के प्रति अधिक जागरुक हैं, ऑपेरा बैले-नृत्य, संगीत समारोह तथा कला-भवन महँगे टिकटों के बावजूद हमेशा भरे रहते हैं । शास्त्रीय संगीत के नए रिकार्ड भी यहाँ उसी

तेज़ी से बाज़ार से उठ जाते हैं जिस तेज़ी से आबा या बोनियम के पॉप संगीत के रिकार्ड। अगर आप रोमानिया आकर भी इनके इन कार्यक्रमों और कला प्रदर्शनियों को देखें बिना लौट जाते हैं तो आप कला के मामले में गरीब ही रहेंगे।

इस सैर-सपाटे के बीच आप यहाँ की कला वीथि (आर्ट गैलरी) जाने का समय अवश्य निकालें। अगर आप भारतीय हैं तो आपके लिए यहाँ जाने का एक खास कारण है। यहाँ रोमानिया के एक ऐसे सुप्रसिद्ध वस्तु शिल्पकार की कला के नमूने रखे मिलेंगे जो भारत आ चुका है। इस कलाकार का नाम हैं ब्रांकुसि। भारत के एक रियासत के राजा अपनी पत्नी की याद में एक अमर स्मारक बनाना चाहते थे। इस कार्य के लिए उन्होंने ब्रांकुसि को भारत आने का निमंत्रण दिया। राजा की मुलाकात ब्रांकुसि से पेरिस में हुई थी। ब्रांकुसि ने भारत आकर काम शुरू किया, लेकिन राजा अपने दूसरे कामों में अधिक व्यस्त हो गए और वह स्मारक अधूरा ही रहा। ब्रांकुसि को भारत बहुत पसंद आया और यहाँ की कला और दर्शन से वह बहुत प्रभावित हुआ। एक जगह उसने लिखा—**हिन्दुस्तान मुझे अपना घर लगता है। जो शांति और आनन्द मुझे हिन्दुस्तान में मिला वह मुझे एशिया, अफ्रीका या पश्चिम के किसी भी देश में नहीं मिला।**